● वर्ष-3
● अंक-267
रायपुर, मंगलवार
18 जून 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› सुखी एवं समृद्ध जीवन के आधार है...

वीआईपी कल्चर के खिलाफ हिमंता का बड़ा एक्शन

अब अपनी जेब से बिजली बिल भरेंगे असम के मंत्री-विधायक

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सरकारी क्वार्टरों में रहने वाले सभी मंत्रियों, विधायकों और सरकारी कर्मचारियों से 1 जुलाई से अपने बिजली बिल का भुगतान करने को कहा। उन्होंने कहा कि यह वीआईपी संस्कृति को खत्म करने का एक प्रयास है, उन्होंने कहा कि वह बिलों का भुगतान शुरू करने वाले पहले व्यक्ति होंगे। उन्होंने एक्स पर लिखा कि हम करदाताओं के पैसे से सरकारी अधिकारियों के बिजली बिलों का भुगतान करने के वीआईपी संस्कृति नियम को समाप्त कर रहे हैं। सीएम ने कहा कि मैं और मुख्य सचिव एक उदाहरण स्थापित करेंगे और 1 जुलाई से हमारे बिजली बिलों का भुगतान शुरू कर देंगे। जुलाई 2024 से, सभी लोक सेवकों को अपनी बिजली खपत के लिए भुगतान स्वयं करना होगा।

सरमा ने कहा कि राज्य का लक्ष्य निम्न आय वर्ग के लोगों के लाभ के लिए बिजली बिल की दर में रु. 1 प्रति यूनिट की कमी करना है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य अगले साल अप्रैल तक दर ?1 प्रति यूनिट कम करने का है और हम अगले साल 50 पैसे प्रति यूनिट और कम करेंगे।

बिजली बचाने के अभियान के तहत, असम सरकार ने सभी सरकारी कार्यालयों में रात 8 बजे के बाद बिजली का ऑटो-डिस्कनेक्शन शुरू करने का भी निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि हमने सभी सरकारी कार्यालयों (सीएम सचिवालय, गृह और वित्त विभाग को छोड़कर) में रात 8 बजे बिजली के ऑटो-डिस्कनेक्शन को लागू करने की पहल की है ताकि हम बिजली बचा सकें। यह उपाय राज्य भर के 8,000 सरकारी कार्यालयों, स्कूलों में पहले से ही लागू है।

रायबरेली सीट अपने पास रखेंगे राहुल वायनाड से प्रियंका वाड्रा लड़ेंगी चुनाव

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद देशभर में सियासी दल आंतरिक बैठक कर आगे की रणनीति तैयार कर रहे हैं। इसी कड़ी में सोमवार को कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के आवास पर बैठक की और राहुल गांधी की संसदीय सीट को लेकर फैसला किया। बैठक के बाद खरगे ने कहा कि राहुल गांधी वायनाड सीट छोड़ेंगे और रायबरेली अपने पास रखेंगे। इसके बाद प्रियंका गांधी वाड्रा वायनाड लोकसभा सीट से कांग्रेस की उम्मीदवार होंगी। इस मीटिंग में सोनिया गांधी के साथ राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और केसी वेणुगोपाल भी शामिल हुए।

खरगे ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि हम सबने बैठक में यह तय कर लिया कि राहुल गांधी रायबरेली सीट अपने पास रखेंगे, क्योंकि रायबरेली पहले से भी उनके काफी नजदीक रही है। उस परिवार के साथ जुड़ाव है और पीढ़ियों से वहां से लड़ते आए हैं। इसलिए वहां के लोगों और पार्टी के लोगों का भी कहना है कि वह रायबरेली की सीट अपने पास रखें। वायनाड के लोगों का प्यार भी राहुल को मिला है। वे लोग चाहते हैं कि राहुल वायनाड में ही रहें, लेकिन कानून इसकी इजाजत नहीं देता। इसलिए वायनाड सीट से प्रियंका गांधी वाड्रा चुनाव लड़ेंगी।

वायनाड सीट छोड़ने पर क्या बोले राहुल गांधी?- राहुल ने कहा कि उनके लिए यह एक मुश्किल फैसला था क्योंकि रायबरेली और वायनाड, दोनों से उनका भावनात्मक लगाव है। उन्होंने कहा, ''वायनाड से सांसद के तौर पर पिछले पांच साल बहुत शानदार और सुखद अनुभव वाले रहे हैं। वायनाड के लोगों ने मुझे बहुत कठिन समय में लड़ने के लिए समर्थन और ऊर्जा दी। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। उन्होंने कहा, ''मैं वायनाड का दौरा करना जारी रखूंगा और वायनाड से किये गए वादे पूरे किए जाएंगे।''

राहुल ने आगे कहा कि रायबरेली और वायनाड को ''दो-दो सांसद मिलेंगे। उन्होंने कहा, ''रायबरेली से मेरा पुराना नाता है और मुझे बहुत खुशी है कि मैं इसका प्रतिनिधित्व करूंगा। यह कोई आसान फैसला नहीं था, क्योंकि मेरा लगाव दोनों (वायनाड और रायबरेली) से है।''

रायबरेली से मेरा पुराना रिश्ता है

बैठक के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए प्रियंका ने कहा कि मैं इस फैसले से बहुत खुश हूं। वायनाड का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए गर्व की बात होगी। मैं एक अच्छा प्रतिनिधि बनने की कोशिश करुंगी। रायबरेली से मेरा पुराना रिश्ता है और मैंने रायबरेली और अमेठी के लिए काफी काम किया है। मैं भैया की मदद रायबरेली में भी करुंगी। हम दोनों वायनाड और रायबरेली में एक-दूसरे की मदद भी करेंगे। कांग्रेस आलाकमान की यह बैठक राहुल गांधी के रायबरेली या वायनाड सीट छोड़ने पर मची ऊहापोह को लेकर आयोजित की गई थी। इस मीटिंग में सत्र में कांग्रेस की रणनीति को लेकर भी चर्चा होने की संभावना है।

लोकसभा अध्यक्ष पद अपने पास रखना चाहती है भाजपा

सहयोगियों को दे सकती है उपाध्यक्ष का पद

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) आम चुनाव में 240 सीटें हासिल करने के बाद 18वीं लोकसभा के लिए अध्यक्ष का पद बरकरार रखना चाहती है। सूत्रों ने सोमवार को कहा, पार्टी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सहयोगियों को उपाध्यक्ष का पद भी दे सकती है। केंद्रीय रक्षा मंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता राजनाथ सिंह को महत्वपूर्ण संसदीय भूमिका के लिए जनता दल-यूनाइटेड (जेडी-यू) और तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) सहित एनडीए सहयोगियों के साथ बातचीत करने का काम सौंपा गया है, जो कार्यवाही के सुचारू संचालन की सुविधा प्रदान करता है। लोकसभा सचिवालय के अनुसार, लोकसभा 26 जून को अपने नए अध्यक्ष का चुनाव करेगी, जिसके लिए उम्मीदवारों के समर्थन वाले प्रस्तावों के नोटिस एक दिन पहले दोपहर तक जमा किए जा सकते हैं। सूत्रों ने कहा था कि अगर डिप्टी स्पीकर का पद उनके खेमे को नहीं दिया गया तो इंडिया ब्लॉक स्पीकर पद के लिए उम्मीदवार खड़ा कर सकता है। उन रिपोर्टों को खारिज करते हुए जिसमें कहा गया है कि एनडीए सहयोगियों - टीडीपी और जेडी (यू) - ने स्पीकर पद की मांग की है, पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि आम सहमति तक पहुंचने के लिए सहयोगियों के साथ चर्चा करने से पहले इस मामले पर आंतरिक रूप से विचार किया जाएगा। जबकि आंध्र प्रदेश के सीएम एन चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी ने कहा कि एनडीए सहयोगियों को एक सर्वसम्मति वाले उम्मीदवार को अंतिम रूप देना चाहिए, उनके बिहार समकक्ष नीतीश कुमार की जनता दल (यूनाइटेड) ने कहा कि वह भाजपा के फैसले का समर्थन करेगी। जेडीयू नेता केसी त्यागी ने कहा है कि उनकी पार्टी और टीडीपी एनडीए का हिस्सा हैं और लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए बीजेपी द्वारा नामित उम्मीदवार का समर्थन करेंगे।

मालगाड़ी की टक्कर से कंचनजंगा एक्सप्रेस के तीन डिब्बे पटरी से उतरे 15 यात्रियों की मौत

दार्जिलिंग। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में सोमवार सुबह एक मालगाड़ी की टक्कर लगने के कारण सियालदह जाने वाली कंचनजंगा एक्सप्रेस के पीछे के तीन डिब्बे पटरी से उतर गए। इस हादसे में कम से कम 15 यात्री मारे गए हैं और 60 से अधिक लोग घायल हो गए। मरने वालों में मालगाड़ी का पायलट और सह-पायलट भी शामिल है। हादसा इतना भयावह था कि मरने वालों की संख्या में अभी इजाफा हो सकता है। कई यात्री अभी भी डिब्बों में अंदर फंसे हैं। जिन्हें निकालने के लिए राहत-बचाव टीम कटर का इस्तेमाल कर रही है। हादसे की भयावहता बताते हुए एक यात्री ने कहा कि मंजर बेहद खतरनाक था। मैंने ट्रैक पर शव पड़े हुए देखे। मौत छूकर निकली। हमें बचाने सबसे पहले स्थानीय लोग पहुंचे थे। कंचनजंघा रेल हादसे के बाद राज्य और केंद्रीय एजेंसियां एक्टिव हो गई हैं।

पूर्व मंत्री गुरु रुद्र की बहन प्रियंका गुरु से मिले डिप्टी सीएम शर्मा,

रायपुर। डिप्टी सीएम विजय शर्मा आज प्रियंका गुरु के निवास पहुंचे. डिप्टी ष्टरूविजय शर्मा ने कहा कि विजय गुरु और प्रियंका गुरु से मुलाकात करने आया हूं. साथ ही विजय गुरु का मार्गदर्शन भी लेना था. विजय गुरु ने बलौदाबाजार घटना की निंदा की है. सामाजिक तौर पर कभी ऐसा नहीं हो सकता. ये असामाजिक कार्य है. ऐसा गुरुजी का कहना है. बता दें कि प्रियंका गुरु ने हाल के लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा में प्रवेश किया है. प्रियंका गुरु कांग्रेस के पूर्व मंत्री गुरु रुद्र की बहन है और दोनों के घर एक ही परिसर में स्थित है. इस दौरान डिप्टी सीएम शर्मा ने कहा कि बलौदाबाजार घटना की जांच के लिए भाजपा की समिति बनी है क्योंकि इस मामले में बहुत सारे एंगल ऐसे हैं, जिसमें जांच आवश्यक है.

प्रमुख समाचार

शिवराज सिंह ने विधानसभा से इस्तीफा दिया

भोपाल। केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्य प्रदेश में विदिशा से लोकसभा के लिए चुने जाने के कुछ दिनों बाद अपनी पारंपरिक बुधनी सीट से विधायक के रूप में सोमवार को इस्तीफा दे दिया। विधानसभा अध्यक्ष को अपना इस्तीफा सौंपने के बाद चौहान ने कहा कि वह सीहोर जिले के बुधनी के लोगों की सेवा करना जारी रखेंगे जहां से उन्होंने दशकों पहले अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। एक वीडियो बयान में, भाजपा के वरिष्ठ नेता ने कहा कि बुधनी सीट से इस्तीफा देना उनके लिए बहुत भावुक क्षण है, जिसने उन्हें छह बार विधानसभा के लिए चुना। उन्होंने कहा, ''मैं आज बहुत भावुक महसूस कर रहा हूं। मैंने मध्य प्रदेश विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। बुधनी के लोग मेरी हर सांस में बसते हैं। मैंने अपना सार्वजनिक जीवन बुधनी से शुरू किया और लोगों ने मुझे अपना प्यार और स्नेह दिया।'' पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, ''बचपन से ही मैं बुधनी में आंदोलनों में हिस्सा लेता रहा हूं। हमेशा मुझे लोगों का प्यार और स्नेह मिलता रहा है। लोगों की सेवा करना मेरे लिए भगवान की पूजा करने जैसा है।

भाजपा ने शिवराज को झारखंड चुनाव प्रभारी की जिम्मेदारी दी

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 खत्म होते ही भाजपा ने अब विधानसभा चुनावों के लिए तैयारी शुरू कर दी है। महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड और जम्मू-कश्मीर राज्य के लिए भाजपा ने चुनाव प्रभारियों की नियुक्ति कर दी है। सोमवार को पार्टी ने भूपेंद्र यादव को महाराष्ट्र का चुनाव प्रभारी घोषित किया। इसके अलावा रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को सह-प्रभारी बनाया गया है। वहीं हरियाणा की जिम्मेदारी शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को मिली है और उनके साथ ही त्रिपुरा के पूर्व सीएम बिप्लब कुमार देब सह-प्रभारी बनाए गए हैं। इसी साल अक्टूबर में इन दोनों राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। पार्टी ने झारखंड के लिए शिवराज सिंह चौहान को प्रभारी बनाया है। उनके साथ सह-प्रभारी के तौर पर हिमंत बिस्वा सरमा काम करेंगे। जी. किशन रेड्डी को जम्मू-कश्मीर का चुनाव प्रभारी नियुक्त किया गया है। हरियाणा और महाराष्ट्र में कुछ महीनों के अंदर ही चुनाव होने हैं तो वहीं झारखंड में भी अगले साल जनवरी तक इलेक्शन प्रस्तावित हैं। अब तक चुनाव आयोग ने स्पष्ट तौर पर जम्मू-कश्मीर के चुनाव पर कुछ नहीं कहा है, लेकिन पिछले दिनों ही जल्द ही इलेक्शन कराने की बात कही थी।

भारतीय नौसेना के बेड़े में शामिल होंगी छह पनडुब्बियां

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना स्पेन में 'प्रोजक्ट 75 भारत (पी75आई)' के तहत अत्याधुनिक उपकरणों का परीक्षण करने जा रही है। स्पेन की एक जहाज निर्माता (शिपयार्ड) कंपनी नवंतिया के अनुसार इस परीक्षण के बाद भारतीय नौसेना छह आधुनिक पनडुब्बियों को अपने बेड़े में शामिल करेगी। नवंतिया के चेयरमैन रिकार्डो डोमिंगुज गार्सिया बाकुएरो का कहना है कि स्पेन की सरकार और नौसेना पी75आई को लेकर काफी उत्साहित है और हर तरह से इस प्रोजक्ट में भारत की मदद करना चाहती है। इस योजना के तहत भारत सरकार के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। नवंतिया के प्रमुख ने कहा कि जून के आखिरी सप्ताह से भारतीय नौसेना कार्टाजेना के पोत कारखाने में वायु स्वतंत्र प्रणोदन परीक्षण की शुरूआत करेगी। रिकार्डो डोमिंगुज ने आगे कहा कि इस परीक्षण में उनका साथ लार्सन एंड टर्बो (एल एंड टी) कंपनी देगी। परीक्षण के दौरान भारतीय नौसेना को विश्व स्तर की एआईपी तकनीक की जानकारी दी जाएगी।

पाठ्यपुस्तकों में भारत और इंडिया का परस्पर प्रयोग, इस पर बहस बेकार

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने कहा है कि एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों में भारत और इंडिया का परस्पर प्रयोग किया जाएगा, जैसा कि देश के संविधान में है। ये टिप्पणियां सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम पर काम कर रही एक उच्च स्तरीय समिति द्वारा यह सिफारिश किए जाने के मद्देनजर महत्वपूर्ण हैं कि सभी कक्षाओं की स्कूली पाठ्यपुस्तकों में इंडिया के स्थान पर भारत शब्द होना चाहिए। यहां 'पीटीआई' के मुख्यालय में संपादकों के साथ बातचीत में एनसीईआरटी प्रमुख ने कहा कि किताबों में दोनों शब्दों का इस्तेमाल किया जाएगा और परिषद को भारत या इंडिया से कोई परहेज नहीं है। उन्होंने कहा, यह परस्पर उपयोग के योग्य हैं....हमारा रुख वही है जो हमारा संविधान कहता है और हम उस पर कायम हैं। हम भारत का इस्तेमाल कर सकते हैं, हम इंडिया का इस्तेमाल कर सकते हैं, इसमें समस्या क्या है? हम इस बहस में नहीं हैं। जहां भी हमें ठीक लगे हम इंडिया का इस्तेमाल करेंगे, जहां भी हमें ठीक लगेगा हम भारत का इस्तेमाल करेंगे।

ओबीसी नेताओं द्वारा उठाए जा रहे मुद्दों पर ध्यान दिया जाए

जालना। भारतीय जनता पार्टी की नेता पंकजा मुंडे ने सोमवार को महाराष्ट्र सरकार से कहा कि वह अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) प्रदर्शनकारी लक्ष्मण हेक और नवनाथ वाघमारे द्वारा उठाए जा रहे मुद्दों का गंभीरता से समाधान करे। हेक और वाघमारे पिछले पांच दिनों से यहां भूख हड़ताल पर हैं। विभिन्न ओबीसी संगठनों के प्रदर्शनकारियों ने मराठों को कुनबी प्रमाण पत्र देने के संबंध में ऋषि सोयारे (रक्त संबंधियों) से संबंधित सरकार की मसौदा अधिसूचना को रद्द करने की मांग की है ताकि समुदाय के सदस्यों को आरक्षण का लाभ मिल सके। सोशल मीडिया मंच एक्स पर मुंडे ने प्रदर्शनकारियों के साथ असमान व्यवहार पर चिंता व्यक्त की और सरकार से सभी के लिए समान अधिकार सुनिश्चित करने का आग्रह किया। हेक और वाघमरे के बिगड़ते स्वास्थ्य की ओर इशारा करते हुए मुंडे ने कहा, सरकार को प्रदर्शनकारियों के बीच भेदभाव नहीं करना चाहिए। हर किसी को अपनी बात कहने और उचित व्यवहार करने का अधिकार है। हेक ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार मनोज जरांगे को तरजीह दे रही है जो मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग कर रहे हैं.

संसद व संविधान से लेकर सरोकारों की चुनौती

राजेश बादल

जवाहरलाल नेहरू के तीन बार लगातार प्रधानमंत्री बनने के कीर्तिमान की बराबरी करने वाली गैरकांग्रेसी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार ने काम संभाल लिया है। हालांकि तीसरी बार अपने दम पर भाजपा को बहुमत नहीं मिला, जो नेहरू सरकार को हासिल था इसलिए कीर्तिमान की चमक तनिक धुंधलाई हुई है। मगर इस धुंधलाई चमक का बड़ा सकारात्मक लोकतांत्रिक संदेश भी इस मुल्क के मतदाताओं ने राजनीतिक दलों को दिया है। मतदाताओं ने पक्ष के साथ प्रतिपक्ष के प्रति भी भरपूर भरोसा जताया है। पिछली लोकसभा की तरह उसका आकार इस बार निर्बल और महीन नहीं है। वह अब पक्ष की आंखों में आंखें डालकर राष्ट्र की समस्याओं से लेकर नीति विषयक कठिन सवाल पूछ सकता है।

भले ही भाजपा इससे अपने को असहज महसूस करे, लेकिन अब विपक्ष का सम्मान और उसकी शंकाओं का समाधान सत्तारूढ़ पार्टी का अनिवार्य कर्तव्य है। विपक्षी सवालों के घेरे से बच निकलने की कोशिश अब वह नहीं कर सकती। भारत के लोग उम्मीद कर सकते हैं कि संसद और संविधान की सर्वोच्चता का सभी दल सम्मान करेंगे। बीते दिनों मैंने इसी पृष्ठ पर लिखा था कि भारी बहुमत वाला एकतरफा जनादेश किसी भी गणतंत्र के लिए खतरे से खाली नहीं होता। पक्ष हमेशा बहुमत पर गर्वोन्मत्त रहता है और विपक्ष अपने बौनेपन के कारण अवसादग्रस्त रहता है।

पिछली बार का उदाहरण है कि लोकसभा में विपक्ष के नेता पद के लिए किस तरह जद्दोजहद हुई थी और सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद कांग्रेस को संसदीय भूमिका निभाने का अवसर आसानी से नहीं मिला था। इस बार सरकार विपक्ष के सवालों की उपेक्षा नहीं कर सकती और न विपक्ष के पास सार्थक भूमिका नहीं निभाने के लिए कोई बहाना है।

लोकतांत्रिक संतुलन के चलते ही मुल्क के मतदाता मिलीजुली सरकार से अनेक परिणाम चाहते हैं। यह गैरवाजिब नहीं है। जनादेश उन चुनौतियों से निपटने के लिए एनडीए सरकार से अपेक्षा करता है, जो नए भारत में दिनोंदिन विकराल हो रही हैं। अलबत्ता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपनी बड़ी चुनौती यही है कि इस बार उन्हें गठबंधन के सहयोगी दलों को भी जिम्मेदारी से साथ लेकर चलना होगा। जाहिर है कि प्राथमिकता की सूची में सर्वसम्मत न्यूनतम साझा कार्यक्रम सर्वोपरि होगा। अर्थ यह है कि भाजपा की अपनी प्राथमिकताएं हाशिये पर ही रहेंगी।

किसी भी सरकार के लिए अवाम के दिलों में छवि निर्माण का काम इन दिनों अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। एक बार जो छवि बन जाती है, उसे बदलना आसान नहीं होता। इस बरस लोकसभा चुनावों का ऐलान हुआ तो सत्तारूढ़ दल से जुड़े कुछ नेताओं के बयानों से धारणा बन रही थी कि भाजपा की सरकार संविधान में बदलाव की मंशा रखती है। चुनाव जीतने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव जीतने के बाद संविधान की प्रति को सिर से लगाकर सम्मान देने की भावना का सार्वजनिक इजहार कर दिया है। मगर उनकी पार्टी के लोग भी ऐसा करें तो लोगों में भरोसा जगेगा।

संसद की सर्वोच्चता भी एक गंभीर मुद्दा है। संसद में मुल्क के महत्वपूर्ण मसलों पर गंभीर चर्चा हो। इन चर्चाओं में विपक्ष को शामिल किया जाए, संसदीय समितियों और उनके कामकाज को प्रधानता दी जानी चाहिए। देश का कोई बड़ा और नीति विषयक निर्णय संसद में ही होना चाहिए। सामूहिक विमर्श से हमेशा बेहतर परिणाम मिलते हैं। यही लोकतंत्र का तकाजा है। इसके अलावा सरकार की धर्मनिरपेक्ष छवि पर भी पिछले कार्यकाल में कई बार सवाल उठे थे। कुछ घटनाओं से इन सवालों-संदेहों को बल मिला। पार्टी ने अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधियों को लोकसभा का टिकट देने में कंजूसी बरती। इसका संदेश अच्छा नहीं गया।

धर्मनिरपेक्षता के बारे में उनकी सरकार के कामकाज से ही छवि बदलेगी। यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि सरकार में शामिल दो बड़े घटक दल तेलुगुदेशम और जनता दल (यू) का परोक्ष दबाव भी रहेगा। इन दोनों पार्टियों का भाजपा के साथ वैचारिक मतभेद रहा है। भले ही वे एनडीए में शामिल रहे हैं। मगर उनका रवैया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पूरे कार्यकाल में सतर्क रहने के लिए बाध्य करता रहेगा। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू सियासत में प्रधानमंत्री से वरिष्ठ हैं और सियासी शतरंज की चालों को बखूबी समझते हैं। उनको संतुष्ट करना समूचे कार्यकाल में प्रधानमंत्री के लिए अलग चुनौती बना रहेगा।

अच्छी बात है कि शपथ समारोह का भागीदार बनाने के लिए नई सरकार ने पड़ोसी देशों को आमंत्रित किया। महत्वपूर्ण यह है कि मालदीव के राष्ट्रपति भी इसमें आए। वे भारत विरोधी रवैये के लिए जाने जाते हैं। बीते दिनों अपने इंडिया आउट के फैसले के बारे में भारत में काफी आलोचना का शिकार हुए हैं। वे खुले तौर पर चीन समर्थक हैं। उन्हें न्यौता देकर इस सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी के उस कथन का सम्मान किया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि हम सब कुछ बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसियों को नहीं। यह भावना नई सरकार की विदेश नीति में झलकनी चाहिए।

इस बार चुनाव के प्रचार अभियान के आकाश पर महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के आरोपों के घने बादल मंडराते रहे। दस वर्षों में भारत के लिए यह तीन मुद्दे बड़ी चुनौती बने रहे हैं। एनडीए सरकार के लिए तमाम प्राथमिकताओं से ऊपर इन समस्याओं से निजात पाना बेहद जरूरी है।

तेंदूपत्ता संग्राहकों मिलेगा नकद भुगतान

जगदलपुर। बस्तर के तीन जिलों में लगातार उठ रही मांगो को लेकर तेंदूपत्ता संग्राहकों के लिए अब राहत की खबर निकलकर आई है। बीजापुर सुकमा और नारायणपुर जिले में अंदरूनी इलाकों के तेंदूपत्ता संग्रहकों के द्वारा तेंदूपत्ता का नगद भुगतान की मांग लगातार उठ रही थी और वनमंत्री से लेकर वन विभाग के आल्हा अफसर तक संग्राहकों के द्वारा पत्राचार कर मांग की जा रही थी।

जिसपर वन मंत्री केदार कश्यप की पहल से आखिरकार तेंदूपत्ता संग्राहकों की मांग पर मुहर लग गई। अपर सचिव ने सुकमा, बीजापुर और नारायणपुर के लिए छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ के प्रबंध संचालक को आदेश जारी किया है। जिसमें छह सूत्रीय शर्तों के अधीन संग्राहकों को तेंदूपत्ता पारिश्रमिक का नगद भुगतान की अनुमति कलेक्टरों को दी है।

बता दें कि बस्तर भर में तेंदूपत्ता वन उपज की खरीदी संग्राहकों के माध्यम से की जाती है। जहां हितग्राही तेंदूपत की तोड़ाई कर उसे सरकार द्वारा तय किए गए ठेकेदारों को बेचा जाता है , इन हितग्राहियों का पारिश्रमिक तेंदूपत्ता हितग्राहियों के खाते में किया जाना होता है।

लेकिन सुकमा बीजापुर नारायणपुर जिले के ज्यादातर इलाकों में बैंक में खाता ना होना, नेटवर्क , बैंक की दूरी, आवागमन और अशिक्षित होना की वजह से हितग्राहियों को खाते में पैसा लेने में काफी दिक्कतों का सामना उठाना पड़ता है। जिसको लेकर लगातार हितग्राहियों के द्वारा मांग रखी जा रही थी कि उन्हें नगद भुगतान किया जाए इससे पहले भी कई बार हितग्राहियों की मांग पर उन्हें नगद भुगतान किया जाता था।

लेकिन नगद भुगतान की स्थिति में कई बार अशिक्षित हितग्राहियों तक उनका पूरा हक नहीं पहुंच पाता जिस वजह से पैसों के हेरफेर का भी अंदेशा बना रहता है । इन सब को ध्यान में रखते हुए अपर सचिव ने 6 शर्तों के अधीन नगद भुगतान की अनुमति दी है।

क्या है शर्तें...

1. नगद भुगतान के लिए कौन से संग्राहक पात्र होंगे इसका निर्धारण कलेक्टर द्वारा किया जाएगा।

2. प्रत्येक प्रकरण का नगद भुगतान कलेक्टर की अनुमति से होगा।

3. समस्त नगद भुगतान की कार्यवाही जिला कलेक्टर के पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण से संपन्न होगी।

4. प्रत्येक जिले में जिला कलेक्टर तथा वन मंडलाधिकारी एवं प्रबंध संचालक जिला यूनियन द्वारा आपसी समन्वय से प्रस्तावित क्षेत्र के अंतर्गत है बाजार या अन्य उपयुक्त स्थान पर कैंप का आयोजन कर संबंधित संग्राहको को तेंदूपत्ता संग्रहण कार्ड में उचित प्रविष्टि कर नगद भुगतान करते हुए पावती प्राप्त करेंगे । नगद भुगतान के पूर्व पर्याप्त प्रचार प्रसार किया जाएगा और नगद भुगतान से संबंधित समस्त कार्य की पूर्ण वीडियोग्राफी करते हुए प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाएगा।

5. संबंधित जिला कलेक्टर के मार्गदर्शन में उपरोक्त कैंप के दौरान संग्राहकों को आवश्यकता अनुसार आधार कार्ड जारी करने बैंक खाता खुलवाने हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें इस हेतु सीएससी स्थानीय बैंक आदि से आवश्यक सहयोग प्राप्त किया जाएगा।

6. संग्राहकों के द्वारा प्राप्त बैंक खाता विवरण के अनुरूप संग्राहक सर्वेक्षण सॉफ्टवेयर तेंदूपत्ता पेमेंट सॉफ्टवेयर में आवश्यक पंजीयन आदि जिला यूनियन तथा कस के माध्यम से कराया जाना सुनिश्चित किया जाएगा।

इन शर्तों के अधीन तत्काल भुगतान प्रदान कर 15 दिन के भीतर पूर्ण किए जाने हेतु अपर सचिव के एल मांझी ने प्रबंध संचालक को निर्देश दिया है।

तंत्र-मंत्र से पैसों को दस गुना करने का झांसा देकर 5 लाख की ठगी

बालोद। तंत्र-मंत्र के जरिए पैसों को दस गुना करने के नाम पर लगभग पांच लाख रुपए की ठगी को अंजाम दिया। प्रार्थी की शिकायत पर अर्जुन्दा पुलिस ने फर्जी बाबा के साथ सहयोगियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। मामला अर्जुन्दा क्षेत्र के ग्राम पिरीद का है, जहां रहने वाले प्रार्थी नरेन्द्र कुमार हिरवानी ने 15 जून को थाना में आकर शिकायत दर्ज कराई कि ग्राम कांदुल निवासी रविन्द्र कुमार ने अप्रैल महीने में अपने घर बुलाकर ऐसे तांत्रिक से मुलाकात कराई, जिसने बताया कि वह तंत्र-मंत्र से पैसा को करोड़ों में बनाने का काम करता है। अपनी बात को साबित करने के लिए रविन्द्र कुमार के घर की बाड़ी में पूजा-पाठ व मंत्रोच्चारण कर बैगा पुनाराम ने 5001 रुपए देने बोला। पैसों को काले कपड़े में रखने के बाद जाकर देखा तो उसमें 50,100 व 200 रुपए के नोट उसमें पड़े हैं, जो कुछ 8000 रुपए थे। नरेंद्र ने पुलिस को बताया कि इससे उसके मन में लालच आ गया, जिसे भांपते हुए बैगा ने 450000 रुपए की मांग करते हुए इसके बदले में नब्बे लाख रुपए देने का वादा किया। जिस दिन पैसा दिया, उसी रात को मंत्रोच्चारण के जरिए 200,100 व 50 रुपए का नोट बनाकर कुल 6000 रुपए की राशि बनाकर दिखाई। इसके बाद कहा कि आज इतना ही नोट बनेगा, दो-चार दिन बाद मंत्रोच्चारण कर नोट बनाएंगे कह कर चले गए, लेकिन उसके बाद कभी भी वापस नहीं आए।

पैसों को दस गुना करने का झांसा देकर कर ठगी करने का अहसास होने पर नरेंद्र ने थाने में शिकायत दर्ज कराई। मामले की गंभीरता को देखते हुए अर्जुन्दा पुलिस ने अर्जुन्दा निवासी महावीर मंडावी पिता झुमूक लाल (52 साल), रविन्द्र कुमार दीवान पिता डोमार सिंह (39 वर्ष) और रायपुर के खरोरा थाना स्थित चोरभट्ठी भाठापारा निवासी पुनाराम खुटे पिता शंकर लाल खुंटे (42 वर्ष) को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा है।

कबाड़ी के ठिकानों पर पुलिस की रेड गोदाम से मिला खजाने का सुराग

ललित कबाड़ी के ठिकानों से चोरी का माल बरामद

दुर्ग। दुर्ग जिले में कबाड़ का कारोबार करने वाले लोगों के ठिकानों की जांच शुरु हो चुकी है। सोमवार को दुर्ग पुलिस ने कुरुद के गोकुल धाम इलाके में रेड मारा। छापे के दौरान ललित कबाड़ी के गोदाम से पुलिस ने तीन ट्रकों को जब्त किया। पकड़े गए ट्रकों में चोरी का 25 टन कबाड़ रखा था। कबाड़ गोदाम में जैसे ही पुलिस की रेड की खबर मिली शहर के बाकी कबाड़ियों में हड़कंप मच गया। पुलिस ने चोरी का माल खरीदने और रखने के जुर्म में ललित कबाड़ी को गिरफ्तार कर लिया है।

लोकसभा चुनाव के बाद एसपी जितेंद्र शुक्ला ने ललित कबाड़ी के गोदामों की जांच के लिए जामुल पुलिस को निर्देश दिए थे। एसपी के निर्देश के बाद एसीसीयू की टीम ने गोदाम पर दबिश दी। जांच के दौरान जामुल पुलिस को भी मौके पर बुलाया गया। संयुक्त कार्रवाई के दौरान तीन ट्र्कों में लोड चोरी का माल बरामद हुआ। शिकायत मिली थी कि कबाड़ के गोदाम में रात के वक्त चोरी की गाड़ियों को काटने का काम किया जाता है।

टीआई, केशव कोसले ने कहा शिकायत मिली थी कि रात वक्त ललित कबाड़ी के गोदाम में चोरी की गाड़ियों को काटने का काम किया जाता है। इसके साथ ही भिलाई स्टील प्लांट से चोरी का सरिया, रेलवे से चुराए गए लोहे और कल कारखानों के लाए गए चोरी के लोगों को यहां कबाड़ बनाकर ठिकाने लगाया जाता है। चोरी के माल को ट्रकों के जरिए यहां से बाहर भेज दिया जाता है। कार्रवाई के दौरान 25 टन चोरी का कबाड़ जब्त किया गया है।

छापेमारी के बाद पुलिस ने ललित कबाड़ी के सुपेला और जामुल के ठिकानों को भी सील कर दिया है। पुलिस को लंबे वक्त से ललित कबाड़ी के खिलाफ शिकायत मिलती रही है। हर बार ललित कबाड़ी पुलिस की गिरफ्त से बच निकलता था। इस बार पुलिस ने सुनियोजित तरीके से रेड की और ललित कबाड़ी पुलिस के फंदे में फंस गया। जब्त किए गये कबाड़ की कीमत तीस लाख बताई जा रही है।

कोई बस शहर में प्रवेश नहीं कर सीधे बाईपास से ही निकल जाएगी तो होगी कार्रवाई

कांकेर। रायपुर जगदलपुर मार्ग पर चलने वाली यात्री बसें रात 12 बजे के बाद शहर के अंदर प्रवेश नहीं करती थी। बसों में सवार कांकेर के यात्रियों को माकड़ी ढ़ाबा, पप्पू ढाबा में ही उतार बाईपास से निकल जाती थी। इसके बाद यातायात पुलिस ने बस ऑपरेटरों की बैठक बुलाई और अंतिम चेतावनी देते हुए कहा कि अगर कोई बस कांकेर शहर में प्रवेश नहीं कर सीधे बाईपास से ही निकल जाएगी तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। यातायात पुलिस ने यात्रियों से भी कहा की अगर कोई बस चालक शहर के उन्हें बाहर ही उतार देता है तो बस के नंबर सहित फोटो खींचकर पुलिस को दें कार्रवाई की जाएगी।

यात्री बसें कांकेर शहर के अंदर से होकर आना जाना कर रही है या बाईपास से ही चली जा रही है इस पर निगरानी रखने के लिए पुलिस की हाईवे पेट्रोलिंग टीम को जिम्मेदारी दिया गया है। पेट्रोलिंग टीम रात भर चारामा से कांकेर के बीच लगातार गश्त करेगी। यातायात पुलिस ने कंट्रोल रूम में बस ऑपरेटरों की बैठक ली, बैठक में यातायात प्रभारी दीपक साव ने कहा सभी बसों को कांकेर शहर के अंदर से ही होकर जाना है और निर्धारित स्टॉपेज में यात्रियों को उतारना है। इसके बाद भी कोई चालक यदि बस को बाईपास से ही ले जाएगा तो उसके खिलाफ सीधे कार्रवाई की जाएगी। इसमें किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। रात में सवारियों को ढाबों में या बाईपास के क्रॉसिंग में उतारना गलत है। साथ ही पुलिस ने सभी बसों के ड्राइवरों का चरित्र सत्यापन अनिवार्य रूप से कराने कहा। इसके अलावा नशे मे कोई भी चालक बस चलाते पाया गया तो कठोर कार्रवाई की जाएगी और मामला न्यायालय में पेश किया जाएगा, क्योंकि यह यात्रियों की सुरक्षा का मामला है। बस ऑपरेटरों को कहा गया कि यदि किसी यात्री का सामान बस में छूट जाता है तो उस सामान को पुलिस थाने में जमा कराएं ताकि सामान के वास्तविक मालिक को सुपुर्द किया जा सके। सभी बस ऑपरेटरों ने उक्त सभी नियमों का पालन करने स्वीकृति दी और कहा की वे यात्रियों की हर सुविधा का ख्याल रखेंगे।

कुदरगढ़ देवी धाम के बाजार में लगी आग, आठ दुकानें जलकर खाक

दो सिलिंडर भी हुआ ब्लास्ट

सूरजपुर। ओडग़ी विकासखण्ड के कुदरगढ़ देवी धाम से पहले बाजार में रविवार की देर रात आग लग गई और इस आगजनी में आठ दुकानें जलकर खाक हो गई हैं साथ ही एक होटल में रखे दो सिलिंडर भी ब्लास्ट हो गए साथ ही एक मोपेड भी जल गई। इस आगजनी में व्यवसायियों को लाखों रुपये के नुकसान होने की संभावना है। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका।

सरगुजांचल की आराध्य मां कुदरगढ़ी देवी धाम पहाड़ के ऊपर है। उसके नीचे समतल जगह पर दुकानें लगाई जाती है। इन दुकानों में तिरपाल,प्लास्टिक आदि का भी उपयोग किया जाता है। अस्थाई रूप से बिजली व्यवस्था के लिए दुकानदारों ने यहां तार भी खींचा है। शनिवार देर रात यहां पूजा सामग्रियों की दुकान में आग लग गई। गर्मी के कारण आग तेजी से फैली। अगल-बगल की दुकानों को भी आग ने चपेट में ले लिया। यहां एक होटल में भी आग लग गई। होटल में दो सिलिंडर रखे हुए थे। इन दोनों सिलिंडरों में ब्लास्ट होने से अगल-बगल की दुकानें धू- धू कर जलने लगी। कुदरगढ़ चौकी प्रभारी संजय गोस्वामी के नेतृत्व में पुलिस टीम रात में ही मौके पर पहुंची। स्थानीय स्तर पर आग बुझाने के प्रयासों के बीच सूरजपुर से दमकल की वाहनें भी पहुंची। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। दुकानों में सो रहे लोगों के सुरक्षित रहने से सभी ने राहत की सांस ली है। दुकानदारों को बड़ा आर्थिक नुकसान हुआ है। शार्ट सर्किट से आग लगने की संभावना है। क्षेत्रीय विधायक व महिला बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े भी सोमवार सुबह कुदरगढ़ पहुंची। उन्होंने घटनास्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने प्रभावित व्यापारियों को उचित सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया है।

समाज के सैकड़ों साल पुराने मुक्तिधाम पर ट्रैक्टर चलाने का आरोप

कवर्धा। कबीरधाम जिले के पांडातराई थाना के ग्राम पंचायत चरखुराकला में मुक्तिधाम की जमीन पर ट्रैक्टर चलाने का आरोप पटवा समाज के लोगों ने लगाया है। समाज के लोगों का आरोप है कि पटवा पाटस्कर समाज के मुक्तिधाम पर कब्जा करने जमीन दलाल ने टैक्टर चलवा दिया। इसके विरोध में समाज के लोगों ने पुलिस में शिकायत कर जमीन को मुक्त कर कब्जा करने वाले पर कार्रवाई की मांग की है।

दरअसल, समाज के लोगों को सूचना मिली कि डब्बू पाठक के समाज के मुक्तिधाम पर कब्जा करने की सूचना मिली थी। समाज के प्रमुख लोग जब मौके पर पहुँचे तो पाया कि श्मशान घाट पर ट्रैक्टर से जुताई कर खेत बनाया जा रहा है। इस पर समाज के लोगों ने पांडातराई थाना में शिकायत दर्ज कराते हुए मुक्तिधाम को कब्जे से मुक्त कर डब्बू पाठक के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

पटवा पाटस्कर समाज के जिला अध्यक्ष हितेश पाटस्कर ने बताया कि कल देर शाम घूमने गया था। उसी दौरान देखा कि प्रयास पाठक उर्फ डब्बू पाठक समाज के चारखुराकला ग्राम पंचायत स्थित समाज के सैकड़ों साल पुराने मुक्तिधाम को ट्रैक्टर से समतल कराकर खेत बनाने का काम कर रहा है, जिसमें पूर्वजों के अनेकों मठों पर ट्रैक्टर चला दिया गया है। पूर्वजों के अपमान पर समाज के लोग एक होकर पांडातराई थाना में शिकायत दर्ज कराने पहुंचे थे।

वहीं डब्बू पाठक का दावा है कि उक्त लगानी जमीन के पूरे कागज उनके पास मौजूद है और उनपर लगे सभी आरोप निराधार है। उन्होंने कहा कि जब भी पुलिस और राजस्व अधिकारी कागज मांगेंगे वो उन्हें प्रमाण के साथ कागज सौंप देंगे।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

बीजापुर में हर्षोल्लास साथ मनाई गई बकरीद

बीजापुर। बीजापुर में बकरीद खुशनुमा माहौल में मनाई गई। ईदगाह में सुबह बकरीद की विशेष नमाज जामा मस्जिद के खतिबो इमाम मो. नावेद आलम ने अदा कराई। नमाज के बाद खुतबा पढ़कर देश व प्रदेश की तरक्की के साथ अमन चैन और खुशहाली की दुआ मांगी गई। बकरीद की नमाज के लिए बीजापुर के अलावा बासागुड़ा, मोदकपाल, नेमेड़, दुगोली, कुटरू, फरसेगढ से समाज के लोग बड़ी संख्या में पहुंचकर नमाज अदा की। नमाज के बाद सभी लोगों ने एक दूसरे से गले मिलकर मुबारक बाद दी। नमाज अदा करने के बाद बड़ी संख्या में लोग कब्रिस्तान पहुंचकर अपने मरहुमों के हक में फातिमा पढ कर दुआए मांगी। इसके बाद साहिबे निसाबों ने अपने अपने घरों में कुर्बानी रस्म अदा कराई। बकरीद के मौके पर अन्य समाज के अलावा दोस्त और रिश्तेदारों ने मुबारकबाद दी।

एक से बदल जायेगा बस्तर में चलने वाली पैसेंजर का नंबर

जगदलपुर। रेलवे ने किरंदुल-विशाखापटनम-किरंदुल लाइन पर चलने वाली पैसेंजर और नाइट एक्सप्रेस के नंबर बदल दिया है, एक जुलाई से दोनों गाडियां नए नंबर से पहचानी जाएंगी। रेलवे के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक के. संदीप ने बताया कि ईस्ट कोस्ट रेलवे ने मंडल में चलने वाली कई तरह ट्रेनों क पुन- क्रमांकन करने का फैसला लिया गया है। इसमें बस्तर से विशाखापटनम की तरफ चलने वाली ट्रेनें भी शामिल हैं। उन्होंने बताया कि विशाखापटनम-किरंदुल नाइट एक्सप्रेस के लिए संशोधित ट्रेन संख्या 18527 होगी। वहीं वापसी दिशा में किरंदुल विशाखापटनम एक्सप्रेस की ट्रेन संख्या 18528 रहेगी, जबकि पुरानी संख्या 18514 व 18513 थी। इसी तरह विशाखापटनम-किरंदुल पैसेंजर की संशोधित ट्रेन संख्या 58501 होगी। वापसी दिशा में किरंदुल- विशाखापत्तनम पैसेंजर की ट्रेन संख्या 58502 होगी, जबकि वर्तमान में इस ट्रेन की संख्या 08551/08552 है। उन्होने बताया कि ट्रेन एक जुलाई से संशोधित नंबर के साथ संचालित की जाएंगी।

19 जून को मनाया जायेगा विश्व सिकल सेल दिवस

बेमेतरा। भारत सरकार द्वारा 1 जुलाई 2023 को सिकल सेल एनिमिया उन्मूलन मिशन प्रारंभ किया गया है। जिसके अंतर्गत 2023-2026 तक 0-40 वर्ष आयु वर्ग के सभी व्यक्तियों की सिकल सेल स्कीनिंग कर पोर्टल में एंट्री की जा रही है। इसी क्रम में केंद्र सरकार द्वारा राज्य में 19 जून 2024 को विश्व सिकल सेल दिवस मनाये जाने के दिशा निर्देश जारी किये गए हैं। इसी परिपेक्ष्य में कलेक्टर श्री रणबीर शर्मा के निर्देशानुसार जिले में 19 जून 2024 को विश्व सिकल सेल दिवस मनाये जाने निर्देशित किया हैं। कलेक्टर शर्मा ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी, सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास तथा जिले के अन्य संबंधित अधिकारियों एवं अमले के समन्वय से स्वास्थ्य विभाग द्वारा सिकल से रोग के संबंध में जनजागरूकता सिकल सेल वाहक तथा रोगियों को प्रेरित किये जाने हेतु, सिकल सेल संबंधित शीघ्र प्रारंभिक जांच आदि कार्यक्रम का आयोजन करने के निर्देश दिए गए हैं। बता दें की राज्य के 33 जिलों के लक्षित 1,77,69,535 सिकल सेल स्क्रीनिंग के विरूद्ध कुल 1,11,06,561 स्क्रीनिंग की गई है।

स्काउट गाइड संघ बसना के निर्वाचन की अधिसूचना जारी

बसना। भारत स्काउट एवं गाइड स्थानीय संघ बसना की आवश्यक बैठक शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बसना में रखी गई जिसमें उपस्थित परिषद के सदस्यों द्वारा चर्चा उपरांत सर्वसम्मति से निम्नानुसार निर्णय लिए गए 18 जून से 8 जुलाई संध्या 5 बजे तक सदस्यता अभियान चलेगा जिसमें प्रति व्यक्ति आजीवन सदस्य सदस्यता शुल्क 1500 एवं सामान्य सदस्य सदस्यता शुल्क 1000 निर्धारित किये गए। अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष पद के लिए 2100 प्रति उम्मीदवार नामांकन शुल्क देय होगा। ये सभी शुल्क वापसी अयोग्य होंगे। 10 जुलाई को सदस्यता सूची का प्रकाशन होगा जिसमें आजीवन सामान्य सदस्य 10 में से एक अधिकतम 10 के साथ-साथ प्रशिक्षित स्काउट -गाइड साधारण सदस्यों की सूची में सम्मिलित रहेंगे। 13 जुलाई संध्या 5 तक दावा आपत्ति, 16 जुलाई को संध्या 5 तक मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन, 20 जुलाई को संध्या 5 बजे तक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष का नामांकन। एक अध्यक्ष, अधिकतम 6 उपाध्यक्ष जिममें तीन पुरुष एवं तीन महिला होंगे।

पांच रूपये के पुराने नोट के बदले पांच लाख देने का झांसा

बिलासपुर। बिलासपुर के चकरभाठा थाना क्षेत्र में पांच रूपये के पुराने नोट के बदले में पांच लाख देने का झांसा देकर एक युवक से दो लाख की ठगी कर ली गई। पुलिस मामला दर्ज कर जांच पड़ताल कर रही है। दरअसल चकरभाठा क्षेत्र के छतौना के रहने वाले रोशन धूरी पिता सावत धूरी नोवा प्लांट में बिल्डर हेल्पर काम करता है जिसने एक मई की शाम इंस्टाग्राम में एक विज्ञापन देखा जिसमें 5 रूपये के पुराने नोट के बदले में पांच लाख 12 हजार देने की बात लिखी थी लालच में आते हुए उसने एड के कमेंट बॉक्स में जाकर अपनी सहमति दे दी कुछ देर बाद उसके मोबाइल में अनजान मोबाइल नंबर से फोन आया और उसे पांच रूपये के पुराने नोट की फोटो अपने व्हाट्सएप में मंगाई फोटो भेजने के बाद फोटो देखते ठग ने कंपनी में रजिस्ट्रेशन के लिए 720 रुपए जमा करने के लिए कहा। पीड़ित रोशन धुरी ने ऑनलाइन माध्यम से रकम जमा कर दिया 5 दिन बाद उसे बताया गया की 5 लाख 12 हजार लेकर आर्मी का एक जवान निकल गया है और वह सरगांव पहुंचने वाला है।

नवापारा शराब दुकान का सर्जरी : नीचे से लेकर ऊपर तक सारे कर्मचारी-अधिकारी हटाए गए

■ कर रहे थे लाखो की अवैध कमाई

नवापारा-राजिम। रायपुर जिले का नवापारा में स्थित शराब दुकान हमेशा चर्चा में रहते आ रहा है, यहां रोज लाखो रूपए की शराब लोग पी जाते है। ओवररेट की शिकायत तो आम बात है पर हल्ला तभी होता है जब कुछ ज्यादा ही ओवररेट हो जाता है। रविवार को यहां के देशी और अंग्रेजी शराब दुकान जो एक ही कंपाऊंड में है जमकर हल्ला हुआ। हल्ला की शिकायत भाजपा नेताओं तक पहुंची। फौरन भाजपा के युवा नेता किशोर देवांगन,नगर पालिका के नेता प्रतिपक्ष वरिष्ठ भाजपा नेता प्रसन्न शर्मा, वरिष्ठ पार्षद बॉबी चावला, भूषण सोना, इमरान सोलंकी, प्रीतेश साहू आदि शराब दुकान पहुंचे। वहां इनके पहुंचते ही शराब लेने वाले लोगो ने ओवररेट की जमकर शिकायत की। भाजपा नेताओं ने शिकायत को गंभीरता से लिया और अपने स्तर पर पड़ताल की, जिसमें ओवररेट की शिकायत प्रत्यक्ष में प्रमाणित पाए।

इसके तत्काल बाद भाजपा नेता श्री देवांगन ने दोनो शराब दुकान के सभी सुपरवाइजर और सेल्समेन पर बिफर पड़े और वहीं मौके पर ही भड़कते हुए सुपरवाइजर और सेल्समेन को जमकर फटकार लगाया। कहा कि प्रदेश की विष्णुदेव साय सरकार को बदनाम करने का दुष्प्रयास कर रहे हो इसका अंजाम बहुत बुरा होगा। मौके से ही आबकारी विभाग के डीइओ विकास गोस्वामी को मोबाइल पर इसकी शिकायत किया। उन्हें सुपरवाइजर और सेल्समैन की कारस्तानी की जानकारी देते हुए तत्काल सभी के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने की बात कही। इस पर क्षेत्रीय आबकारी अधिकारी ने आज ही मौके पर पहुंचकर आवश्यक कार्रवाई करने का आश्वासन दिया, वहीं सुपरवाइजर और सेल्समैन की नियुक्ति करने वाले ठेकेदार ने सभी को तत्काल नवापारा की दुकानों से हटाने का भरोसा दिया।

श्री देवांगन ने बताया कि देशी और विदेशी शराब दुकान के ये सभी सुपरवाइजर और सेल्समेन लंबे समय से मदिरा प्रेमियों को ओवररेट में शराब की बिक्री कर ओवररेट की कमाई को अपने जेब में भर रहे थे। संबंधित अधिकारियों की उदासीनता के चलते ओवररेट को लेकर मदिरा प्रेमियों में प्रदेश सरकार के प्रति नकारात्मक विचार उत्पन्न हो रहे थे लिहाजा हमें खुद शराब दुकान में पहुंचना पड़ा। यहां वस्तु स्थिति से अवगत हुए। श्री देवांगन ने आगे बताया कि प्रदेश की साय सरकार के सख्त निर्देश के बावजूद भी संबंधित अधिकारियों से आपसी सांठगांठ के चलते विभिन्न प्रकार के माफिया अभनपुर विधानसभा क्षेत्र में लगातार सक्रिय हैं, जिनके विरुद्ध उन्होंने लगातार मोर्चा खोला हुआ है। क्षेत्र के रेत, मुरूम और भू-माफियाओं के बाद अब शराब दुकानों में ओवररेट के विरुद्ध उन्होंने मोर्चा खोल दिया है । देवांगन ने दोहराया कि अभनपुर विधानसभा क्षेत्र में अपनी पार्टी के प्रदेश सरकार की प्रतिष्ठा बचाने वे प्रतिबद्ध हैं, यही वजह है कि अधिकारियों की लापरवाही, कर्तव्यहीनता और माफियाओं से आपसी सांठगांठ के चलते किसी भी प्रकार के माफिया को इस क्षेत्र में बर्दाश्त नही करेंगे। वे ऐसे सभी माफिया और भ्रष्ट अकर्मण्य अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए सीएम से मुलाकात कर सारे तथ्यो को सामने रखेंगे।

नगर पालिका के नेता प्रतिपक्ष प्रसन्न शर्मा ने कहा कि देशी और विदेशी शराब दुकान में लंबे समय से चल रहे इस ओवररेट के खेल में आबकारी अधिकारियों की मिलीभगत है। अगर अधिकारी ईमानदार होते तो नगर की इन दोनों शराब दुकानों में ओवररेट का खेल चल ही नहीं पाता।

हमने नीचे से लेकर ऊपर तक के सभी कर्मचारी,अधिकारी को इस शिकायत के बाद सर्जरी करते हुए हटा दिया है और मौका निरीक्षण के लिए राजधानी रायपुर से एडीओ श्री पैकरा,इंस्पेक्टर नीलम स्वर्णकार सहित स्टॉफ को नवापारा के लिए रवाना किया है। देर रात जानकारी मिली है कि अधिकारियो का यह टीम शिकायतकर्ताओं के बयान दर्ज कर रहे है।

संक्षिप्त समाचार

कृषि विवि के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवको ने चलाया स्वच्छता अभियान

रायपुर। राष्ट्रीय सेवा योजना , इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर के छात्र छात्राओ की टीम द्वारा सोमवार को धरमपुरा- माना एयरपोर्ट मार्ग मे पीडब्लूडी द्वारा बनाये गये छत्तीसगढ की संस्कृति पर आधारित मूर्तियो वाले स्थान को चिन्हित कर स्वच्छता अभियान चलाया, जिसमे सैकड़ो की संख्या मे छात्र छात्राओ ने श्रमदान कर सफाई किये ।ज्ञात हो कि कुछ दिन पूर्व एक दैनिक समाचार पत्र मे प्रकाशित खबर थी जिसमे पी डब्लू डी विभाग और नगर निगम को इस पर नजर अंदाज करने तथा उनका ध्यान आकर्षित करने विषयक खबर छापी थी , पर उनके द्वारा कोई कदम नही उठाया गया। इस पर कृषि विश्वविद्यालय के छात्र छात्राओ द्वारा त्वरित संज्ञान लेते हुए इस जोन को स्वच्छ बनाए रखने के लिए कार्य योजना बनाया और आज सैकड़ो की संख्या मे सफाई अभियान चलाया ।छात्रो की ओर से हेम प्रकाश वर्मा, विक्रम चन्द्रवंशी, निखिल तिवारी, गुंजन आदि सैकड़ो छात्रो के नेतृत्व मे यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अभियान के लिए विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम समन्वयक डा पी के सांगोडे के मार्गदर्शन मे कार्य किया। मौके पर कृषि महाविद्यालय रायपुर के एन एस एस कार्यक्रम अधिकारी डॉ संजय भारिया तथा डॉ जी एल शर्मा, ब्यूटीफिकेशन अधिकारी उपस्थित हुए।

टेकारी में 5 दिवसीय योग प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण शिविर शुरू

रायपुर। ग्राम टेकारी (कुंडा) में 5 दिवसीय योग प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सोमवार से शुरू हुआ। संचालनालय आयुष (छग) व जिला आयुर्वेद अधिकारी के मार्गदर्शन में शासकीय आयुर्वेद औषधालय टेकारी में पदस्थ डा. ललिता शर्मा द्वारा यह आयोजन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिसर में किया जा रहा है। आयुष्मान आरोग्य मंदिर टेकारी के योग प्रशिक्षक नीलू जोशी द्वारा योग प्रदर्शन व प्रशिक्षण कार्य किया जा रहा है शिविर का समय पूर्वाह्न 7 से 9 बजे है। शिविर का समापन आसन्न 21 जून को होगा।

महाराष्ट्र मंडल के केंद्रों ने किया राम रक्षा स्तोत्र व हनुमान चालीसा पाठ

रायपुर। महाराष्ट्र मंडल की आध्यत्मिक समिति की ओर से शुरू किए गए राम रक्षा स्तोत्र और हनुमान चालीसा पाठ का साप्ताहिक सिलसिला 24वें सप्ताह शनिवार की शाम को जारी रहा। मंडल के कई केंद्रों की महिलाओं ने समीस्थ मंदिर पहुंचकर श्रद्धालुओं के साथ राम रक्षा स्तोत्र और हनुमान चालीसा का कई बार पाठ किया। आध्यात्मिक समिति की प्रमुख आस्था काले ने बताया कि प्रत्येक शनिवार को होने वाले राम रक्षा स्तोत्र और हनुमान चालीसा के पाठ से मनुष्य भय रहित हो जाता है। बूढ़ापारा स्थित हनुमान मंदिर में राम रक्षा स्तोत्र और हनुमान चालीसा का पाठ करते समय अनेक श्रद्धालुओं की उपस्थिति में वातावरण भक्तिमय हो गया। इस दौरान सुनील गायकवाड़, शुभम अग्रवाल, भूपेन डागा, राजेश कदम, प्रणिता नलगुंडवार, अंजलि नलगुंडवार, ज्योति पवार, हेमा पराडकर सहित कई भक्तगण व महाराष्ट्र मंडल के आजीवन सभासद उपस्थित रहे। इधर सरोना केंद्र की महिला सभासदों ने सालासर ग्रीन्स स्थित हनुमान मंदिर में राम रक्षा स्तोत्र और हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ किया।

गायत्री जयंती पर पांच कुडीय यज्ञ और व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर का समापन

रायपुर। छत्तीसगढ़ की रायपुर के कांदुल गांव में 16 जून रविवार को गायत्री जयंति गंगा दशहरा के उपलक्ष्य पर पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसके साथ ही अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में जिला स्तरीय गायत्री परिवार के संयोजन में गायत्री प्रज्ञापीठ संतोषी नगर की तरफ से 12 जून से शुरू 5 दिवसीय व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर का समापन भी हुआ। इस मौके पर विधायक मोतीलाल साहू भी मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि समर्थ राष्ट का निर्माण व्यक्तित्व निर्माण से ही संभव होगा। रायपुर ग्रामीण के विधायक मोतीलाल साहू ने कहा कि शिविर के माध्यम से गायत्री परिवार द्वारा श्रेष्ठ समाज एवं सुनहरे राष्ट के निर्माण हेतु नई पीढ़ी के बच्चों को सुसंस्कृत, सभ्य व शालीन, चरित्रवान, उर्जावान, ज्ञानवान, बनाया जा रहा है, जो अभिनंनदीय एवं वंदनीय है। गायत्री परिवार के संस्थापक पं। श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा दिया गया नारा हम बदलेंगे-युग बदलेगा मूर्त रुप ले रहा है।

न्यू जलपाईगुड़ी में रेल हादसे पर सीएम साय ने जताया दुख

रायपुर। छत्तीसगढ़ के सीएम विष्णुदेव साय ने पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी में हुए रेल हादसे पर दुख जताया है। घटना में मृत लोगों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की है। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है। सीएम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी में हुए रेल हादसे की दुखद सूचना प्राप्त हुई है। घटना स्थल पर रेलवे, एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम तेजी से राहत और बचाव कार्य में जुटी हुई है। घटना में दिवंगत हुए लोगों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं एवं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। पश्चिम बंगाल में जलपाईगुड़ी के पास खड़ी कंचनजंगा एक्सप्रेस में पीछे से एक मालगाड़ी ने टक्कर मार दी। रंगापानी और निजबाड़ी के पास हुए हादसे में तीन बोगियां बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुईं। इस हादसे में 15 लोगों की मौत और 60 लोग घायल हुए हैं। रेल हादसे पर रेल मंत्री वैष्णव ने कहा कि हादसे के पीड़ितों को दी जाने वाले अनुग्रह राशि में बढ़ोत्तरी की गई है।

बलौदाबाजार कांड : भाजपा की जांच समिति पर कांग्रेस का तंज

कहा- यह सिर्फ ध्यानाकर्षण के लिए, भाजपा जांच समिति बलौदाबाजार में

रायपुर। सतनामी समाज के विरोध प्रदर्शन के दौरान कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक कार्यालय में आगजनी की घटना की जांच के लिए भाजपा ने पांच सदस्यीय समिति आज बलौदाबाजार में है। इस बीच कांग्रेस ने भाजपा की जांच समिति पर तंज कसते हुए कहा कि यह सिर्फ ध्यानाकर्षण के लिए है।

भाजपा की जांच समिति के बलौदाबाजार जाने पर कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि बलौदाबाजार की घटना पर संगठन द्वारा जांच दल का बनाकर भेजना हास्यास्पद है। भाजपा की सरकार है, सारी मशीनरी उनके पास है। सरकार में बैठे हुए लोग इतने सक्षम नहीं हैं कि निष्पक्ष जांच कर पाए, जो जांच दल बनाने की जरूरत पड़ी। यह सिर्फ ध्यानाकर्षण के किए ये किया जा रहा है।

सुशील आनंद शुक्ला ने इसके साथ प्रदेश में प्रत्यक्ष प्रणाली से नगरीय निकाय चुनाव कराने की साय सरकार की तैयारी पर कहा कि कांग्रेस चुनाव

के लिए पूरी तरह से तैयार है। भाजपा के ख़िलाफ़ वातावरण है, जिसकी वजह से कांग्रेस के पक्ष में नतीजे आएंगे। चुनाव किसी भी प्रणाली से हो, हम सब ढंग से चुनाव लड़ने के किए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि सरकार सीधे चुनाव करा रही इसका मतलब है कि भाजपा में डर है। धांधली कर महापौर बनाने की तैयारी की जा रही है।

वहीं उप मुख्यमंत्री अरुण साव के आज ट्रेन से बिलासपुर जाने पर सुशील आंनद शुक्ला ने कहा कि ट्रेन में सफर करके अरुण साव क्या संदेश देना चाहते हैं कि मोदी सरकार ट्रेन चलाने में विफल हो गई है। ये ट्रेन में आवाजाही का पीक समय होता है। बिना बताए ट्रेन रद्द किया जा रहा है, रूट चेंज कर दिया जा रहा है। अरुण साव नौटंकी ना करे। ट्रेन में जाकर आप क्या करेंगे। इस बीच भाजपा की पांच सदस्यीय जांच समिति आज बलौदाबाजार पहुंची। समिति के संयोजक मंत्री दयाल दास बघेल की अगुवाई में मंत्री टंकराम राम वर्मा, पूर्व विधायक नवीन मारकंडेय, शिवरतन शर्मा और रंजना साहू अमर गुफा व अग्निकांड स्थल का निरीक्षण करने के साथ अधिकारियों के साथ आम जनों से चर्चा करेंगे।

बलौदाबाजार में हुई हिंसक घटना कांग्रेस आज देगी धरना

विगत दिनों बलौदाबाजार में हुए हिंसक वारदात के कारण पूरे प्रदेश में आम जनमानस के बीच रोष व्याप्त है, इसका मुख्य कारण छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने सरकार की विफल प्रशासन और कानून व्यवस्था को बताया है। इस घटनाक्रम के कारण वर्तमान भाजपा सरकार के विरोध में छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा 1 दिवसीय राजीव गांधी चौक में सुबह 11 बजे से कांग्रेसजन धरना प्रदर्शन करेंगे। शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गिरीश दुबे ने प्रदेश एवं रायपुर शहर में निवासरत प्रदेश कॉग्रेस कमेटी के सदस्य, सम्मानीय वरिष्ठजन, सांसद, पूर्व सांसद, विधायक, पूर्व विधायक, पार्षद, पूर्व पार्षद,समस्त प्रदेश पदाधिकारी, शहर एवं ब्लॉक पदाधिकारी, वार्ड पदाधिकारी एवं सभी सम्मानित सदस्यगण ,महिला कांग्रेस के पदाधिकारी एवं सदस्यगण,युवा कांग्रेस, एनएसयूआई, सेवादल, किसान काग्रेस, असंगठित क्षेत्र जनसमस्या निवारण प्रकोष्ठ, अल्पसंख्यक विभाग, अनुसूचित जाति जनजाति विभाग, पिछड़ा वर्ग विभाग, झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ, बुथ अध्यक्ष, सेक्टर अध्यक्ष, जोन अध्यक्ष एवं सभी मोर्चा प्रकोष्ठों के सम्मानीयजन एवं समस्त कांग्रेसजनों से इस धरना प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की है।

बलौदाबाजार शहर में धारा 144 को 20 जून तक बढ़ाया गया

रायपुर। नगर पालिका बलौदाबाजार सीमा क्षेत्र में शांति-व्यवस्था बनाए रखने हेतु कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी द्वारा 10 जून से लागू धारा 144 को 20 जून की मध्य रात्रि तक के लिए बढ़ा दिया गया है। संयुक्त जिला कार्यालय परिसर में 10 जून 2024 को हुई घटना के परिप्रेक्ष्य में नगर पालिका बलौदाबाजार सीमा क्षेत्र में दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 के तहत धारा 144, 10 जून की रात्रि 9 बजे से 16 जून की मध्य रात्रि 12 बजे तक लागू किया गया था। नगर पालिका बलौदाबाजार सीमा क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाये रखने हेतु कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्री दीपक सोनी द्वारा दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 के अंतर्गत धारा 144 (1) एवं (2) के तहत प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए धारा 144 की अवधि बढ़ाने का आदेश जारी किया गया है, जिसके तहत नगर पालिका बलौदाबाजार सीमा क्षेत्र में आगामी आदेश तक रैली या जुलूस पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। अन्य जिले अथवा बाहरी व्यक्तियों का 5 या उससे अधिक व्यक्तियों के समूह का नगर पालिका बलौदाबाजार सीमा क्षेत्र में प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। कोई भी व्यक्ति न तो किसी प्रकार का शस्त्र तलवार, फरसा, भाला, लाठी, चाकू, छुरा, कुल्हाड़ी, गुप्ती, त्रिशुल, खुकरी, सांग एवं बल्लम अथवा अन्य अस्त्र-शस्त्र लेकर सार्वजनिक स्थान पर नहीं निकलेगा। अपवाद स्वरूप जो व्यक्ति शासकीय कर्तव्य पर हैं, वे ड्यूटी के दौरान अस्त्र-शस्त्र धारण कर सकेंगे। ऐसे वृद्ध एवं दिव्यांग जो लाठी के बिना चलने में असमर्थ हैं, वे लाठी का प्रयोग कर सकेंगे।

19 को होगा आदिवासी क्षेत्रों में सिकलसेल जागरूकता शिविरों का आयोजन

रायपुर,। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर विश्व सिकल सेल के दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ के सिलकलसेल रोग से पीड़ित राज्य के आदिवासी समुदाय के लोगों के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों, उप स्वास्थ्य केन्द्रों, ग्राम पंचायतों तथा एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों, विभागीय छात्रावास, आश्रमों तथा अन्य विद्यालयों में सिकल सेल स्क्रीनिंग एवं जागरूकता शिविरों के आयोजन की भी तैयारियां की जा रही है। भारत सरकार की ओर से अधिकारीगण 19 जून को विश्व सिकलसेल दिवस पर देश के विभिन्न राज्यों में सिलकलसेल के प्रति जागरूकता और इस रोग से पीड़ित मरीजों से वर्चुअल चर्चा करेंगे। आदिम जाति विकास विभाग के आयुक्त ने बताया कि भारत सरकार की ओर से विश्व सिकलसेल दिवस 19 जून को देश के विभिन्न राज्यों में सिलकलसेल के प्रति जागरूकता और इस रोग से पीड़ित मरीजों से वर्चुअल चर्चा करेंगे। छत्तीसगढ़ राज्य के आदिवासी समुदाय के लोग सिकलसेल एनीमिया से ज्यादातर पीड़ित हैं। इन पीड़ित मरीजों के लिए आदिवासी क्षेत्रों बस्तर,

बलरामपुर-रामानुजगंज एवं रायपुर में टू-वे-कनेक्टिविटी की व्यवस्था करने तथा शेष जिलों में वन-वे-नेटवर्क कनेक्टिविटी से वर्चुअल रूप से 19 जून को ही जुड़े रहने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अलावा सभी कलेक्टरों, सहायक आयुक्तों एवं परियोजना प्रशासकों को पत्र जारी कर आवश्यक तैयारी करने के निर्देश दिए हैं। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने प्रदेश में सिकलसेल के लिए राष्ट्रीय स्तर का रिसर्च सेंटर प्रारंभ करने के लिए केन्द्र सरकार को प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिए है। पोस्टर, बैनर एवं वीडियों आदि के माध्यम से इसके लिए व्यापक प्रचार-प्रसार किए जाने के निर्देश अधिकारियों को दिए गए है। इन शिविरों में स्थानीय जनप्रतिनिधि को उपस्थित होने आग्रह किया जाएगा। क्या है सिकलसेल रोग-सिकलसेल एक आनुवांशिक रोग है। इसमें गोलाकार लाल रक्त कण (हीमोग्लोबिन) हंसिये के रूप में परिवर्तित होकर नुकीले और कड़े हो जाते हैं जिसके कारण शरीर की सभी कोशिकाओं तक पर्याप्त मात्रा मे ऑक्सीजन पंहुचने का काम बाधित होता है। ये रक्त कण शरीर की छोटी रक्त वाहिनी (शिराओं) में फसकर लिवर, तिल्ली, किडनी, मस्तिष्क आदि अंगों के रक्त प्रवाह को बाधित कर देते हैं। इसलिए समय पर इसका ईलाज बहुत जरूरी है। ज्ञात हो कि राज्य के 33 जिलों के लक्षित 1 करोड़ 77 लाख 69 हजार 535 सिकल सेल स्क्रीनिंग के विरूद्ध कुल 1 करोड़ 11 लाख 06 हजार 561 स्क्रीनिंग की गई है। इसमें 1 करोड़ 06 लाख 24 हजार 245 स्क्रीनिंग निगेटिव पाई गई है। स्क्रीनिंग में 2 लाख 90 हजार 663 वाहक पाये गये हैं तथा 22 हजार 672 बीमारी प्राप्त हुई। इस प्रकार राज्य में स्क्रीनिंग का कुल प्रतिशत 63 है। राज्य में 1 लाख 68 हजार 981 स्क्रीनिंग कन्फर्मेशन की प्रक्रिया में है। राज्य में 75 लाख 79 हजार 257 सिकल सेल जेनेटिक कार्ड वितरित किये गये हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय 21 जून को राजधानी में करेंगे योगाभ्यास

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सभी जिला मुख्यालयों में आयोजित होंगे विशेष कार्यक्रम

- **जिला मुख्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों के मुख्य अतिथियों की सूची जारी**

रायपुर । अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2024 के अवसर पर राजधानी रायपुर में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय योगाभ्यास करेंगे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कैबिनेट मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े करेंगी। उपमुख्यमंत्री श्री अरूण साव कोरबा तथा उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा दुर्ग जिले में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में नामांकित किए गए हैं। बिलासपुर में केन्द्रीय संघ राज्य मंत्री श्री तोखन साहू, कांकेर में मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल, कोरिया में मंत्री श्री रामविचार नेताम, महासमुद में मंत्री श्री दयालदास बघेल, नारायणपुर में मंत्री श्री केदार कश्यप, कबीरधाम में मंत्री श्री लखनलाल देवांगन, बलौदाबाजार में मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल, जांजगीर-चांपा में मंत्री श्री ओ.पी.चौधरी, धमतरी में मंत्री श्री टंकराम वर्मा, राजनांदगांव में सांसद श्री संतोष पाण्डेय, सरगुजा में सांसद श्री चिन्तामणी महाराज, जशपुर में सांसद श्री राधेश्याम राठिया, सुकमा में सांसद श्री महेश कश्यप, गरियाबंद में सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी, बेमेतरा में सांसद श्री विजय बघेल, बालोद में सांसद श्री भोजराज नाग, सक्ती में सांसद श्रीमती कमलेश

जांगड़े, रायगढ़ में सांसद श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह, बस्तर में विधायक श्री किरण देव, दंतेवाड़ा में विधायक श्री चैतराम अटामी, बीजापुर में विधायक श्री नीलकंठ टेकाम, कोण्डागांव में विधायक सुश्री लता उसेण्डी, मुंगेली में विधायक श्री पुन्नुलाल मोहले, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में विधायक श्रीमती रेणुका सिंह, सूरजपुर में विधायक श्री भूलन सिंह मराबी, बलरामपुर में विधायक श्रीमती उद्देश्वरी पैकरा, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही में विधायक श्री प्रणव कुमार मरपची, मोहला-मानपुर-अम्बागढ़ चौकी में विधायक श्री विक्रम उसेण्डी, सारंगढ़-बिलाईगढ़ में विधायक श्री संपत अग्रवाल, खैरागढ़-छुईखदान में विधायक श्रीमती भावना बोहरा मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहेंगी।

प्रदेश सरकार ने भीषण गर्मी के कारण विद्यालयों में गर्मी की छुट्टियां 25 तक बढ़ाई

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार ने भीषण गर्मी के मद्देनजर राज्य में विद्यालयों की गर्मी की छुट्टियां 25 जून तक बढ़ा दीं। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। इस संबंध में राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग ने रविवार देर शाम आदेश जारी किया। आदेश के मुताबिक, राज्य सरकार ने 22 अप्रैल से 15 जून तक सभी विद्यालयों में गर्मी की छुट्टियां घोषित की हैं। वर्तमान में राज्य में भीषण गर्मी के कारण विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने गर्मी की छुट्टियां 25 जून तक बढ़ा दी है।

आदेश के अनुसार स्कूल 26 जून से खुलेंगे। रायपुर स्थित मौसम विज्ञान केंद्र ने रविवार को अनुमान जताया है कि अगले चार दिनों तक राज्य के कुछ स्थानों पर गरज के साथ बारिश हो सकती है और तेज हवाएं चल सकती हैं। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले चार-पांच दिनों के दौरान राज्य के कुछ और हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियां अनुकूल हैं।

रविवार को रायपुर (लालपुर स्टेशन) में अधिकतम तापमान 39.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि बिलासपुर में अधिकतम तापमान 30.8 डिग्री सेल्सियस, राजनांदगांव में 39 डिग्री सेल्सियस, पेंड्रा में 40.2 डिग्री सेल्सियस, अंबिकापुर में 32.6 डिग्री सेल्सियस और जगदलपुर में 35.2 डिग्री सेल्सियस रहा।

पीपीटी प्रवेश परीक्षा 23 जून को

रायपुर। छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल द्वारा पॉलिटेक्निक कॉलेजों में प्रवेश हेतु पी.पी.टी. परीक्षा का आयोजन राज्य के 32 जिला मुख्यालयों में 23 जून 2024 को सवेरे 9ः00 से 12ः15 बजे तक किया जावेगा। अभ्यर्थी अपनी प्रोफाइल में जाकर प्रवेश पत्र दिनांक 17 जून 2024 से डाउनलोड कर सकते है। इसके अलावा अभ्यर्थी प्रवेश पत्र व्यापम की वेबसाइट (vyapam.cgstate.gov.in) एवं (https://vyapamaar.cgstate.gov.in/) एवं चिप्स की वेबसाइट http://cgstate.gov.in पर उपलब्ध लिकों में से किसी भी एक लिंक पर क्लिक करके अपने प्रोफाइल लॉगिन पेज पर जा सकते हैं एवं वहां से प्रवेश पत्र डाउनलोड कर सकते हैं। अभ्यर्थियों को उनके पंजीकृत मोबाइल नंबर पर स्रूस् के माध्यम से एक संक्षिप्त यूआरएल भी भेजा जावेगा। अभ्यर्थी इस यूआरएल को क्लिक कर अपने मोबाइल पर सीधे प्रवेश पत्र प्राप्त कर उसका प्रिंट आउट ले सकते हैं।

छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार परीक्षा दिवस को प्रत्येक परीक्षार्थी लगभग एक घंटे पूर्व अपने परीक्षा केन्द्र में उपस्थित रहें, जिससे उनके मूल पहचान पत्र से उनका पहचान किया जा सके एवं परीक्षा केंद्र में जाने हेतु अनुमति दी जा सके। किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा केन्द्र के सम्बंध में कठिनाई होती है तो हेल्पलाइन नंबर +91-0771-2972780 एवं मोबाइल नंबर +91-8269801982 पर संपर्क कर सकते हैं। अभ्यर्थी संपूर्ण प्रवेश पत्र डाउनलोड करें और उसका प्रिंट आउट अवश्य निकालें। यदि इंटरनेट से प्राप्त प्रवेश पत्र पर फोटो नहीं आता है तो अभ्यर्थी अपने साथ दो रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो लेकर परीक्षा केंद्र में जावें। परीक्षार्थियों को डाकघर के माध्यम से प्रवेश पत्र नहीं भेजा जावेगा।

क्रिकेटरों के लिए बड़े प्लेटफॉर्म्स में खेलने का मौका खोलेगा सीसीपीएल: साव

रायपुर। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव रविवार की शाम नवा रायपुर के शहीद वीरनारायण सिंह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में छत्तीसगढ़ क्रिकेट प्रीमियर लीग (सीसीपीएल) का फाइनल मुकाबला देखने पहुंचे। छत्तीसगढ़ में पहली बार आयोजित इस लीग का फाइनल मैच रायपुर रायनोस और बिलासपुर बुल्स के बीच खेला गया, जिसमें रायपुर रायनोस की टीम चैंपियन बनी। उप मुख्यमंत्री श्री साव के स्टेडियम पहुंचने पर दर्शकों ने तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। श्री साव ने हाथ हिलाकर वहां मौजूद दर्शकों का अभिवादन किया।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने सीसीपीएल के फाइनल मुकाबले में कहा कि यह आयोजन किसी भी मायने में आईपीएल से कम नहीं है। इसमें खिलाडियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अच्छा मौका मिल रहा है। इससे निश्चित ही छत्तीसगढ़ से नई प्रतिभाएं सामने आएंगी। श्री साव ने कहा कि फाइनल मुकाबला देखने के लिए 20 हजार से ज्यादा दर्शक पहुंचे हुए हैं। यह लीग और राज्य के खिलाडियों के प्रति उनके अपार प्रेम को दर्शाता है।

श्री साव ने कहा कि छत्तीसगढ़ के खिलाड़ी श्री शशांक सिंह ने हाल ही में समाप्त हुए आईपीएल में अपने खेल से खूब धूम मचाई थी। उन्होंने उम्मीद जताई कि सीसीपीएल छत्तीसगढ़ के खिलाडियों के लिए आईपीएल जैसे बड़े प्लेटफॉर्म्स में खेलने का रास्ता खोलेगा। इससे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का नाम रोशन होगा। सीसीपीएल के निर्देशक श्री बलदेव सिंह भाटिया और श्री विजय शाह, गर्वनिंग काउंसिल के चैयरमैन श्री प्रमोद शंकर शर्मा, छत्तीसगढ़ राज्य क्रिकेट संघ के अध्यक्ष श्री जुबिन शाह और सचिव श्री मुकुल तिवारी भी इस दौरान मौजूद थे।

ऊहापोह में फंसे अग्रवाल को शिव डहरिया ने दिया बड़ा ऑफर, कहा-

बृजमोहन कांग्रेस में आ जाएं, जो चाहेंगे वो मिलेगा

रायपुर। रिकार्ड मत से रायपुर लोकसभा क्षेत्र से जीत हासिल करने के बाद भी विधायकी छोड़ने पर बृजमोहन अग्रवाल के ऊहापोह का कांग्रेस भी मजा लेने लगी है। पूर्व मंत्री शिव डहरिया ने मंत्री बृजमोहन अग्रवाल की असमंजसता को देखते हुए बड़ा ऑफर दिया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस में आ जाएं, जो चाहेंगे वो मिलेगा।

कांग्रेस नेता डॉ। शिव डहरिया ने कहा कि भाजपा में सिर फुटौव्वल चल रहा है। बृजमोहन अग्रवाल इस्तीफे के बाद भी छह महीने मंत्री रहने की बात कह रहे हैं। ये तो आने वाले समय में पता चलेगा की वो कांग्रेस में रहेंगे या

बीजेपी में। लेकिन हम उनको ऑफर देते हैं वो कांग्रेस में आ जाएं, जो चाहे वो मिलेगा। क्या विधायकों को भी साथ लेकर आएंगे, इस पर शिव डहरिया ने कहा कि अब देखते हैं वो किनको लेकर आते हैं। आ तो जाएं बस, हमारे यहां सब मिलेगा।

पूर्व नगरीय प्रशासन मंत्री शिव डहरिया ने प्रदेश में महापौर और अध्यक्ष चुनाव प्रत्यक्ष रूप से करने की संभावना पर कहा कि राज्य सरकार की अपनी प्राथमिकताएँ तय रहती है, लेकिन सरकार को जनता के हित में निर्णय लेना चाहिए। बिना सोचे-समझे कुछ नहीं करना चाहिए। अप्रत्यक्ष चुनाव प्रजातंत्र सबूत था।

वहीं बलौदाबाजार कांड की जांच के लिए भाजपा के जांच दल पर डहरिया ने सवाल उठाया कि बीजेपी को क्या अपनी सरकार की जांच पर भरोसा नहीं? बीजेपी अनुसूचित जाति के खिलाफ है। यदि अनुसूचित जाति के साथ हैं, तो राज्यपाल के पास जो आरक्षण संशोधन विधेयक है उसे पास कराए।

विस अध्यक्ष को अपना इस्तीफा सौंप सकते हैं बृजमोहन

विधायक मंत्री से सांसद बने बृजमोहन अग्रवाल ने सोमवार को विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह से मुलाकात करने शाम को 4 बजे का समय लिया है। संभावना जताई जा रही है कि डॉ. रमन सिंह मॉलश्री स्थित निवास कार्यालय में मुलाकात के बाद वे अपना विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे सकते हैं।

भाजपा की कोर कमेटी बैठक में होंगे शामिल होने तोखन साहू के साथ अरुण साव रवाना

रायपुर। नवनियुक्त केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू और उप मुख्यमंत्री अरुण साव और सोमवार को ट्रेन से बिलासपुर के लिए रवाना हुए। अरुण साव ने बताया, कि तोखन साहू का बिलासपुर में प्रवास है और वे वहां उनके स्वागत कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके साथ ही जिला कोर कमिटी की बैठक में भी वे शामिल होंगे।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने मीडिया से निकाय चुनाव पर बात करते हुए कहा कि सरकार ने प्रारंभिक तैयारियां पूरी कर ली हैं। वर्तमान में लोगों से रायशुमारी की जा रही है और सरकार जल्द ही निर्णय लेगी। परिसीमन का निर्देश भी जारी कर दिया गया है। कांग्रेस द्वारा निगम मंडल में नियुक्तियों पर किए गए तंज पर डिप्टी सीएम साव ने पलटवार किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को अपनी पार्टी की चिंता नहीं है और वे सरकार के कार्यों और निर्णयों पर बोल रहे हैं। कांग्रेस अपने घर को संभाल नहीं पाई है और दुरदशा हो रही है। डिप्टी सीएम साव ने कांग्रेस की हार के बाद समीक्षा नहीं करने पर कहा कि कांग्रेस की वर्तमान स्थिति सभी के सामने है। पांच साल तक वे केवल प्रश्न पूछते रहे और अब भी प्रश्न करने की आदत नहीं बदली। जबकि सरकार समय पर सभी निर्णय ले रही है। बलौदा बाजार घटना में कांग्रेस के प्रदर्शन को लेकर उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि कांग्रेस ने षड्यंत्र किया है और उनकी मंशा स्पष्ट है। कांग्रेस ऐसी घटनाओं पर भी राजनीति कर रही है।

लोकसभा का जनादेश रखता है मायने अनेक

संजय सक्सेना

लोकसभा चुनाव का शोर थम गया है। अब नतीजों की समीक्षा का दौर है। सभी दलों के नेता अपनी-अपनी खामियां और खूबियों का आकलन कर रहे हैं। मगर आम आदमी के नज़रिये से देखा जाए तो यह चुनाव कई मायनों में निचले से निचले स्तर पर जाता दिखा। तमाम दलों के नेता उनके समर्थक बार-बार अपनी जुबान से जहर उगलते रहे। जाति, धर्म, राम मंदिर, आरक्षण, मुस्लिम आरक्षण, संविधान, महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, ईवीएम, किसान से लेकर वो जिहाद, मंगलसूत्र, मुजरा, कानून व्यवस्था, बाहुबली, मिट्टी में मिल गये माफिया, मोदी सरकार की कल्याणकारी योजनाएं सब छाये रहे। एनडीए सरकार की सभी योजनाओं में से प्रति व्यक्ति 5 किलो मुफ्त अनाज सबसे प्रभावी और दूरगामी प्रतीत हुआ। जाति या समुदाय से इतर दूरदराज के इलाकों में जितने भी लोगों से बात हुई, उनमें से अधिकांश ने माना कि उन्हें मुफ्त अनाज मिला है। जरूरतमंदों ने इसके लिए सरकार की खूब सराहना की। इसी प्रकार प्रधानमंत्री आवास, आयुष्मान स्वास्थ्य योजना का फायदा उठाने वाला एक बड़ा वर्ग बीजेपी की हौसला अफजाई करता रहा। गुलाम कश्मीर, पाकिस्तान और चीन की भी खूब बात हुई। जीवन और आजीविका के रोजमर्रा के संघर्ष-रोटी-कपड़ा और रोजगार पूर्वी और पश्चिमी यूपी में हर किसी चुनावी चर्चा का अभिन्न अंग तो रहे, लेकिन चुनावी चर्चा में जाति और समुदाय की केंद्रीयता ज्यादा बनी रही। मोटे तौर पर भाजपा के सामाजिक गठबंधन (उच्च जातियां, पटेल, निषाद और अन्य जैसे गैर-यादव ओबीसी) और समाजवादी पार्टी (यादव-मुस्लिम) बरकरार हैं। वहीं बसपा अपने दलित कोर वोटरों पर ध्यान केंद्रित करें रही। कई नेताओं ने इधर से उधर पल भी बदला। पूरे देश की तरह उत्तर प्रदेश में पूरी चुनावी बहसों के केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही नज़र आए। यहाँ तक कि कई जगह तो भाजपा उम्मीदवार के नाम तक की चर्चा भी नहीं देखने को मिली। ऐसा लग रहा था जैसे नेताओं के सामने पार्टी गौण हो गई थी।यह नजरा बीजेपी,कांग्रेस ही नहीं सभी दलों में देखने को मिला।वहीं कुछ अहम मुद्दे छूट भी गए। खासकर पर्यावरण प्रेमी इस बात से नाराज दिखे कि पर्यावरण, जल, जंगल,जमीन की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। लोकतंत्र की बुनियाद चुनाव हैं और चुनाव में नेता और वोटर एक-दूसरे को संवाद व अन्य माध्यमों से परखते हैं, लेकिन अब संवाद का सिलसिला काफी बदल गया है। बड़े नेताओं की जनसभाओं के दौरान सब कुछ मोबाइल से हो रहा है। सोशल मीडिया पर अलग से लड़ाई जारी थी। एक समय था जब लाउडस्पीकर लगी जीप गांवों में पहुंचती थी, तो बच्चे उसके पीछे भागने लगते थे। इस जीप से बिल्ला लुटाए जाते थे। इन पर प्रत्याशियों की फोटो और चुनाव चिन्ह छपा होता था। बिल्ले को लूटने और इकट्ठा करने का उस वक्त बच्चों से लेकर युवाओं तक में अलग ही क्रेज था। इसी से हमको पता चलता था कि चुनाव आ गया है। यादों के फ्लैशबैक से यह कहना है बरौला निवासी चौधरी बीसी प्रधान का। वह बताते हैं कि अब सोशल मीडिया पर प्रत्याशियों की रील दिखती हैं और वाट्सऐप मेसेज से पता चल रहा है। वक्त के साथ प्रचार सामग्री में यह बड़ा बदलाव आया है। पहले की तरह कपड़े के बैनर और झंडे भी अब नजर नहीं आते हैं। यही नहीं इस चुनाव में दीवारों पर चिपकाए जाने वाले कागज के पोस्टर भी नजर नहीं आ रहे हैं। इस बदलाव को 35-40 साल की उम्र वाला तबका महसूस कर रहा है। अतीत पर नजर डाली जाये तो पहले राष्ट्रीय दलों के प्रचार के तरीकों और सामग्री की पहुंच आसान थी। चुनावी नारों और लाउडस्पीकर पर बजने वाली रेकार्डेड कैसेट में हर दल के गाने भी अलग रहते थे। इन गानों के बजने से ही घरों में बैठे लोग यह जान जाते थे कि कौन से दल का प्रचार वाहन आया है। अब चुनाव आयोग की बंदिशों के साथ शहरीकरण से छाए शोर में लाउडस्पीकर उपयोगी नहीं बचा है। यही नहीं चुनावी सभाओं में भी अब लाउडस्पीकर की जगह साउंड ही नजर आते हैं।

चुनाव परिणाम और राहुल गांधी

अजय बोकिल

इसमें दो राय नहीं कि दो भारत जोड़ो यात्राओं, चुनाव में जमीनी मुद्दे उठाने, प्रधानमंत्री मोदी को अहंकारी बताने (जो अब संघ भी कह रहा है), जनता की जगह अपना एजेंडा चलाने जैसी बातों से राहुल की भाजपा विरोधियों में यह छवि तो बनी है कि वो निडरता से अपनी बात कहते हैं, भले ही कुछ लोगों को अभी भी उसमें अपरिपक्वता नजर आती हो। चुनाव में हारी या तगड़ा झटका खाई किसी भी राजनीतिक पार्टी में उत्तर चुनाव घमासान कोई नई बात नहीं है। भाजपा के बजाए एनडीए के सहारे तीसरी बात सत्ता में लौटने वाली भाजपा में यही हो रहा है। हार के लिए ठीकरे तलाशे जा रहे हैं तो दूसरी तरफ विपक्षी एनडीए के चुनाव प्रचार में मुख्य चेहरा रहे कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भावी राजनीतिक संभावनाओं के सकारात्मक संकेत मिल रहे हैं। इसके पक्ष में कई राजनीतिक विश्लेषक एक दशक बाद 2024 के लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन के साथ कांग्रेस का 99 सीटें जीतकर मजबूत विपक्ष के रूप में उभरना और चुनाव बाद सीएसडीएस- लोकनीति द्वारा कराए पोस्ट पोल सर्वे में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राहुल गांधी की लोकप्रियता में अंतर का लगातार घटना है।

दरअसल, इसका सीधा अर्थ यही है कि तमाम विरोधाभासों और आलोचनाओं के बाद भी राहुल गांधी की स्वीकार्यता देश में बढ़ रही है। अगर यही ट्रेंड आगे भी रहा तो 2029 के लोकसभा चुनाव में राहुल देश के अगले प्रधानमंत्री होने के मजबूत दावेदार के रूप में देखे जा सकते हैं। हालांकि इसमें कई किन्तु-परंतु भी हैं।

पहला तो यह है कि राहुल गांधी को अपनी दुविधाग्रस्त नेता की छवि से पूरी तरह उबरना होगा, दूसरे उन्हें गंभीरता से साथ बड़ी जिम्मेदारी लेनी होगी, जो उनकी नेतृत्व क्षमता की लोक परीक्षा होगी। तीसरे, उन्हें अब पूर्णकालिक राजनेता के रूप में खुद को पेश करना होगा। प्रधानमंत्री मोदी पर खुलकर हमले करने का साहस दिखाने के बाद भी यह गारंटी से नहीं कहा जा सकता कि जब देश के सत्ता संचालन की धुरी बनने की बात आएगी, तब राहुल पूरी संजीदगी से वैसा करना पसंद करेंगे? या फिर किसी डमी को कुर्सी पर बिठा देंगे? अगर ऐसा हुआ तो तय मानिए कि राहुल के नेतृत्व में कांग्रेसनीत गठबंधन का दिल्ली के तख्त पर काबिज होने का सपना केवल कागजी महत्वाकांक्षा बनकर ही रह जाएगा। अभी कांग्रेस को जो कामयाबी मिली है, उसे सकारात्मक ऊर्जा और दिशा नहीं मिली तो वह आगामी चुनावों में बुलबुले के रूप में फूट भी सकती है।

इसमें दो राय नहीं कि दो भारत जोड़ो यात्राओं, चुनाव में जमीनी मुद्दे उठाने, प्रधानमंत्री मोदी को अहंकारी बताने (जो अब संघ भी कह रहा है), जनता की जगह अपना एजेंडा चलाने जैसी बातों से राहुल की भाजपा विरोधियों में यह छवि तो बनी है कि वो निडरता से अपनी बात कहते हैं, भले ही कुछ लोगों को अभी भी उसमें अपरिपक्वता नजर आती हो। खासकर इस लोकसभा चुनाव में जिस ढंग से उन्होंने देश में संविधान बचाने तथा आरक्षण खत्म न होने देने की अलख जगाई, उसने भाजपा के ओबीसी और दलित वोटों में तगड़ी सेंध लगा दी। खासकर यूपी, महाराष्ट्र व बिहार में इसका सर्वाधिक असर दिखाई दिया। इस मामले में यह चुनाव आशंका को यकीन में बदलने के अभियान का एक अच्छा उदाहरण है। दूसरे, भाजपा को मुगालते में जीना सबसे भारी पड़ा। पार्टी अपने तय ही किए '400 पार के' नारे के गड्ढे मेंगिर गई।

यदि मोदी ने चुनाव में सीटों की जीत का कोई निश्चित आंकड़ा फिक्स किए बगैर सिर्फ इतना ही कहा होता कि हम पिछली बार की तुलना में ज्यादा सीटें जीतेंगे तो शायद भाजपा को 32 सीटों का नुकसान न हुआ होता। लेकिन सत्ता और वो भी निरंतर सत्ता नेताओं को इतनी आत्ममुग्ध बना देती है कि वो खुद जमीन से कटने लगते हैं। बतौर पीएम मोदीजी की यह तीसरी पारी है। 2029 आते-आते वो 79 साल के होंगे। तब उनकी मुश्किलें और बढ़ेंगी। युवा पीढ़ी से उनका कनेक्ट आज की तुलना में धीरे-धीरे कम होता जाएगा। इसके विपरीत राहुल गांधी अभी युवा हैं।

अगले लोकसभा चुनाव तक भी वो साठ के अंदर ही होंगे। बीते एक साल में कांग्रेस के रणनीतिकारों ने राहुल गांधी का कई स्तरों पर मेकओवर करने की कोशिश की है और उसमें उन्हें काफी हद तक सफलता भी मिली है। कांग्रेस का राहुल में और राहुल का अपने आप में विश्वास बढ़ा है। लेकिन असली चुनौती इसके आगे है। पहली चुनौती तो पूरी कांग्रेस का मेकओवर करने की है। बेशक यूपी, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, तमिलनाडु आदि राज्यों में कांग्रेस ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया है। लेकिन यहां कंधे उसके सहयोगी दलों के ज्यादा मजबूत रहे हैं। जहां कांग्रेस का सीधे भाजपा से मुकाबला रहा है, उन राज्यों में कांग्रेस (राजस्थान छोड़ दें) तो ज्यादा कामयाबी हासिल नहीं कर पाई है।

इन राज्यों में कांग्रेस भाजपा से मजबूती के साथ दो- दो हाथ कर सके, इसके लिए संगठनात्मक स्तर पर उसे मजबूत और निरंतर सक्रिय करने की नितांत आवश्यकता है। इसके लिए काबिल कार्यकर्ताओं की पहचान और उन्हें काम करने देने की स्वतंत्रता देनी होगी। आत्मघाती गुटबाजी कांग्रेस का महारोग है। इस पर लगाम कैसे लगे, यह भी बड़ा सवाल है। इस चुनाव में कांग्रेस और कुछ अन्य क्षेत्रीय दलों के परिवारवादी होने के आरोप को जनता ने लगभग खारिज कर दिया है। नतीजों और बाद में मंत्रिमंडल गठन में शामिल नामों से उजागर हुआ कि भाजपा में भी यह रोग उसी शिद्दत से मौजूद है और पनप भी रहा है, भले ही उसे नाम दूसरा दिया जा रहा हो। वह खुद को परिवारवाद का विरोधी बताती है और परिवारवादियों से गलबहियां भी करती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि परिवारवाद भारतीय राजनीति का राजरोग है, जिसका स्वरूप बदलता रहेगा, पर रोग कायम रहेगा। ऐसे में जनता अब परिवारवाद की बजाए परफार्मेंस को ज्यादा तवज्जो दे रही है।

अगर राहुल गांधी को भविष्य में देश के नेता के रूप में स्वीकार किया जाना है तो सबसे पहले उन्हें अपनी दुविधाग्रस्त होने की छवि से भी मुक्त होना होगा। कांग्रेस कार्यकारिणी ने राहुल से लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष बनने का अनुरोध किया है, जिस पर राहुल ने अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है। इसी तरह जिन दो लोकसभा सीटों से वो इस बार चुनाव जीते हैं, उनमे से कौन सी सीट रखें और कौन सी छोड़ें, इस पर उन्होंने कुछ बेमन से ही, सही निर्णय ले लिया है। दृढ़ निश्चय पर भावुकता को हावी न होने देने का हुनर उन्हें सीखना होगा।

भावुकता से संवेदनशील छवि तो बनती है, लेकिन राजनेता को संवेदनशीलता के साथ साथ कुशल और सक्षम प्रशासक के रूप में खुद को सिद्ध करना होता है। इसका अर्थ यह है कि जो भी निर्णय आप लेते हैं, उन्हे क्रियान्वित कराने और नतीजे देने का माद्दा भी आप में होना चाहिए। अगर मिल भी जाए तो वह कुछ समय के लिए ही होता है। क्योंकि सत्ता संचालन केवल एक नौकरशाहाना कर्मकांड नहीं है, उसके लिए राजनीतिक दांवपेंच रणनीतिक अखाड़ेबाजी के हुनर में निष्णात होना भी जरूरी है। इस लिहाज से यूपीए के दौरान कांग्रेस द्वारा किसी राजनेता के बजाए अर्थशास्त्री और नौकरशाह डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाना सही राजनीतिक फैसला नहीं था। मनमोहन सिंह ने बतौर पीएम अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाई, लेकिन कांग्रेस को सक्रिय और ताकतवर बनाए रखने के लिए जिस राजनीतिक सेनापति की जरूरत थी, उसमे वह पूरी तरह असफल रहे। इस लोकसभा चुनाव का एक संदेश यह भी है कि देश में अब दो ऐसी राजनीतिक पार्टियां आमने सामने होंगी, जिनकी मौजूदगी पूरे देश में है। अभी तक यह दर्जा (कमजोर होने के बाद भी) कांग्रेस के पास ही था, अब इस श्रेणी में भाजपा भी शामिल हो गई है। यानी अब देश की राजनीति धुर राष्ट्रवादी और मध्यमार्गी विचारधारा के बीच चलेगी।

भाजपा और कांग्रेस दोनो पार्टियां कभी क्षेत्रीय दलों के साथ सहयोग तो कभी उन्हें कुचलकर अपना वजूद कायम रखेंगी। इन्हीं दो प्रमुख दलों की अगुवाई में चलने वाले राजनीतिक गठबंधनों के बीच ही चुनावी मुकाबले होंगे। ऐसे में सहयोगी दल कभी अंकुश तो कभी स्टेपनी की भूमिका अदा करते रहेंगे। कुछ लोगों का मानना है कि राहुल गांधी अब तक जिस तरीके और रणनीति के साथ काम करते रहे हैं, वो पूर्णकालिक राजनेता के बजाए पोलिटिकल एक्टिविज्म ज्यादा है। राहुल गांधी अगर सचमुच एक गंभीर राजनेता के रूप में खुद को स्थापित करना चाहते हैं तो उन्हें जिम्मेदारियां लेनी होगी और सफलता से मुग्ध होने तथा असफलता आहत होने की मानवीय कमजोरियों को बस में करना होगा। बेशक राहुल के लिए संभावनाएं हैं, लेकिन बहुत सी शर्तों के साथ।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

सुबालोपनिषद् (भाग-12)

गतांक से आगे...

यह मृत्यु, मध्यमा नाड़ी को प्राप्त करती है, इसलिए यह मध्यमा में ही विलीन होती है, यह मध्यमा, प्रभञ्जन नामक वायु को प्राप्त करती है, अत: यह प्रभञ्जन वायु में ही विलय को प्राप्त होती है, यह प्रभञ्जन वायु विज्ञान को प्राप्त होती है, इस कारण प्रभञ्जन वायु का अस्त विज्ञान में ही होता है। यह विज्ञान, तुरीय के पास जाता है, इसलिए वह मृत्युरहित, भयविहीन, अशोक, अनन्त एवं निर्बीज तुरीयावस्था को प्राप्त हो जाता है।

(यह कहने के पश्चात् पुन: उन्होंने कहना प्रारंभ किया कि) जो उपस्थ को प्रास करता है, वह उपस्थ में ही लीन हो जाता है और यह उपस्थ, आनन्द स्वरूप विषयों को प्राप्त करता है, इस कारण यह आनन्द में विलय हो जाता है। यह आनन्द, प्रजापति के पास जाता है, इस कारण यह प्रजापति में विलीन हो जाता है। यह प्रजापति, नासीरा नाड़ी की ओर प्रस्थान करता है, अत: यह नासीरा में ही विलीन हो जाता है। यह नासीरा, कुर्मिर नाड़ी की ओर गमन करता है, इस कारण से यह कुर्मिर नाड़ी में ही लय होती है। यह कुर्मिर विज्ञान की ओर जाती है, इसलिए इसका विलय विज्ञान में ही हो जाता है। यह विज्ञान तुरीय को प्राप्त करता है, इस कारण यह मृत्युरहित, भयरहित, शोकविहीन, अनन्त एवं अबीज तुरीयावस्था को ही प्राप्त करता है।

(इसके बाद उन्होंने पुन: कहा कि) जो मन को प्राप्त करता है, वह मन में ही विलीन हो जाता है। यह मन, विचारणीय विषय को प्राप्त करता है, इस कारण से यह विचारणीय विषयों में लीन हो जाता है, यह विचारणीय, चन्द्रमा की तरफ गमन कर जाता है, इसलिए यह चन्द्रमा में ही लय हो जाता है, यह चन्द्रमा, शिशु नाड़ी की ओर गमन करता है, इस कारण यह शिशु में ही विलीन हो जाता है।

क्रमश: ...

वर्ल्ड सस्टेनेबल गैस्ट्रोनोमी डे

ऋचीक मिश्रा

देश में हर साल करीब 2100 करोड़ किलो गेंहू खराब हो जाता है। लगभग, इतना ही गेंहू ऑस्ट्रेलिया हर साल पैदा करता है। मुंबई म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन की माने तो मुंबई में हर दिन 94 लाख किलो सॉलिड वेस्ट निकलता है। इसमें 73 फीसदी (यानी 68.62 लाख किलो) खाद्य सामग्री होती है। भारत में हर साल 6700 करोड़ किलो खाद्य सामग्री बर्बाद होती है। इसकी कीमत करीब 90 हजार करोड़ है। यानी हर दिन 244 करोड़ रुपए का भोजन व्यर्थ होता है।

देश में हर साल करीब 19.40 करोड़ लोग भूखे रहते हैं। मिड डे मील स्कीम के तहत करीब 12 मिलियन बच्चों को हर रोज भोजन खिलाया जाता है। हर व्यक्ति को भोजन और रोजगार उपलब्ध कराने के नाम पर करोड़ों का सरकारी धन खर्च होता है फिर भी संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के मुताबिक देश में हर साल भूख या कुपोषण के कारण पांच वर्ष की आयु तक पहुंचने से पहले लगभग 10 लाख बच्चे मर जाते हैं। भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की एक रिपोर्ट को माने तो भारत में हर साल 23 मिलियन टन दालों, 12 मिलियन टन फल और 21 मिलियन टन सब्जियां वितरण प्रणाली में खामियों के कारण खराब हो जाती हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने इस बार एक्ट नाऊ कैंपेन चलाया है ताकि खाने की बर्बादी रोकी जा सके। इसके लिए यूएन ने दुनिया भर के शेफ को इस कैंपेन में शामिल होने को कहा है। क्योंकि पूरी दुनिया में जिस तरह रफ्तार से खाना बर्बाद हो रहा है, उसी गति से चलते रहे ते 2030 तक दुनिया सालाना 2.1 अरब टन खाने की बर्बाद करेगी।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) की एक ताजा रिपोर्ट कहती है कि भूख की अत्यंत मार झेल रहे ये 11.3 करोड़ से ज्यादा लोग दुनिया के 53 देशों में फैले हैं। इस समस्या से सबसे ज्यादा अफ्रीकी महाद्वीप जूझ रहा है। युद्ध झेल रहे यमन, सीरिया, अफगानिस्तान और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो दुनिया के उन आठ देशों में शामिल हैं जहां भुखमरी झेल रहे इन लोगों में से दो तिहाई लोग रहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 दिसंबर 2016 को A/RES/71/246 प्रस्ताव को अपनाने के बाद 18 जून को अंतरराष्ट्रीय स्तर सस्टेनेबल गैस्ट्रोनॉमी डे के रूप में मनाए जाने की घोषणा की।

गैस्ट्रोनॉमी को कभी-कभी भोजन की कला कहा जाता है। यह किसी विशेष क्षेत्र से खाना पकाने की शैली का भी उल्लेख कर सकता है। दूसरे शब्दों में, गैस्ट्रोनॉमी अक्सर स्थानीय भोजन और व्यंजनों को संदर्भित करता है। सस्टेनेबिलिटी एक ऐसा विचार है जो (जैसे कृषि, मछली पकड़ने या शायद भोजन की तैयारी) एक ऐसे तरीके के दौरान पूरा होता है जो हमारे प्राकृतिक संसाधनों के लिए बेकार नहीं है और शायद हमारे पर्यावरण या स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने के बिना लंबे समय तक जारी रहा है।

जी-7 देशों को साधकर चीनी चुनौतियों का मुकाबला

कमलेश पांडे

दुनिया की सात सबसे बड़ी और विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के समूह जी-7 के शिखर सम्मेलन में चीन के खिलाफ कड़े आर्थिक प्रतिबंधों के संकल्प प्रस्ताव को जो मंजूरी दी गई है, उसके वैश्विक मायने स्पष्ट हैं। इन संकल्पों के वैश्विक अर्थव्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे। हालांकि रूस, चीन और अरब देशों के ईरान-तुर्किये समर्थित एक धड़े की तिकड़ी के सामने वो कितने टिकेंगे, यह तेजी से बदलता हुआ वक्त बताएगा।

खासकर भारत और उसके पीछे लामबंद तीसरी दुनिया के देश यदि तटस्थ हो गए, तब क्या होगा, यह समझना भी जरूरी है। वैसे तो जी-7 शिखर सम्मेलन में इस प्रस्ताव पर भी सहमति जताई गई कि उन चीनी कम्पनियों के खिलाफ भी प्रतिबंध लगाए जाएंगे, जिन्होंने यूक्रेन के खिलाफ रूस की मदद की है। खास तौर पर चीन के उन वित्तीय संस्थानों के खिलाफ कार्रवाई करेंगे, जिन्होंने रूस को यूक्रेन के खिलाफ युद्ध के लिए हथियार हासिल करने में मदद की है। सम्भवतया भारत भी उनमें से एक हो सकता है, क्योंकि उसका रूसी प्रेम जगजाहिर है।

वहीं, शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन जी-7 में शामिल मेजबान इटली के साथ अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान और कनाडा ने चीन के खिलाफ जिन दो संकल्पों को मंजूरी दी, वो भी निकट भविष्य में अपना असर जरूर दिखाएंगे। क्योंकि इनमें उन संस्थाओं के खिलाफ भी प्रतिबंध लगाने का वादा किया गया है, जिन्होंने धोखाधड़ी से तेल की ढुलाई करके रूस को प्रतिबंधों से बचने में मदद की है। स्वाभाविक है कि भारत भी उनमें से एक हो सकता है, क्योंकि उसने रूस से बड़े पैमाने पर सस्ते कच्चे तेल की खरीददारी की और उसे यूरोपीय बाजारों तक पहुंचाकर भारी मुनाफा कमाया।

वहीं, जी-7 के नेताओं ने एक साझा वक्तव्य में

कहा कि वे यूक्रेन के खिलाफ रूस की मदद करने वाली तीसरे देशों की संस्थाओं और व्यक्तियों को अपनी वित्तीय प्रणालियों तक पहुंच से प्रतिबंधित करेंगे। इसमें भी शक की सुई भारत और उसके समर्थक तीसरी दुनिया के देशों की ओर घूम सकती है। लेकिन भारत पर निशाना साधने से पश्चिमी देशों का खेल गड़बड़ा सकता है, इसलिए उन्होंने रणनीतिक रूप से चीन पर निशाना साधा है, जो रूस का सबसे बड़ा और भरोसेमंद वैश्विक रणनीतिक पार्टनर बन चुका है।

यही वजह है कि जी-7 देशों ने चीन के अनुचित व्यापारिक व्यवहार के खिलाफ भी कार्रवाई का संकल्प लिया है। खासतौर पर चीन के साथ व्यापार घाटे को कम करने पर जोर देने की बात कही है। इसके अलावा, चीन को निर्यात नियंत्रण के जरिए आपूर्ति श्रृंखलाओं को प्रभावित करने से परहेज करने की भी चेतावनी दी गई है, खास तौर पर चिप व इलेक्ट्रॉनिक्स के निर्माण में काम आने वाले अहम खनिजों पर एकतरफा निर्यात प्रतिबंधों को अनुचित करार दिया।

वहीं, जी-7 ने चीन की कुटिल चालों से अपने व्यवसायों की रक्षा करने और चीन के साथ व्यापार में संतुलन लाने के लिए कार्रवाई करने की बात की है। इसके अलावा, अपने मसौदा बयान में कहा है कि हम दक्षिण चीन सागर में चीन के सैन्य बल और समुद्री मिलिशिया के खतरनाक इस्तेमाल और देशों की गहरे समुद्रों में नौवहन की स्वतंत्रता में बार-बार बाधा डालने, बलपूर्वक एवं धमकाने वाली गतिविधियों का विरोध करना जारी रखेंगे। इसके अलावा, जी-7 देश तबतक यूक्रेन के पीछे खड़े रहेंगे जबतक जरूरत होगी। यूक्रेन के पुनर्निर्माण के लिए समूह पूरी मदद देता रहेगा।

अब गौर करने वाली बात यह है कि जी-7 देश जहां रूस समर्थक चीन को ललकार रहे हैं, वहीं रूस के भरोसेमंद मित्र भारत को पुचकार रहे हैं। तभी तो दुनिया के सबसे शक्तिशाली सात देशों के संगठन जी-7 का सदस्य न होने के बावजूद इसकी शिखर बैठकों में पिछले कई सालों से भारत को महत्व दिया जा रहा है, जो अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत की बढ़ती धमक को ही दर्शाता है।

गोया, इस बार भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने तीसरे कार्यकाल की पहली विदेश यात्रा के तौर पर जी-7 देशों के सम्मेलन में शिरकत करने के लिए इटली पहुंचे हैं, जिसके अपने खास मायने हैं, जो स्पष्ट हैं। खासकर ऐसे वक्त में जब यूक्रेन युद्ध अपने तीसरे वर्ष में पहुंच गया है, इजरायल-हमास युद्ध भी खत्म होता नहीं दिख रहा है और यूरोपीय देशों के चुनावों में राजनीति का चेहरा बदलता दिख रहा है, दुनिया की सर्वाधिक उन्नत अर्थव्यवस्थाएं मिलकर आगे की रणनीतियों पर विचार कर रही हैं, तब अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और एशिया-प्रशांत के बारह विकासशील देशों को भी इस चर्चा में शामिल करने का अर्थ स्पष्ट है कि उनका कोई भी सार्थक मकसद इनके सहयोग के बिना पूरा नहीं हो सकता है।

ऐसा इसलिए कि भारत, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील जैसे देश जी-7 के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये तीनों ही देश जी-7 के प्रबल प्रतिद्वंद्वी रूस और चीन के साथ ब्रिक्स समूह का भी हिस्सा हैं। वहीं, संयुक्त राष्ट्र जिस तेजी से अपनी प्रासंगिकता खो रहा है, और चतुरसुजान देशों द्वारा उसे खोने दिया जा रहा है, उसे देखते हुए वैश्विक व्यवस्था में जी-7 जैसे क्षेत्रीय संगठनों का महत्व बढ़ा है।

हालांकि, यह भी एक तल्ख सच्चाई है कि जी-7 भी अब उतना मजबूत नहीं दिखता है, जितना पहले दिखता था। क्योंकि 1980 के दशक में जी-7 देशों का जीडीपी वैश्विक जीडीपी का करीब 60 फीसदी था, जो अब घटकर 40 फीसदी रह गया है। वहीं, पिछले एक दशक में भारत को देखने का दुनिया का नजरिया बदला है, तो जिसकी साफ वजहें भी हैं। ऐसे समय में जब ज्यादा देशों की अर्थव्यवस्थाएं स्थिर बनी हुई हैं, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व विश्व बैंक जैसी प्रतिष्ठित संस्थाएं भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक मान रही हैं।

इसके अतिरिक्त, भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) ब्रिटेन के बराबर है, तो फ्रांस, इटली और कनाडा जैसे देशों से कहीं ज्यादा है। लेकिन भारत को मिलने वाले महत्व की एक बड़ी वजह यह भी है कि भारत जहां दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, तो जी-7 भी लोकतांत्रिक देशों का समूह है। लिहाजा, यह भारत की कूटनीतिक कामयाबी ही है कि आज अमेरिका, रूस और यूक्रेन, तीनों भारत से नजदीकी सम्बंध चाहते हैं। वैश्विक आयोजनों में भारत की बढ़ती भागीदारी, वैश्विक चुनौतियों को हल करने में भारत के महती प्रयासों की बढ़ती मान्यता को ही दर्शाती है। इसलिए भारत को अपनी गुटनिरपेक्ष नीतियों पर चलते हुए वैश्विक संघर्ष को संतुलित करने की दिशा में अपना अहम योगदान देना चाहिए। चीनी कुटिल चालों का यही सुलझा हुआ जवाब भी होगा।

आज का इतिहास

1979 अमेरिका और सोवियत संघ के बीच हथियार नियंत्रण समझौता हुआ।

1981 युनाइटेड स्टेट्स एयर फोर्स एफ-117 पहली ऑपरेशनल एयरक्राफ्ट थी जिसे स्टील्थ तकनीक के आसपास डिजाइन किया गया था। लॉकहीड एफ -117 नाइटहॉक, पहला ऑपरेशनल एयरक्राफ्ट जो शुरू में स्टील्थ टेक्नोलॉजी के आसपास डिजाइन किया गया था, अपनी पहली उड़ान बनाता है। लॉकहीड स्न-117 नाइटहॉक एक सिंगल-सीट, ट्विन-इंजन स्टेल्थ अटैक एयरक्राफ्ट है जिसे लॉकहीड के गुप्त स्कंक वर्क्स डिवीजन द्वारा विकसित किया गया था और संयुक्त द्वारा संचालित किया गया था।

1982 वेटिकन के साथ घनिष्ठ संबंध के कारण गॉडबैंकर के रूप में जाने जाने वाले इतालवी बैंकर रॉबर्टो कैल्वी के शरीर को लंदन के ब्लैकपाइर्स ब्रिज के नीचे हैंगफॉफ मचान मिला।

1983 अंतरिक्ष शटल कार्यक्रम- एसटीएस -7, अंतरिक्ष यात्री सैली राइड अंतरिक्ष में पहली अमेरिकी महिला बन गई। सैली क्रिस्टन राइड एक अमेरिकी भौतिक विज्ञानी और अंतरिक्ष यात्री थे। लॉस एंजिल्स में जन्मी, वह 1978 में नासा में शामिल हुईं और 1983 में अंतरिक्ष में पहली अमेरिकी महिला बन गईं। वह 32 साल की उम्र में ऐसा करने वाली सबसे कम उम्र की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री बनी हैं।

1983 एबोर्ड स्पेस शटल चैलेंजर, अंतरिक्ष यात्री सैली राइड बेसमेथ अंतरिक्ष में पहली अमेरिकी महिला।

1983 ईरानी किशोरी मोना महमूदनिज़ाद और नौ अन्य महिलाएँ बहाई आस्था में अपनी सदस्यता के कारण शर्मिंदा थीं।

1994 लॉयलिस्ट एलस्टर वालंटियर के ट्रबल-सदस्यों ने उत्तरी आयरलैंड के लफिनसलैंड में एक भीड़-भाड़ वाली पट्टी पर हमला किया, जिसमें छह हमले हुए।

2003 गूगल ने इंटरनेट प्रोग्राम एडसेंस पेश किया।

2004 चाड के सैनिकों ने 69 सूडानी मिलिशियाई को मार गिराया।

2006 पहला कज़ाख अंतरिक्ष उपग्रह, कज़सैट लॉन्च किया गया था। काज़सैट एक संचार उपग्रह था जो पृथ्वी से लगभग 36,000 किमी ऊपर एक भू-समकालिक कक्षा पर कब्जा करने की योजना बना रहा था। यह थेल्स एलेनिया स्पेस के सहयोग से ख्रूंखेव स्पेस सेंटर द्वारा निर्मित किया गया था। उपग्रह का आंशिक नियंत्रण जुलाई 2008 में और पूरी तरह से अक्टूबर 2008 में खो गया था।

सबसे बड़ा और सीधा सवाल यह है कि आखिर पप्पू पास कैसे हो गया?

नीरज कुमार दुबे

लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद खुशियां मना रही कांग्रेस पर तंज कसते हुए भाजपा ने पूछा था कि लगातार तीसरी बार सत्ता से दूर रही कांग्रेस आखिर किस बात का उत्सव मना रही है? देखा जाये तो भाजपा का सवाल वाजिब था क्योंकि तीन चुनावों से कांग्रेस तीन अंकों में सीटें हासिल नहीं कर पा रही है फिर भी उत्सव ऐसे मना रही है जैसे उसका कोई बड़ा मिशन पूरा हो गया हो। आप 2014 से 2024 तक के तीन लोकसभा चुनाव परिणामों का विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि इस बार कांग्रेस को वाकई जश्न मनाना ही चाहिए क्योंकि सत्ता से दूर रह जाने के बावजूद यह भी सही है कि कांग्रेस को इस बार बड़ी जीत मिली है। दरअसल कांग्रेस ने लगातार हार से उपजी निराशा पर जीत हासिल कर ली है। पिछले दस सालों से कांग्रेस मुक्त भारत अभियान जिस तेजी से चला था उससे ऐसा लग रहा था कि देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी शायद जल्द ही लुप्तप्राय हो जाये लेकिन कांग्रेस की शानदार वापसी ने उसके समर्थकों और कार्यकर्ताओं को जोश से भर दिया है।

इसके अलावा भाजपा ने राहुल गांधी को पप्पू करार देकर उन्हें पूरी तरह से विफल घोषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। लेकिन राहुल गांधी ने पूरे चुनाव प्रचार अभियान के दौरान पार्टी का नेतृत्व करते हुए अपनी रणनीति से भाजपा को कई जगह उसके गढ़ों में ऐसी मात दी है जोकि भगवा खेमे को हमेशा सालती रहेगी। भारतीय राजनीतिक इतिहास को देखेंगे तो पाएंगे कि विपक्षी नेता के रूप में राहुल गांधी ने बहुत कुछ सहा है। उनकी छवि पप्पू यानि कम बुद्धि वाले नेता की बना दी गयी थी। यही नहीं, उनकी राष्ट्रभक्ति पर भी सवाल उठाये गये। लोकसभा चुनावों से पहले उनके विदेशी दौरों को सवालों के घेरे में लाते हुए उन पर आरोप लगाये गये कि वह विदेशों में अपने संबोधनों के जरिये देश की छवि खराब कर रहे हैं। चुनावों के दौरान राहुल गांधी के तमाम पुराने वीडियो के अंश निकाल कर उनकी समझ पर सवाल उठाये जा रहे थे। राहुल गांधी बाइक मैकेनिक से मिलें तो सवाल, राहुल गांधी बढ़ई से मिलें तो सवाल, राहुल गांधी ट्रक ड्राइवरों से मिलें तो सवाल, राहुल गांधी छात्रों से मिलें तो सवाल। ऐसा माहौल बना दिया गया था कि राहुल गांधी हर धंधे में हाथ आजमाना चाहते हैं क्योंकि वह राजनीति में सफल नहीं हो पाये। लेकिन लोकसभा चुनाव परिणामों ने साबित कर दिया कि राहुल गांधी राजनीति में सफल और स्थापित, दोनों हो गये हैं। राहुल गांधी की इस सफलता को सोशल मीडिया पर %पप्पू पास हो गया% की संज्ञा दी जा रही है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है कि पप्पू पास कैसे हो गया? यदि आप राहुल गांधी की पिछले एक-डेढ़ साल की राजनीतिक गतिविधियों का विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि उन्होंने परीक्षा करीब आने पर ही पढ़ने जैसी आदत छोड़कर साल के शुरू से ही परीक्षा की तैयारी में जुटने वाले छात्र का आचरण अपना लिया है।कांग्रेस ने अगर अपनी लोकसभा सीटों की संख्या में लगभग 50 का इजाफा किया है तो इसमें राहुल गांधी की %भारत जोड़ो यात्रा% और %भारत जोड़ो न्याय यात्रा% का भी अहम योगदान है। इन दोनों यात्राओं के जरिये राहुल गांधी ने जब देश के विभिन्न कोनों की समस्याओं को करीब से समझा और जनता से सीधी मुलाकात कर उनके मन की बात जानी तो इससे उनमें खुद भी बड़ा परिवर्तन आया और जनता के बीच उनकी छवि में भी सुधार हुआ। राहुल गांधी जब अपनी यात्राओं के दौरान पैदल चलते हुए आम लोगों से बात करते थे तब लोगों को समझ आया कि राहुल गांधी कम बुद्धि वाले नेता नहीं हैं जैसा कि आमतौर पर उन्हें दर्शाया जाता है। इसके अलावा, राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से अब तक की उनकी तमाम तस्वीरों को देख लीजिये उनमें सिर्फ उनकी विदेश यात्रा को छोड़ दें तो बाकी तस्वीरों में आपको यही लगेगा कि वह अपनी लुक पर ध्यान देने की बजाय साधारण तरीके से रहने में विश्वास करने लगे हैं और आम जन के बीच उन्हीं की तरह रहना और दिखना चाहते हैं। आप अगर राजनीतिक इतिहास उठा कर देखेंगे तो पाएंगे कि जनता के बीच साधारण तरीके से रहने वाले नेता बहुत लोकप्रिय होते हैं। राहुल गांधी जिस तरह टी-शर्ट और पैंट में ही रहते हैं और चाहे सर्दी हो या गर्मी, उनका लुक एक जैसा ही रहता है उसका बड़ा असर मतदाताओं पर पड़ा है।

आपने चुनावों के दौरान अक्सर देखा होगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राहुल गांधी को शहजादा बताते हुए उन पर हमले करते हैं लेकिन राहुल गांधी पिछले लगभग एक-डेढ़ साल से जिस साधारण तरीके से रह रहे हैं उसके चलते इस बार के चुनावों में %शहजादा% शब्द ने उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाया। 2014 से पहले नरेंद्र मोदी की छवि साधारण नेता की और राहुल गांधी की छवि युवराज की थी लेकिन अब मोदी के सूट-बूट पर सवाल उठाते हुए कांग्रेस ने उनकी छवि अमीर और उद्योगपतियों के समर्थक की और राहुल गांधी की छवि %जननायक% की बना दी है। लेकिन यह सब इतना आसान नहीं रहा। राहुल गांधी को पप्पू वाली छवि से बाहर निकालने के लिए विशेषज्ञों की एक टीम ने दिन-रात काम किया और आखिरकार उन्हें सफलता मिल गयी। बताया जाता है कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा और भारत जोड़ो न्याय यात्रा के प्रचार का काम कांग्रेस ने मार्केटिंग और

कम्युनिकेशन फर्म तीन बंदर को दिया था। राहुल गांधी की यह दोनों यात्राएं प्रचार की दृष्टि से तो काफी सफल रहीं ही साथ ही उनकी छवि भी एक गंभीर राजनेता की बनाने में मददगार साबित हुईं। इसी मार्केटिंग फर्म ने कांग्रेस के प्रचार अभियान को धार देते हुए चुनावों के दौरान ऐसे-ऐसे स्लोगन बनाये जोकि लोगों की जुबान पर चढ़ गये। साथ ही कांग्रेस ने सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कुछ उद्योगपतियों के करीब होने की बात कहते हुए ऐसा प्रचार अभियान चलाया कि लोगों को लगने लगा कि एक दो उद्योगपतियों को ही देश के सारे संसाधन सौंपे जा रहे हैं। प्रधानमंत्री की उद्योगपतियों के साथ पुरानी तस्वीरों को ऐसे वायरल कराया गया कि छोटे शहरों और गांवों में लोगों को लगने लगा कि मोदी सरकार सिर्फ उद्योगपतियों के लिए काम कर रही है। जिस समय प्रधानमंत्री की उद्योगपतियों की या सूट बूट में तस्वीर पोस्ट की जाती थी उसके कुछ ही देर बाद किसी गरीब को गले लगाये या माथे पर चंदन लगा कर ध्यान लगाते हुए राहुल गांधी की तस्वीर पोस्ट की जाती थी। यानि जिस तरह मोदी ने अपनी ब्रैंड इमेज बनाई ठीक उसी तरह राहुल गांधी ने भी अपनी ब्रांड इमेज बनाई।

इसके अलावा, जिस समय पूरा देश अयोध्या में राम मंदिर बनने की खुशी में उत्सव मना रहा था और ऐसा लग रहा था कि राम लहर में भाजपा वाकई में इस बार चुनावों में 400 सीटों के पार चली जायेगी तभी राहुल गांधी की टीम ने भाजपा पर संविधान को बदलने और लोकतंत्र को खत्म करने की चाल चलने जैसे आरोप लगाने शुरू कर दिये। इन आरोपों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए कुछ सोशल मीडिया इनफ्लुएंसरों की मदद भी ली गयी। उनसे भी वीडियो बनवाये गये और आखिरकार यह टीम जनता के मन में यह बात बिठाने में सफल रही कि अगर मोदी 400 सीटों के साथ सत्ता में वापस आये तो संविधान बदल देंगे। प्रधानमंत्री चुनावों में बार-बार कह रहे थे कि उनका अगला कार्यकाल और भी बड़े फैसलों वाला होगा। इसे इस रूप में दर्शाया गया कि अगला बड़ा फैसला आरक्षण खत्म करने का होगा। यह बात लोगों के मन में बिठाने के लिए डीपफेक वीडियो बनवाये गये जिसे कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने भी शेयर कर भ्रम फैलाने का काम किया। जब कांग्रेस ने यह देखा कि प्रधानमंत्री उनकी चाल समझ गये हैं और इस ओर से लोगों का ध्यान हटाने के लिए मंगलसूत्र और मुजरा जैसे शब्दों का उपयोग कर रहे हैं तब कांग्रेस ने दूसरी चाल चलते हुए कुछ ऐसे चुनावी जुमले पेश किये जिसमें कही जा रही बातों पर बड़ी संख्या में मतदाताओं ने यकीन कर लिया।

दरअसल, कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में महालक्ष्मी योजना के तहत महिलाओं को एक लाख रुपए सालाना देने का वादा किया था। इसके अलावा युवाओं से %पहली नौकरी पक्की% जैसा महत्वपूर्ण वादा किया था। साथ ही कांग्रेस ने देश में जाति जनगणना करवाने और अग्निवीर योजना को रद्द करने का वादा भी किया था। कांग्रेस ने जब यह देखा कि उसके घोषणापत्र में किये गये वादे जनता तक ठीक से पहुँच नहीं पा रहे हैं तो खटाखट, फटाफट जैसे शब्दों का उपयोग कर मतदाताओं का ध्यान आकर्षित किया गया। यह शब्द लोगों के कानों में गूंजते रहे और राहत पाने के उद्देश्य से लोगों ने कांग्रेस की झोली वोटों से भर दी। इसके अलावा कांग्रेस ने चुनावों के दौरान मेरे विकास का हिसाब दो% और %सब कुछ ठीक नहीं है जैसे प्रचार अभियानों के जरिये भी भाजपा को घेरने में सफलता हासिल की। कांग्रेस के पूरे प्रचार अभियान पर नजर डालेंगे तो लगेगा कि सिर्फ कंटेंट के मामले में ही नहीं बल्कि टाइमिंग के हिसाब से भी पार्टी की प्रतिक्रिया जोरदार रही। हम आपको बता दें कि इस साल की शुरुआत में कांग्रेस ने प्रचार अभियान को नई धार देने के लिए भाषा और क्षेत्र के हिसाब से चार टीमें गठित की थीं। हर टीम में 900 से लेकर एक हजार तक इंटर्न थे जोकि उस क्षेत्र में स्थानीय सोशल मीडिया टीमों के साथ संपर्क में रहते थे। हर क्षेत्र की टीम में काम कर रहे लोगों को विभिन्न इलाकों के व्हाट्सएप ग्रुपों में भी शामिल किया गया था ताकि आपसी समन्वय बेहतर तरीके से हो सके।

चुनाव प्रचार के दो महीनों के दौरान के भाजपा और कांग्रेस के सोशल मीडिया अकाउंटों पर लाइक, रीपोस्ट या कमेंटों का विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि कांग्रेस की डिजिटल टीम का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा क्योंकि सोशल मीडिया पर उसकी पोस्टों को लोगों ने काफी पसंद किया। सोशल मीडिया पर कांग्रेस के प्रचार अभियान का जवाब देने में भाजपा का आईटी सेल एक तो पीछे रहा साथ ही भगवा दल के पास ध्रुव राठी जैसे यूट्यूबरों की ओर से फैलाई जा रही बातों की प्रभावी काट नहीं मौजूद थी। इसके अलावा, चुनावों के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तमाम मीडिया संस्थानों को साक्षात्कार दिये जिसे भाजपा के सभी नेताओं ने साझा किया लेकिन इन साक्षात्कारों में नया कुछ भी नहीं था जबकि कांग्रेस और उसके नेताओं की सोशल मीडिया पोस्टें अपने बेहतर कंटेंट की वजह से सबका ध्यान आकर्षित कर रही थीं। इसके अलावा भाजपा पर निशाना साधने वाले यूट्यूबरों के तमाम वीडियो कांग्रेस के लोग साझा कर रहे थे जबकि मोदी सरकार या भाजपा का गुणगान करने वाले यूट्यूबरों के वीडियो भाजपा के लोग साझा नहीं कर रहे थे और सिर्फ मोदी के आभामंडल से इतना प्रभावित थे कि उन्हें लग रहा था कि 400 पार का नारा हकीकत होने ही वाला है तो मेहनत क्यों करनी?

इसके अलावा, राहुल गांधी के यूट्यूब चैनल, फेसबुक पेज, एक्स या इंस्टाग्राम अकाउंट पर ही उनके सब्सक्राइबर या फॉलोअर बढ़ने और चुनावों में कांग्रेस को वोट नहीं मिलने जैसे कटाक्ष करने वालों को यह भी देखना चाहिए कि कांग्रेस के नेता दो लोकसभा सीटों से बड़े अंतर से विजयी होने में सफल रहे हैं। पिछली लोकसभा के दौरान ऐसा भी समय आया था जब राहुल गांधी को संसद की सदस्यता और सरकारी आवास से हाथ धोना पड़ा था लेकिन जनता ने इस बार उन्हें दो सीटों से चुनाव जिता कर भेज दिया है। यही नहीं राहुल गांधी की जीत का अंतर प्रधानमंत्री मोदी की जीत के अंतर से बहुत ज्यादा है। यदि राहुल गांधी ने पार्टी नेताओं का आग्रह स्वीकार कर विपक्ष का नेता बनने का प्रस्ताव मान लिया तो मोदी से उनकी सीधी राजनीतिक भिडंत होगी जोकि राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य पर बड़ा असर डाल सकती हैं। गौरतलब है कि राहुल गांधी का आरोप रहता है कि प्रधानमंत्री उनकी बात का जवाब नहीं देते लेकिन यदि राहुल विपक्ष के नेता बन गये तो प्रधानमंत्री को उनके सवालों का जवाब देना ही होगा। इसके अलावा, चुनावों में राहुल गांधी को जिस तरह जनता का आशीर्वाद मिला है उससे उन्होंने उस धारणा को भी तोड़ दिया है कि नरेंद्र मोदी के विराट राजनीतिक व्यक्तित्व तक कोई नेता नहीं पहुँच सकता है। बहरहाल, इस तरह आप कुल मिलाकर देखेंगे तो पाएंगे कि पास होने के लिए पप्पू ने खुद भी मेहनत की है और उनकी टीम ने भी उन्हें पूरा सहयोग दिया है। भले पप्पू इस बार भी टॉप नहीं कर पाया हो लेकिन पास होकर उसने विफलता का तमगा अपने ऊपर से उतार फेंका है। देखा जाये तो यह कांग्रेस के लिए कम खुशी की बात नहीं है इसलिए उनका उत्सव मनाना स्वाभाविक ही है।

अयोध्यावासियों ने भाजपा को क्यों हराया?

कृष्ण प्रताप सिंह

इस लोकसभा चुनाव में भगवान राम की जन्मभूमि के मतदाताओं ने जिस तरह भाजपा की कलाई मरोड़कर फैजाबाद लोकसभा सीट (जिसमें अयोध्या समाहित है) उससे छीनी और उसकी प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी की झोली में डाल दी है, निस्संदेह, उसका त्रास भाजपा को अरसे तक बेचैन किए रखेगा। इसलिए आज नहीं तो कल उसे इस सवाल की पड़ताल करनी ही होगी कि अयोध्यावासियों ने उसकी किस गलती को नाकाबिल-ए-माफी मानकर उसे यह सजा सुनाई है? जिन भगवान राम के मंदिर निर्माण के मुद्दे ने उसे उसके दो लोकसभा सीटों वाले पतझड़ से 'दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी' के बसंत तक पहुंचाया और अवसर हाथ आने पर जिनकी नगरी को 'भव्य' व 'दिव्य' बनाने में उसने कुछ भी उठा नहीं रखा, उसके निवासियों ने क्यों इस बार उसे लोकसभा में अपना प्रतिनिधित्व करने लायक भी नहीं समझा? दरअसल, अयोध्या को हमेशा संतुलन रखने की आदत है और अति किसी भी तरह की क्यों न हो, आमतौर पर न वह उसे स्वीकार करती है, न ही उसके सामने सिर झुकाती है। हां, वह उससे सीधे भिड़ती भी नहीं, लेकिन पहला मौका हाथ आते ही उसका हिसाब-किताब बराबर कर उसे चलता कर देती है। क्या आश्चर्य कि अयोध्या की सैकड़ों परियोजनाओं पर केंद्र व प्रदेश सरकार के राजकोष से कोई पचास हजार करोड़ रुपए खर्च करवाकर भी भाजपा वह मतदाताओं को आकर्षित नहीं कर पाई। निर्माणाधीन राममंदिर में दर्शन-पूजन के लिए आने वाले तीर्थयात्रियों, श्रद्धालुओं व पर्यटकों की सुख-सुविधा के लिए अयोध्या में पिछले साल सड़कें चौड़ी करने का अभियान चला तो समुचित मुआवजे व पुनर्वास के वादे निभाये बिना नागरिकों के हजारों घरों, दुकानों व प्रतिष्ठानों को ध्वस्त कर दिया गया। इससे वे नाराज हुए। अयोध्या के सांसद व भाजपा प्रत्याशी लल्लू सिंह एक वीडियो में संविधान बदलने के लिए उसकी सफलता को जरूरी बताते नजर आए। दलित व पिछड़ी जातियों के मतदाता इस अंदेशे में सपा के बैनर तले एकजुट हो गए कि उनके पास बाबासाहब के संविधान और उसके दिए आरक्षण को बचाने का यह अंतिम अवसर है।वे दलित और पिछड़े भी जो 2019 में अलग-अलग कारणों से भाजपा की ओर चले गए थे, उसकी ओर से मुंह मोड़कर वापस लौट आए। 1989 में भाजपा व कांग्रेस दोनों से खफा अयोध्या ने पिछड़ी जाति का वामपंथी सांसद चुन लिया था, जबकि इस बार भाजपा से खफा होकर समाजवादी को सांसद चुन लिया है।

'प्रासंगिक करार' में उलझ गई सरकार!

अमिताभ श्रीवास्तव

महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव तक मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे का यह कहना कि उनका महागठबंधन 'फेविकॉल' के जोड़ की तरह है, अब सच सिद्ध नहीं हो रहा है। आम चुनाव के अच्छे परिणाम नहीं आने के बाद जहां भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) के भीतर हलचल तेज है, वहीं दूसरी ओर छोटे संगठन, जैसे विधायक बच्चू कडू के नेतृत्व वाले प्रहार संगठन ने तो साफ तौर पर विधानसभा चुनाव अलग लड़ने की घोषणा कर दी है। इसके अलावा उपमुख्यमंत्री अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी(राकांपा) के नेता तो लोकसभा चुनाव के बीच से ही शोर मचाने लगे थे।

चुनाव बाद भी उनकी जल्दबाजी में कोई कमी नहीं है। हालांकि ऐसा नहीं है कि पराजय का सामना करने के बाद महागठबंधन में गतिविधियां तेज हुई हैं, उधर महाविकास आघाड़ी में भी अनेक सवाल उठने आरंभ हो गए हैं। विशेष रूप से कांग्रेस के खेमे की ओर से बीच चुनाव में भी खींचतान हुई थी, वह अब भी जारी है। इस बीच, राज्य सरकार में मंत्री अब्दुल सत्तार ने 'प्रासंगिक करार' की बात को उछाल कर शिवसेना के शिंदे गुट को आगाह कर दिया है। साफ है कि सत्ता पक्ष हो या फिर विपक्ष, सभी दल वक्त के साथी हैं, ऐसे में उनके गठजोड़ की विश्वसनीयता का अनुमान एक पहेली बन चला है। पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनावों में सभी दल और उनके गठबंधन की स्थितियां स्पष्ट थीं।

विचारधारा आधारित सहमति के चलते चुनाव के पहले

और चुनाव के बाद की रणनीति तय थी। लोकसभा चुनाव तक सब कुछ ठीक-ठाक चला, मगर विधानसभा चुनाव परिणाम आने के बाद से अप्रत्याशित रूप से गठबंधन बिखरने लगे। यहां तक कि विपरीत विचारों वाले दलों ने मिलीजुली सरकार की स्थापना कर डाली। हालांकि वह कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी। लेकिन उसने गठबंधनों में वैचारिक उदारता का संदेश जरूर दे दिया। महाविकास आघाड़ी की सरकार गिरने के बाद शिवसेना का शिंदे गुट और भाजपा की सरकार ने कुछ ही समय में राकांपा में फूट का लाभ उठाकर अजित पवार गुट को अपने साथ कर लिया। लिहाजा पक्ष-विपक्ष एक समान-सा दिखाई देने लगा। बाद में टूट-फूट से बनी राज्य सरकार का लोकसभा चुनाव में एकजुट रहना आवश्यक था।

जो प्रत्यक्ष तौर पर बना भी रहा। मगर लोकसभा चुनाव में अपेक्षा से कम सीटें मिलने के बाद हार के कारणों के लिए हर एक को दूसरे का मुंह देखना पड़ रहा है। इसी में अप्रत्यक्ष दोषारोपण की स्थितियां बन रही हैं। जिनसे गठबंधन में दरार आने की संभावना अधिक होती जा रही है। यूं तो राज्य में दलीय टूट के बाद से विधायकों की आवाजाही हमेशा ही बनी रही, किंतु पराजय के बाद उसे और हवा दी जा रही है। जिससे आसानी से छिटकने वाले नेता सहजता से अपना पाला बदल लें। इसी प्रकार जिन नेताओं की मानसिकता इधर-उधर आने-जाने की है, वे भी नया दामन थाम लें। इस कड़ी में सबसे आगे आने वालों में प्रहार संगठन के नेता और विधायक बच्चू कडू हैं, जो लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा उम्मीदवार नवनीत राणा के खिलाफ मोर्चा खोल चुके हैं।

इसी प्रकार राकांपा के अजित पवार गुट के नेता छगन भुजबल भी लोकसभा चुनाव से आक्रामक हैं। अब वह सीटों के जल्द समझौते के बहाने गठबंधन पर दबाव बना रहे हैं। उनकी मांगों पर यदि विचार हुआ तो भाजपा पर सीटें अधिक छोड़ने का दबाव बनेगा। इसके अतिरिक्त आम चुनाव में बाहर से समर्थन देने आई महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना(मनसे) के प्रमुख शिवसेना नेता उद्धव ठाकरे पर निशाना साध कर करीब ढाई सौ सीटों पर चुनाव लड़ने का संकेत भाजपा को दे चुके हैं। इन्हीं परिस्थितियों के बीच यदि शिवसेना के शिंदे गुट के कुछ विधायक ठाकरे गुट में वापसी करते हैं या अजित पवार गुट के नेता शरद पवार गुट में जाते हैं तो सीटों को लेकर मामला अधिक पेचीदा हो जाएगा, जिसका नुकसान भाजपा को ही उठाना पड़ सकता है। साफ है कि अब गठबंधन में शामिल दल धीरे-धीरे भाजपा के लिए गले की हड्डी बनते जा रहे हैं।

हिंदी में शपथ लेने के संदेश बहुत गहरे

उमेश चतुर्वेदी

स्थान राष्ट्रपति भवन, साल 2009 की गर्मियां। मंत्रिमंडल का शपथ ग्रहण चल रहा था। मंत्रियों के शपथ लेते ही तालियां बजतीं, और थम जातीं। इसी बीच एक युवा?नेता के?शपथ वाले शब्द जैसे ही थमे...राष्ट्रपति भवन तालियों से गूंज उठा। बाकी मंत्रियों की तुलना में इस बार ताली कुछ ज्यादा तेज और देर तक बजी। वह युवा मंत्री थीं अगाथा संगमा। मेघालय के पूर्व मुख्यमंत्री और लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष पी.ए. संगमा की बेटी अगाथा संगमा की ओर मेहमानों का ध्यान खिंचने की वजह बनी उनकी हिंदी। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि अगाथा पूर्वोत्तर की नेता थीं और तब शपथ ग्रहण में अंग्रेजी का बोलबाला रहता था। हिंदी भाषी क्षेत्रों के पढ़े-लिखे ज्यादातर नेताओं के लिए हिंदी में शपथ लेना हेठी समझी जाती थी।

लेकिन मोदी सरकार में हालात बदल गए हैं। बीते नौ जून की शाम को राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ 71 मंत्रियों ने शपथ ली। इनमें 55 मंत्रियों ने हिंदी में शपथ ली। स्वतंत्र भारत के इतिहास में शायद यह पहला शपथ ग्रहण था, जिसमें दो तिहाई मंत्रियों ने हिंदी में राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य के निर्वहन का संकल्प लिया।

हिंदी के प्रति मोदी सरकार का अनुराग ऐसा मुद्दा है, जिसकी आलोचना उसके कट्टर विरोधी भी नहीं कर सकते। चूंकि शीर्ष नेतृत्व का ज्यादातर हिस्सा हिंदी बोलने-लिखने में सहज है, लिहाजा पहले की तुलना में हिंदी का महत्व मोदी सरकार में बढ़ा है। प्रधानमंत्री मोदी हों या गृहमंत्री अमित शाह या फिर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, तीनों बड़े नेताओं की प्राथमिक भाषा हिंदी ही है। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी हिंदी में ज्यादा सहज हैं। नितिन गडकरी मराठी, हिंदी और अंग्रेजी, तीनों में सहज हैं। भारतीय भाषाओं में सहज ज्यादातर नेताओं की कामकाज की भाषा

चूंकि हिंदी है, शायद इसलिए शपथ ग्रहण समारोह में उन्होंने हिंदी को ही तवज्जो दिया।

दो सौ साल के अंग्रेजी राज और 160 साल के अंग्रेजी शिक्षण के चलते भारत ऐसे मुकाम पर पहुंच गया है, जहां अंग्रेजी को नकारा नहीं जा सकता। बेशक आजाद भारत के शुरुआती नेतृत्व ने क्षेत्रीय भाषाओं और हिंदी को बढ़ावा देने की बात की, लेकिन उसमें बढ़ावा देने की औपचारिकता ज्यादा थी, व्यवहारिकता कम। इसी कारण स्वाधीन भारत के सामाजिक और व्यवस्थागत जीवन में भारतीय भाषाओं के मुकाबले अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ा।

उदारीकरण के बाद जब पश्चिमी आर्थिक हस्तक्षेप बढ़ा, कॉरपोरेटीकरण भारतीय विकास की समानांतर व्यवस्था बना, तो भारतीय भाषाओं के मुकाबले अंग्रेजी का वर्चस्व फिर से बढ़ने लगा। इसका असर हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन के साथ ही नौकरशाही में भी दिखा।?ऐसे माहौल में नरेंद्र मोदी का उभार हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के लिए उम्मीद की नई रोशनी बनकर आया। हिंदी का नौकरशाही में व्यवहार बढ़ा। शासन के शीर्ष के ज्यादा संपर्क में आने वाली नौकरशाही भी हिंदी सीखने को आतुर दिखती है। इन पंक्तियों के लेखक से एक दिन एक शीर्ष नौकरशाह ने हिंदी सिखाने की अपील की। भारतीय भाषाओं और हिंदी के प्रति सरकारी तंत्र में आए इस सकारात्मक बदलाव का ही असर कहा जाएगा कि नई शिक्षा नीति में भी प्राथमिक स्तर की पढ़ाई के माध्यम के लिए हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की वकालत की गई है।

ज्यादातर मंत्रियों का हिंदी में शपथ लेना हो या तंत्र के शीर्ष का हिंदी में बढ़ता व्यवहार हो, इनसे नीचे तक संदेश जाता है। संघ लोक सेवा आयोग ने शीर्ष नौकरशाही के चयन की जो व्यवस्था स्वीकार की है, उसमें भारतीय भाषाओं और हिंदी माध्यम की पढ़ाई के छात्रों की सफलता दर बेहद कम है। इसलिए अब भी नौकरशाही में अंग्रेजी का बोलबाला बना हुआ है। ऐसे नौकरशाह लोकभाषाओं में काम करने में सहज नहीं हैं। आज भी नौकरशाही के स्तर पर बुनियादी सोच से लोकभाषाएं गायब हैं। चिंतन हो या नीति निर्माण, अंग्रेजी का वर्चस्व बना हुआ है। शायद यही वजह है कि अब भी अंग्रेजी को श्रेष्ठि और नागर समाज की भाषा माना जाता है। ऐसे माहौल में भी अगर 55 मंत्री हिंदी में शपथ लेते हैं, तो उसका स्वागत ही होना चाहिए। हिंदी में शपथ सामान्य जन को भारतीय भाषाओं के प्रति स्नेह और सम्मान के लिए प्रेरित तो करती ही है, उन्हें भारत की सांस्कृतिक और भाषायी विरासत से प्यार करना भी सिखाती है।

ध्रुवीकरण की कोशिश ने भाजपा को पहुंचाया नुकसान

अभय कुमार दुबे

आम चुनाव 2024 में भाजपा ने अगर अपेक्षा के अनुरूप प्रदर्शन नहीं किया है और अकेले दम पर बहुमत नहीं पा सकी है तो उसके पीछे कई कारण जिम्मेदार हैं। पहली बात तो यह कि भाजपा ने नकारात्मक तरीके से अपना चुनाव प्रचार अभियान चलाया। कांग्रेस के घोषणापत्र को उसने मुस्लिम लीग का घोषणापत्र करार दिया और उसके नेता लगातार मुस्लिमों के खिलाफ बातें करते रहे। सारी विरोधी पार्टियों पर उसने मुस्लिमों की एजेंट होने का आरोप मढ़ दिया। उसके नेता लोगों को डर दिखाते रहे कि कांग्रेस अगर सत्ता में आई तो आपकी भैंस खोल कर ले जाएगी, महिलाओं का मंगलसूत्र छीन लेगी और ये सब 'घुसपैठियों' और 'अधिक बच्चे पैदा करने वालों' को दे दिया जाएगा। यह कहते हुए उनका इशारा मुसलमानों की तरफ था। लोगों ने जब भाजपा के 2014 और 2019 के

चुनाव प्रचार अभियानों से वर्तमान चुनाव अभियान की तुलना की तो उन्होंने महसूस किया कि पिछले चुनाव विकास के वादे पर लड़े गए थे, जबकि इस बार सांप्रदायिक ध्रुवीकरण करने की कोशिश की गई। दरअसल भारत की आम जनता उदारता और समरसता में विश्वास रखती है, कट्टरता उसे पसंद नहीं है। इसलिए ध्रुवीकरण की कोशिश का उल्टा ही असर हुआ और भाजपा का जो कट्टर समर्थक नहीं था, वह वर्ग उससे छिटक गया। यही कारण है कि आज भाजपा सबसे बड़ा दल होते हुए भी गठजोड़ सरकार बनाने के लिए मजबूर है। लेकिन इसके लिए भी उसकी राह आसान नहीं है। उसके गठजोड़ पार्टनर भी सोचेंगे कि अपमान सहकर उसके साथ रहना क्या उचित होगा? जिन चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार की आज मिलाकर 30 के करीब सीटें आ रही हैं, वे अपने साथ किए गए व्यवहार को भूले नहीं होंगे। नायडू ने काफी पहले से भाजपा के साथ गठजोड़ की कोशिश शुरू कर दी थी, लेकिन भाजपा उनकी उपेक्षा कर वाई।एस। जगनमोहन रेड्डी के साथ समझौते की कोशिश करती रही और आखिरी वक्त में जाकर नायडू के साथ समझौता किया। नीतीश कुमार की तो एग्जिट पोल आने के बाद तक उपेक्षा की गई, क्योंकि उसमें दिखाया गया था कि भाजपा अकेले दम बहुमत हासिल करने वाली है। इसीलिए नीतीश ने जब चुनाव के बाद भाजपा नेताओं से मिलने की कोशिश की तो उन्हें कोई भाव नहीं दिया गया था। ऐसी परिस्थिति में गठबंधन के साथी अब भाजपा का कितना साथ देते हैं, यह देखने वाली बात होगी।

सुखी एवं समृद्ध जीवन के आधार है गणेशजी

भारतीय संस्कृति एक ईश्वर की विशाल कल्पना के साथ अनेकानेक देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना से फलती-फूलती रही है। सब देवताओं की पूजा से प्रथम गणपति की पूजा का विधान है। दरअसल गणेश सुख-समृद्धि, वैभव एवं आनंद के अधिष्ठाता हैं। भगवान गणेश भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, वे सात्विक देवता हैं और विघ्नहर्ता हैं। वे न केवल भारतीय संस्कृति एवं जीवनशैली के कण-कण में व्याप्त है बल्कि विदेशों में भी घर-कारों-कार्यालयों एवं उत्पाद केन्द्रों में विद्यमान हैं। हर तरफ गणेश ही गणेश छाए हुए है। मनुष्य के दैनिक कार्यों में सफलता, सुख-समृद्धि की कामना, बुद्धि एवं ज्ञान के विकास एवं किसी भी मंगल कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने हेतु गणेशजी को ही सर्वप्रथम पूजा जाता है, याद किया जाता है। प्रथम देव होने के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है, लोकनायक का चरित्र हैं। भाद्रपद शुक्ल की चतुर्थी को सिद्धि विनायक भगवान गणेश का जन्मोत्सव मनाया जाता है। गणेश के रूप में विष्णु शिव-पावर्ती के पुत्र के रूप में जन्म थे। उनके जन्म पर सभी देव उन्हें आशीर्वाद देने आए थे। विष्णु ने उन्हें ज्ञान का, ब्रह्मा ने यश और पूजन का, धर्मदेव ने धर्म तथा दया का आशीर्वाद दिया। शिव ने उदारता, बुद्धि, शक्ति एवं आत्म संयम का आशीर्वाद दिया। लक्ष्मी ने कहा कि जहां गणेश रहेंगे, वहां मैं रहूंगी।' सरस्वती ने वाणी, स्मृति एवं वक्तृत्व-शक्ति प्रदान की। सावित्री ने बुद्धि दी। त्रिदेवों ने गणेश को अग्रपूज्य, प्रथम देव एवं रिद्धि-सिद्धि प्रदाता का वर प्रदान किया। इसलिये वे सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वदैशिक लोकप्रियता वाले देव है। वे भारत सहित सिंध और तिब्बत से लेकर जापान और श्रीलंका तक की संस्कृति में समाये हैं। वे जैन सम्प्रदाय में ज्ञान का संकलन करने वाले गणाध्यक्ष के रूप में मौजूद रहते हैं तो बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा का विश्वास है कि गणेश की स्तुति के बिना मंत्र सिद्धि नहीं हो सकती। नेपाली एवं तिब्बती वज्रयानी बौद्ध अपने आराध्य तथागत की मूर्ति के बगल में गणेश को स्थापित करते हैं। भारतीय संस्कृति एक ईश्वर की विशाल कल्पना के साथ अनेकानेक देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना से फलती-फूलती रही है। सब देवताओं की पूजा से प्रथम गणपति की पूजा का विधान है। दरअसल गणेश सुख-समृद्धि, वैभव एवं आनंद के अधिष्ठाता हैं। बड़े एवं साधारण सभी प्रकार के लौकिक कार्यों का आरंभ उनके दिव्य स्वरूप का स्मरण करके किया जाता है। व्यापारी अपने बही-खातों पर 'श्री गणेशाय नमः' लिख कर नये वर्ष का आरंभ करते हैं। प्रत्येक कार्य का शुभारंभ गणपति पूजन एवं गणेश वंदना से किया जाता है। विवाह का मांगलिक अवसर हो या नए घर का शिलान्यास, मंदिर में मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा का उत्सव हो या जीवन में षोड्स संस्कार का प्रसंग, गणपति का स्मरण सर्वप्रथम किया जाता है। सब जगह एक मत से गणेशजी की विघ्नहर्ता शक्ति को स्वीकार किया गया है। दरअसल गणेश सुख-समृद्धि, रिद्धि-सिद्धि, वैभव, आनन्द, ज्ञान एवं शुभता के अधिष्ठाता देव हैं। संसार में अनुकूल के साथ प्रतिकूल, शुभ के साथ अशुभ, ज्ञान के साथ अज्ञान, सुख के साथ दुःख घटित होता ही है। प्रतिकूल, अशुभ, अज्ञान एवं दुःख से परेशान मनुष्य के लिये गणेश ही तारणहार है। गणेशजी की आकृति विचित्र है, किन्तु इस आकृति के आध्यात्मिक संकेतों के रहस्य को यदि समझने का प्रयास किया जाये तो सनातन लाभ प्राप्त हो सकता है। क्योंकि गणेश अर्थात् शिव पुत्र अर्थात शिवत्व प्राप्त करना होगा अन्यथा क्षेम एवं लाभ की कामना सफल नहीं होगी। गजानन गणेश की व्याख्या करें तो ज्ञात होगा कि 'गज' दो व्यंजनों से बना है। 'ज' जन्म अथवा उद्गम का प्रतीक है तो 'ग' प्रतीक है गति और गंतव्य का। अर्थात् गज शब्द उत्पत्ति और अंत का संकेत देता है-जहाँ से आये हो वहीं जाओगे। जो जन्म है वही मृत्यु भी है। ब्रह्म और जगत के यथार्थ को बनाने वाला ही गजानन गणेश है।

गणेशजी की सम्पूर्ण शारीरिक रचना के पीछे भगवान शिव की व्यापक सोच रही है। एक कुशल, न्यायप्रिय एवं सशक्त शासक एवं देव के समस्त गुण उनमें समाहित किये गये हैं। गणेशजी का गज मस्तक हैं अर्थात वह बुद्धि के देवता हैं। वे विवेकशील हैं। उनकी स्मरण शक्ति अत्यन्त कुशाग्र हैं। हाथी की भ्रांति उनकी प्रवृत्ति प्रेरणा का उद्गम स्थान धीर, गंभीर, शांत और स्थिर चेतना में है। हाथी की आंखें अपेक्षाकृत बहुत छोटी होती हैं और उन आँखों के भावों को समझ पाना बहुत कठिन होता है। दरअसल गणेश तत्ववेत्ता के आदर्श रूप हैं। वर्तमान राजनीतिज्ञों एवं शासनाध्यक्षों को गणेशजी से प्रेरणा लेनी चाहिए। गण के नेता में गुरुता और गंभीरता होनी चाहिए। उनके स्थूल शरीर में वह गुरुता निहित है। उनका विशाल शरीर सदैव सतर्क रहने तथा सभी परिस्थितियों एवं कठिनाइयों का सामना करने के लिए तत्पर रहने की भी प्रेरणा देता है। उनका लंबोदर दूसरों की बातों की गोपनीयता, बुराइयों, कमजोरियों को स्वयं में समाविष्ट कर लेने की शिक्षा देता है तथा सभी प्रकार की निंदा, आलोचना को अपने उदर में रख कर अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहने की प्रेरणा देता है। छोटा मुख कम, तर्कपूर्ण तथा मृदुभाषी होने का द्योतक है।

गणेश का व्यक्तित्व रहस्यमय हैं, जिसे पढ़ पाना एवं समझ पाना हर किसी के लिये संभव नहीं है। शासक भी वही सफल होता है जिसके मनोभावों को पढ़ा और समझा न जा सके। इस प्रकार अच्छा शासक वही होता है जो दूसरों के मन को तो अच्छी तरह से पढ़ ले परन्तु उसके मन को कोई न समझ सके। दरअसल वे शौर्य, साहस तथा नेतृत्व के भी प्रतीक हैं। उनके हेरांब रूप में युद्धप्रियता का, विनायक रूप में यक्षों जैसी विकरालता का और विघ्नेश्वर रूप में लोकरंजक एवं परोपकारी स्वरूप का दर्शन होता है। गण का अर्थ है समूह। गणेश समूह के स्वामी हैं इसीलिए उन्हें गणाध्यक्ष, लोकनायक, गणपति आदि नामों से पुकारा जाता है। गज मुख पर कान भी इस बात के प्रतीक हैं कि शासक जनता की बात को सुनने के लिए कान सदैव खुले रखें। यदि शासक जनता की ओर से अपने कान बंद कर लेगा तो वह कभी सफल नहीं हो सकेगा। शासक को हाथी की ही भांति शक्तिशाली एवं स्वाभिमानी होना चाहिए। अपने एवं परिवार के पोषण के लिए शासक को न तो किसी पर निर्भर रहना चाहिए और न ही उसकी आय के स्रोत ज्ञात होने चाहिए। हाथी बिना झुके ही अपनी सूँड की सहायता से सब कुछ उठा कर अपना पोषण कर सकता है। शासक को किसी भी परिस्थिति में दूसरों के सामने झुकना नहीं चाहिए।

गणेशजी सात्विक देवता हैं उनके पैर छोटे हैं जो कर्मेन्द्रिय के सूचक और सत्व गुणों के प्रतीक हैं। मूषक गणपति का वाहन है जो चंचलता एवं दूसरों की छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने का प्रेरक है। दरअसल मूषक अत्यंत छोटा एवं क्षुद्र प्राणी है। इसे अपना वाहन बना कर गणपति ने उसकी गरिमा को बढ़ाया है और यह संदेश दिया है कि गणनायक को तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति के प्रति भी स्नेहभाव रखना चाहिए। गणेशजी की चार भुजाएँ चार प्रकार के भक्तों, चार प्रकार की सृष्टि और चार पुरुषार्थों का ज्ञान कराती है। गणेशजी को प्रथम लिपिकार माना जाता है उन्होंने ही देवताओं की प्रार्थना पर वेद व्यासजी द्वारा रचित महाभारत को लिपिबद्ध किया था। वर्तमान काल में स्वतंत्रता की रक्षा, राष्ट्रीय चेतना, भावनात्मक एकता और अखंडता की रक्षा के लिए गणेशजी की पूजा और गणेश चतुर्थी के पर्व का उत्साहपूर्वक मनाने का अपना विशेष महत्व है। गणेशजी को शुद्ध घी, गुड और गेहूँ के लड्डू-मोदक बहुत प्रिय हैं। ये प्रसन्नता अथवा मुदित चित्त के प्रतीक हैं। ये तीनों चीजें सात्विक एवं स्निग्ध हैं अर्थात उत्तम आहार हैं। सात्विक आहार बुद्धि में स्थिरता लाता है। उनका उदर बहुत लम्बा है। ऋद्धि-सिद्धि गणेशजी की पत्नियाँ हैं। वे प्रजापति विश्वकर्ता की पुत्रियां हैं। गणेश की पूजा यदि विधिवत की जाए, तो इनकी पतिव्रता पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि भी प्रसन्न होकर घर-परिवार में सुख-शांति-समृद्धि और संतान को निर्मल विद्या-बुद्धि देती है। सिद्धि से 'क्षेम' और ऋद्धि से 'लाभ' नाम के शोभा सम्पन्न दो पुत्र हुए। जहां भगवान गणेश विघ्नहर्ता हैं तो उनकी पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि यशस्वी, वैभवशाली व प्रतिष्ठित बनाने वाली होती है। वहीं शुभ-लाभ हर सुख-सौभाग्य देने के साथ उसे स्थायी और सुरक्षित रखते हैं। जन-जन के कल्याण, धर्म के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने एवं सुख-समृद्धि-निर्विघ्न शासन व्यवस्था स्थापित करने के कारण मानव-जाति सदा उनकी ऋणी रहेगी।

शिव सत्य है शिव सुंदर है

शिव सत्य है और सत्य ही सुंदर है। यह सृष्टि शिव ने रची है। शिव की रची हुई रचना कैसे असत्य, कुरूप और असुंदर हो सकती है। न तो शिव असत्य व कुरूप है और न ही उनकी रचना असत्य और कुरूप। शिव की रची सृष्टि मनभावनी, लुभावनी ही है। यहाँ विरह नहीं, आनंद ही आनंद है। विरह में व्याकुलता, व्यग्रता का समावेश होता है। आनंद की अनुभव-अनुभूति तो मिलने में होती है। सभी प्राणी शिव की प्राप्ति की लालसा में पूर्णतः लालायित रहते हैं, यही प्राप्ति की लालसा पिता व पुत्र के मिलन की आकांक्षा, भक्त को भगवान के प्रति भक्ति की भावना है। भावना में विरह नहीं, व्याकुलता नही, प्यास नहीं सिर्फ आस व उम्मीद भरी चाह होती है। सुंदरता के प्रति, सत्यता के प्रति अंतरात्मा में उत्पन्न होने वाली चाह ही शिव का सौंदर्य है। शिव के प्रति प्यार है, शिव के प्रति मुहब्बत है। मुहब्बत व प्यार में तो जीवन कुर्वान होते हैं, फिर भक्ति में जीवन का अवसान व कुर्वानी शिव की प्राप्ति की प्रतीकात्मक प्रेम ही तो है। इसके बिना भक्ति कहाँ? भक्ति तो अधूरी ही कही जाती है। शिव ने जब सृष्टि रची है तो उसकी संतान उनकी प्राप्ति में कुर्बानी अगर करते हैं, तभी तो सुंदरता की परख होती है। कुरूप, असुंदर, लोभी व स्वार्थी कुर्वानी नहीं करते हैं। वह तो अपना दांव साधते हैं। यही संकीर्ण भावना तो शिव के प्रति अरूचिकर है, जो कुरूपता को परिभाषित करता है। भेद तो न शिव में है और न ही सृष्टि में, भेद-भावना न तो संतान में है, और न ही पिता में। दृष्टिकोण का परिवर्तन होना ही दीन-भावना है। जीव की यही भावना शिव की प्राप्ति में बाधक है। शिव के प्रति जीव जगे, शिव के प्रति जागना ही जीव की सत्यता व सुंदरता है। सोना तो जीव के लिए खोना ही होता है। जो जागा सो पाया जो सोया सो खोया। सत्य को पाना इतना आसान नहीं है। जिसका दिल कुर्वान है, शिव के लिए वही शिव को पा लेता है। शिव यानी कल्याण की भावना, कण-कण, जन-जन में अपनापना का भाव, दया, स्नेह, प्रेम, आत्मीयता का दरस-परस आपसी तालमेल ही शिव प्राप्ति की कल्याण कारी भावना है। शिव द्वारा रची वस्तुओं, प्राणियों प्रतिप्रेम संरक्षण की उदार भावना ही शिव पूजा है। इसी भाव पूजा में शिव की प्राप्ति सूत्र व सिद्धांत निहित होती है। शिव कण-कण में है जन-जन में है, दृष्टि का परिष्कार शिव संबोधि है। श्याम रंग सावला गौ वर्ण गोरा दृष्टिदोष है। रूप और भावना का अंतर प्रीत में बाधक व विरोध सूचक है। रूप रंग भाव नहीं है। यह तो भगवत प्राप्ति ही आत्मिक चाह की छछनवी तरसती, लगन व जिज्ञासा है जो भगवान की कृपा पाकर ही संतप्त को शक्ति प्राप्त हो सकती है। शिव ही संतप्त को शक्ति प्रदान करने में समर्थ सता और जगत नियंता, जगदीश्वर आनंददाता व अधिष्ठात्व है। इसके बिना तो स्थिति परिस्थिति विलकुल विपरीत व विपन्न ही समझना उचित है। यह बात न तो अलंकारित है और न ही प्रतिकात्मक। यह तो विरोधाभास का सूचक शब्द शिव को परिभाषित करने में निसंदेह निरर्थक है। यही जीव को जीवन का जंजाल है। इससे शिव की कृपा ही उबारने में समर्थ है। संतान व पिता में विभेद जीव व जगत के कल्याण में बाधक है। विचारों व भावनाओं में तालमेल व समानता होना अत्यंत जरूरी है। शिव की शक्ति इसी को समर्थ व सत्य सिद्ध करती है।

● मुकेश ऋषि

आखिर लक्ष्मीजी को जय-विजय ने दरवाजे पर क्यों रोक दिया था?

अपनी शर्त के अनुसार कर्दम जी सन्यस्थ होकर वन जाने लगे तब देवहूति ने मुसकुराते हुए उनको रोका और कहा- प्रभो! यदि आप वन में चले जाएंगे तो इन कन्याओं के लिए योग्य वर कौन ढूंढ़ेगा और मेरे सुख-दुख का निवारण कौन करेगा?

सच्चिदानंद रूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे !
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयंनुमः॥

भगवान के मुख से ब्राह्मण और अग्नि इन दोनों का जन्म हुआ है। भगवान को दोनों मुखों से खिलाया जाता है। अग्नि के मुख से स्वाहा और ब्राह्मण के मुख से आहा। ब्राह्मण गरम-गरम मालपूआ और रबड़ी पाते हैं तो डकार लेकर गद-गद हो जाते हैं। आइए ! अब आगे की कथा प्रसंग में चलते हैं। एक बात यहाँ गौर करने के लायक है, जय-विजय ने सनक, सनन्दन, सनातन और सनतकुमार आदि महात्माओं के दर्शन में विघ्न डाला, यह राक्षसी आचरण है इसलिए उनको राक्षस होने का शाप मिला। सनकादि ऋषियों ने जय-विजय पर क्रोध किया तो उनको भी वैकुंठ धाम के दर्शन से वंचित होना पड़ा। यह सब भगवान की लीला है। एक बार लक्ष्मी जी को भी जय-विजय ने यह कहकर दरवाजे पर ही रोक दिया था कि प्रभु अभी शयन कर रहे हैं आप अंदर नहीं जा सकती। लक्ष्मी जी ने प्रभु से शिकायत की, प्रभु ने कहा— यदि तुम्हारे कहने पर इन्हें निकालूँगा, तो लोग मेरे बारे में भला-बुरा कहेंगे, घरवाली के कहने पर निकाल दिया। जब किसी संत का अपमान करेंगे तब निकालूँगा। भगवान की चतुराई देखिए।

भगवान कहते हैं कि ब्राह्मण के मुख से खाकर जितना मैं प्रसन्न होता हूँ, उतना अग्नि मुख से नहीं। प्रभु ने स्पष्ट कह दिया कि ब्राह्मण मेरा प्रत्यक्ष मुख है। खाता वह है और तृप्त मैं होता हूँ। भगवान ने यहाँ पर ब्राह्मणों की बहुत प्रशंसा की और सनक, सनन्दन सनातन और सनतकुमारों को सम्मानपूर्वक नमन करके विदा कर दिया। सनकादि के शाप से ही वे आज दिति माँ के गर्भ में आ गए हैं। यह सारा रहस्य ब्रह्मा जी ने देवताओं को बताया और कहा- आप लोग घबराए नहीं भगवान नारायन कृपा करेंगे और कष्ट का निवारण करेंगे। देवता बिचारे समय की प्रतीक्षा करने लगे। सौ वर्षों के बाद दिति ने दो पुत्रों को जन्म दिया जिंका नाम हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु हुआ। हिरण्याक्ष के साथ वराह भगवान का युद्ध हुआ, हिरण्याक्ष का वध करके भगवान ने पृथ्वी का भार उतारा।

बोलिए वराह भगवान की जय। --

कर्दम मुनि की तपस्या और देवहुति के साथ उनका विवाह

विदुर जी ने पूछा- मैत्रेय जी महाराज! अब मुझे देवहूति और कर्दम मुनि की कथा सुनाइए जिन्होने मैथुनी धर्म के द्वारा इस संसार की रचना की थी।

मैत्रेय जी ने कहा- विदुर जी महाराज, जब ब्रह्मा जी ने अपने मानस पुत्र कर्दम मुनि से सृष्टि विस्तार की बात कही, तब कर्दम मुनि ने दस हजार वर्षों तक कठोर तपस्या की। सतयुग के आरंभ में भगवान नारायण ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए और देवहूति के रूप-सौंदर्य के बारे में बताया। भगवान के चले जाने के बाद स्वायंभुव मनु और शतरुपा अपनी सुलक्षणा बेटी देवहूति के साथ कर्दम मुनि के आश्रम पर पहुंचे। अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव रखा। कर्दम जी ने कहा- मैं आपकी साध्वी कन्या को अवश्य स्वीकार करूंगा किन्तु एक शर्त पर। इसके संतान हो जाने के बाद मैं सन्यस्थ होकर चला जाऊँगा।

अतो भजिष्ये समयेन साध्वी यावत् तेजो
विभृयादात्मनो मे
अतो धर्मान् पारमहंस्यमुख्यान् शुक्ल प्रोक्तान् बहु मन्ये
विहिस्त्रान।।

मनु और शतरुपा ने स्वीकृति दे दी। दोनों का बड़ी धूम-धाम से विवाह सम्पन्न हुआ। अपनी कन्या-दान करने के पश्चात मनु महाराज निश्चिंत हो गए। देवहूति अपने पति कर्दम मुनि की प्रेम पूर्वक सेवा करने लगी। एक दिन पति कर्दम मुनि को प्रसन्न चित्त देखकर देवहूति ने कहा- प्रभो! आपने विवाह के समय जो प्रतिज्ञा की थी कि गर्भाधान होने तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगा अब उसकी पूर्ति होनी चाहिए। मनु नंदिनी देवहूति की बात सुनकर कर्दम जी ने एक स्वेच्छाचारी विमान की रचना की जिसमें स्वर्ग की सारी सुविधायें मौजूद थीं। आज के five star hotel की कल्पना हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत पहले ही कर ली थी। उस विमान में दोनों ने सैंकड़ों वर्षों तक विहार किया। समय आने पर देवहूति ने एक ही साथ नौ कन्याओं को जन्म दिया। अपनी शर्त के अनुसार कर्दम जी सन्यस्थ होकर वन जाने लगे तब देवहूति ने मुसकुराते हुए उनको रोका और कहा- प्रभो! यदि आप वन में चले जाएंगे तो इन कन्याओं के लिए योग्य वर कौन ढूंढ़ेगा और मेरे सुख-दुख का निवारण कौन करेगा? कर्दम जी ने कहा- मनुनंदिनी ! अपने बारे में तुम इस प्रकार खेद मत करो। तुम्हारे गर्भ में अविनाशी भगवान विष्णु शीघ्र ही पधारेंगे। इस प्रकार बहुत दिन बीत जाने पर भगवान मधुसूदन कपिल मुनि के रूप में देवहूति के गर्भ से अवतीर्ण हुए। आकाश से पुष्पवृष्टि होने लगी। मधुर संगीत बजने लगे। चारों दिशाएँ आनंदित हो गईं।

बोलिए कपिल भगवान की जय-----

समय आने पर कर्दम जी ने अपनी कन्याओं का विवाह ऋषि-मुनियों के साथ कर दिया। स्वयं अपने पुत्र कपिल भगवान का चिंतन करते हुए संन्यास मार्ग पर चल दिए। हमारी भारतीय नारियों की वाकपटुता देखिए, देवहूति के वाकचातुर्य के सामने कर्दम मुनि को झुकना पड़ा। उन्हें सन्यस्थ होने के पहले सम्पूर्ण गृहस्थ कर्म करना पड़ा।

सती सावित्री की वाकपटुता के सामने मृत्यु के देवता यमराज को भी हार माननी पड़ी थी और सत्यवान के प्राण लौटाने पड़े थे। हमारी भारतीय नारियों का ऐसा आदर्श चरित्र रहा है। वहीं कपिल भगवान ने अपनी माँ देवहूति को प्रसिद्ध सांख्य शास्त्र, अष्टांग योग और तत्वज्ञान का उपदेश दिया, जिससे माँ देवहूति को मोक्ष पद की प्राप्ति हुई। जहां उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई उस स्थान को सिद्धिप्रद कहते हैं। इस प्रकार आज यहाँ प्रथम दिवस की कथा सम्पन्न हुई। आइए ! हरि नाम लें।

क्या आपकी कुंडली में भी है कालसर्प दोष, महादेव करेंगे निवारण करें, ये उपाय

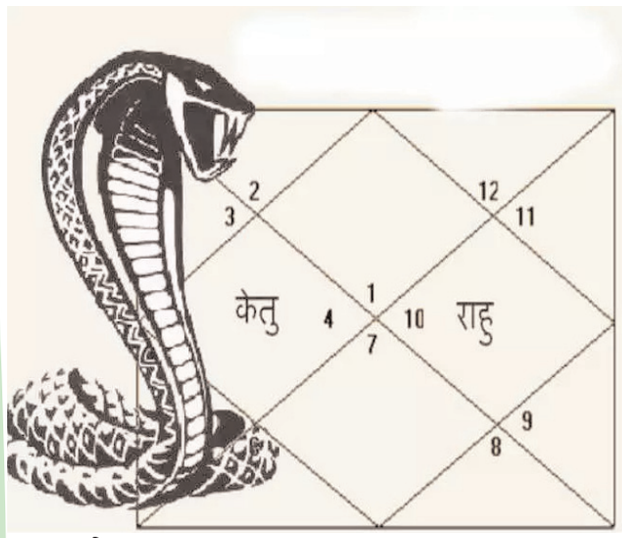

ज्योतिष शास्त्र में कालसर्प दोष को बेहद हानिकारक योग माना जाता है। जिन लोगों की कुंडली में यह दोष पाया जाता है उन्हें अपने जीवन में सफलता पाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। जिन व्यक्तियों के जीवन में कालसर्प दोष होता है वह मानसिक और शारीरिक रूप से परेशान रहते हैं। इसलिए कालसर्प दोष की पूजा पूरे विधि विधान से की जानी चाहिए।

कालसर्प दोष निवारण

अगर आप भी कालसर्प दोष से बिल्कुल परेशान है तो आप अपनी क्षमता के अनुसार चांदी या तांबे के नाग नागिन को जोड़े को किसी मंदिर या फिर जल में परवाह कर सकते हैं, इस तरह से आपको इस दोष से मुक्ति मिल जाती है। इसके अलावा जीवन में समस्याओं से छुटकारा मिलता है।

इस दिन आपको सुबह-सुबह स्नान करना चाहिए और पानी में काले तिल जरूर मिला लें। इसके बाद विधि के अनुसार, शिव पूजन करें और नाग नागिन के जोड़े को भगवान शिव को चढ़ा दीजिए। इस तरह से भगवान शिव से अपने दोष निवारण के लिए भावपूर्ण प्रार्थना कीजिए।

जिस व्यक्ति की कुंडली में कालसर्प दोष है उसे अपने घर के मंदिर में रोजाना शिवलिंग पर जलाभिषेक करना चाहिए। इसके अलावा प्रदोष तिथि के दिन रुद्राभिषेक करें।

अगर आपकी कुंडली में भी कालसर्प दोष है तो आपको रोजाना अपने कुल देवता की पूजा करना चाहिए, इसके अलावा रोजाना 11 बार हनुमान चालीसा का पाठ करें।

कालसर्प दोष निवारण मंत्र

- नागदेवताय नमः
- नवकुलाय विद्यमहे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्।
- क्रौं नमो अस्तु सर्पेभ्यो कालसर्प शांति कुरु कुरु स्वाहा ।। सर्प मंत्र।।
- नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः

पैरों की रेखाएं देखकर जान सकते हैं अपना भाग्य, इस तरह के पैर होते हैं शुभ

पुराने जमाने के गुरुओं व ऋषियों के पैर धोने की परंपरा थी। क्योंकि ऐसे महापुरुषों के चरणों की रज बेहद कल्याणकारी मानी जाती थी। हर व्यक्ति व प्राणी के शरीर का आधार पैर हैं। वहीं पैर के कमजोर होने पर शरीर ठहर नहीं सकता है। वहीं जन्मकुण्डली की ग्रह स्थिति, हाथ में स्थित रेखाओं, ग्रह-नक्षत्रों, मस्तिष्क की रेखाओं और व्यक्ति के चाल से भी भविष्य का पता लगाया जा सकता है।

प्राचीन काल में व्यक्ति के चरणों की गति और मति से लोग सरलतापूर्वक भविष्य के बारे में बता देते थे। पैरों की चिन्हों, रेखाओं और बनावट से भी भविष्य का पता लगाया जाता है। वैसे तो पैर के करीब बीस-पच्चीस भेद बताए गए हैं, जिनमें चार मुख्य हैं। जिनको सर्वोत्तम, उत्तम, मध्यम और अधम श्रेणी में रखा जाता है।

सर्वोत्तम श्रेणी

जिन जातकों के पैर लाल कमल की आभा वाले, कोमल तलवे हो, सटी हुई उंगलियां हों, पसीने से रहित, ताम्बे के समान रंग के नाखून और ऐड़ियां सुन्दर हों। ऐसा व्यक्ति देश और विदेश में ख्याति पाते हैं। साथ ही यह जातक हर जगह सम्मानित होते हैं।

उत्तम पैर

जिन जातकों के पैरों का गुलाबी रंग का तलवा, पसीने रहित पैर, पैरों की अदृश्य नसें, लालिमा लिए हुए साधारण नाखून व पैर मुलायम हों। तो ऐसा जातक का पैर उत्तम माना गया है। इस तरह के पैर वाला जातक उत्तम सलाह देने वाला, तीक्ष्ण बुद्धि वाला और थोड़े से परिश्रम से प्रसिद्ध होने वाला होता है।

मध्यम पैर

मध्यम पैर वह हैं जिनका तलवा कोमल होने के साथ सर्पाकार, हलका गुलाबी या पीलापन, गेहुआं रंग का नाखून और मामूली नस दिखाई पड़ें। वहीं पैरों की उंगलियों पर साधारण बाल हों। तो ऐसा जातक दूर की सोचने वाला, पारिवारिक चिंता से ग्रस्त और वार्तालाप में निपुण होता है।

अधम पैर

अधम पैर वाला व्यक्ति के जीवन में संघर्ष की अधिकता रहती है। जिन जातकों की ऐड़ी मोटी और जगह-जगह से कटी-फटी हों, पैर टेढ़ा-मेड़ा हो, नाखून चिपटे व छोटे-छोटे हों, पैर स्पर्श में कठोर, ऊपरी भार पर उभरी हुई नसें और काला या हरापन लिया पैर खराब माना जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने गलत फैसलों के कारण स्वयं मुसीबतों को आमंत्रित करता है। वहीं पैर की उंगलियां रूखी हों तो व्यक्ति के जीवन में दरिद्रता का आगमन होता है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

संसद सत्र से पहले अचानक खरगे के घर पहुंचे रिजिजू

नईदिल्ली। नई लोकसभा के पहले सत्र से एक सप्ताह पहले संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात की। रिजिजू ने कांग्रेस प्रमुख के 10, राजाजी मार्ग स्थित आवास पर खड़गे से मुलाकात की, जिसे शिष्टाचार भेंट बताया गया। बाद में मंत्री ने एक्स पर एक पोस्ट में बैठक की एक तस्वीर साझा की। उन्होंने लिखा कि राज्यसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे जी के साथ मेरी सुखद शिष्टाचार मुलाकात हुई। उन्होंने मेरे साथ अपने जीवन के कई मूल्यवान अनुभव साझा किए। हम सब मिलकर देश के लिए काम करेंगे। पिछले सप्ताह मंत्रालय का कार्यभार संभालते हुए रिजिजू ने कहा था कि संख्या बल के आधार पर सरकार या विपक्ष को एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोई जरूरत नहीं है और उन्होंने जोर देकर कहा कि वह संसद के सुचारू कामकाज के लिए सभी तक पहुंचेंगे। 18वीं लोकसभा का पहला सत्र 24 जून को शुरू होगा।

कांग्रेस ने मोदी संग पोप फ्रांसिस की मुलाकात का उड़ाया मजाक

नईदिल्ली। कांग्रेस पार्टी की केरल इकाई द्वारा सोशल मीडिया पर एक व्यंग्यात्मक पोस्ट की गई थी, जिसमें इटली में जी7 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पोप फ्रांसिस के बीच हुई मुलाकात का मज़ाक उड़ाया गया था, जिस पर भाजपा ने नाराज़गी जताई है। इस पोस्ट को अब हटा दिया गया है, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी की पोप के साथ एक तस्वीर थी और टिप्पणी थी, आखिरकार, पोप को भगवान से मिलने का मौका मिल गया! भाजपा ने तुरंत ही इस पोस्ट की कड़ी निंदा की और कांग्रेस पर प्रधानमंत्री मोदी और पोप दोनों का अपमान करने का आरोप लगाया। केरल भाजपा अध्यक्ष के. सुरेंद्रन ने ट्वीट किया, @INCIndia केरल X हैंडल, जो कट्टरपंथी इस्लामवादियों या शहरी नक्सलियों द्वारा चलाया जा रहा है, राष्ट्रवादी नेताओं के खिलाफ़ अपमानजनक और अपमानजनक सामग्री पोस्ट करना जारी रखता है। अब, यह सम्मानित पोप और ईसाई समुदाय का मज़ाक उड़ाने तक गिर गया है।

ईवीएम पर जारी बहस में सैम पित्रोदा भी कूदे

नई दिल्ली। इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) को हैक करने की संभावना पर चल रही बहस में सैम पित्रोदा भी शामिल हो गए हैं। सैम पित्रोदा ने कहा है कि ईवीएम में हेरफेर किया जा सकता है। एक्स पर पित्रोदा ने कहा कि मैंने इलेक्ट्रॉनिक्स, टेलीकॉम, आईटी, सॉफ्टवेयर, जटिल सिस्टम और कई अन्य क्षेत्रों में लगभग 60 साल बिताए हैं। मैंने ईवीएम प्रणाली का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है और मेरा मानना है कि इसमें हेरफेर करना संभव है। दूरसंचार उद्योग की मशहूर हस्ती सैम पित्रोदा ने पिछले महीने इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पद से अपना इस्तीफा दे दिया था। सैम पित्रोदा से पहले एलोन मस्क ने भी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की थी। इसमें मनुष्यों या एआई द्वारा इवीएम को हैक किया जा सकता है। इसके बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने टेस्ला के सीईओ की चिंताओं को दोहराया और चेतावनी दी कि जब संस्थानों में जवाबदेही की कमी होती है।

सीआईडी के सामने पेश हुए पूर्व सीएम येदियुरप्पा

बेंगलूरू। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता बीएस येदियुरप्पा सोमवार को सीआईडी के समक्ष पेश हुए। दरअसल, उनपर एक नाबालिग के साथ यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया गया है। नाबालिग की मां ने पॉक्सो एक्ट के तहत उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। इस मामले पर येदियुरप्पा ने कहा था कि वह 17 जून यानी की सोमवार को सीआईडी के सामने पेश होंगे। 11 जून को बंगलूरु की एक अदालत ने पॉस्को केस में पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किया था। सीआईडी के समक्ष पेश होने से पहले येदियुरप्पा ने मीडिया से बात की। उन्होंने कहा, मैं सीआईडी के पास जा रहा हूं। उन्होंने राज्य सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, राज्य के लोग कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं। महंगाई से जनता त्रस्त है। पेट्रोल और डीजल के दामों को बढ़ाने का राज्य सरकार का फैसला गलत है। यह एक क्राइम है। राज्य सरकार को यह फैसला वापस लेना चाहिए।

बंगाल हिंसा :भाजपा के केंद्रीय दल का कूचबिहार दौरा

कोलकाता। लोकसभा चुनाव के बाद पश्चिम बंगाल में भाजपा के कार्यकर्ताओं के खिलाफ हुई कथित हिंसा के बाद स्थिति का जायजा लेने के लिए भाजपा के चार सदस्यीय केंद्रीय दल ने सोमवार को कूचबिहार का दौरा किया। भाजपा के इस चार सदस्यीय दल में संयोजक बिप्लब देब, पार्टी के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद और दो राज्यसभा सदस्य बृजलाल और कविता पाटीदार शामिल हैं। केंद्रीय दल भाजपा के उन कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेगा जो चार जून को लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद कथित तौर पर हिंसा के कारण अपने घरों से विस्थापित हो गए हैं। बिप्लब देव ने संवाददाताओं से कहा कि चुनाव के बाद हिंसा करना, राज्य की सत्ता में काबिज तृणमूल कांग्रेस की आदत बन गई है और अब तो चुनाव परिणाम आने के बाद भी हिंसा की जा ही है। देब ने कहा, जितनी जल्दी तृणमूल कांग्रेस विपक्षी दलों पर हमला करने का अपना रुख बदलेगी, पार्टी के लिए उतना ही अच्छा होगा।

वाराणसी से किसानों को आज बड़ा तोहफा देंगे मोदी

ग्रैंड-वेलकम के लिए काशी तैयार

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री मोदी मंगलवार को अपने लोकसभा क्षेत्र वाराणसी का दौरा करने, किसानों से बातचीत करने और श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में गंगा आरती में भाग लेने के लिए तैयार हैं। शाम चार बजे बाबतपुर स्थित लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर उतरने के बाद प्रधानमंत्री मोदी का वाराणसी दौरा साढ़े चार घंटे तक चलेगा। प्रधानमंत्री सबसे पहले सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी करने के लिए किसान सम्मेलन में शामिल होंगे, इस योजना से काशी के 2,76,665 किसानों को लाभ मिलेगा। कथित तौर पर किसानों को 20,000 करोड़ रुपये से अधिक वितरित किए जाएंगे।

किसान सम्मेलन में पीएम मोदी 21 किसानों से व्यक्तिगत मुलाकात करेंगे और उनके उत्पादों की समीक्षा करेंगे। एएनआई के मुताबिक, उनका दौरा मुख्य रूप से क्षेत्र के किसानों को सम्मानित करने के लिए है। कार्यक्रम की व्यवस्था के लिए भाजपा पार्टी कार्यकर्ताओं को प्रभारी बनाया गया है। तीसरी बार प्रधान मंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद, पीएम नरेंद्र मोदी ने किसान कल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए पीएम किसान निधि की 17 वीं किस्त जारी करने की मंजूरी देते हुए अपनी पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए। इस प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए, प्रधान मंत्री प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) के तहत लगभग 9.26 करोड़ लाभार्थी किसानों को 20,000 करोड़ रुपये से अधिक की 17वीं किस्त जारी करेंगे।

पीएम-किसान के तहत अब तक 11 करोड़ से ज्यादा पात्र किसान परिवारों को 3.04 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का लाभ मिल चुका है। शाम करीब 7 बजे प्रधानमंत्री दशाश्वमेध घाट पर गंगा आरती देखेंगे। वह रात करीब 8 बजे काशी विश्वनाथ मंदिर में पूजा और दर्शन भी करेंगे। एएनआई के साथ एक साक्षात्कार में, काशी विश्वनाथ मंदिर के सीईओ विश्व भूषण मिश्रा ने कहा, उन्हें प्रधानमंत्री की यात्रा के लिए एक प्रोटोकॉल मिला है, जिसमें महादेव की पूजा के लिए 20-25 मिनट की अनुमति दी गई है। उन्होंने कहा, यह सुखद आश्चर्य है कि प्रधानमंत्री की आखिरी बार धाम की यात्रा गंगा सप्तमी के दिन हुई थी। इस वर्ष भी मां गंगा का त्रिदिवसीय उत्सव आज से शुरू हो रहा है और प्रधानमंत्री उसी अवधि में आ रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर में आतंक की कमर तोड़ने की तैयारी

■ **अमित शाह ने सुरक्षा एजेंसियों को दिया खास निर्देश**

नईदिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई अपने निर्णायक चरण में है। उन्होंने कहा कि हाल की घटनाओं से संकेत मिलता है कि कैसे आतंकवाद हिंसा के अत्यधिक संगठित कृत्यों से घटकर महज एक छद्म युद्ध बनकर रह गया है। हाल के आतंकवादी हमलों के मद्देनजर केंद्र शासित प्रदेश में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा के लिएनॉर्थ ब्लॉक में एक उच्च स्तरीय बैठक के दौरान, उन्होंने सुरक्षा एजेंसियों को सफलता हासिल करने के लिए कश्मीर की तरह जम्मू संभाग में भी क्षेत्र प्रभुत्व और शून्य-आतंकवाद योजनाओं को लागू करने का निर्देश दिया।

एक अन्य बैठक में, गृह मंत्री ने दक्षिण कश्मीर हिमालय में अमरनाथ गुफा मंदिर की वार्षिक तीर्थयात्रा की तैयारियों की समीक्षा की। शाह ने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार की प्राथमिकता अमरनाथ यात्रा का सुचारू संचालन सुनिश्चित करना है और तीर्थयात्रियों को किसी भी कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़े। उन्होंने सुरक्षा एजेंसियों को सतर्क रहने और 29 जून से 19 अगस्त तक यात्रा के लिए पर्याप्त कर्मियों की तैनाती सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया। अमरनाथ यात्रा पर बैठक में शाह ने अधिकारियों को एक अच्छी तरह से स्थापित मानक संचालन प्रतिक्रिया तंत्र सहित प्रभावी सुरक्षा व्यवस्था के लिए पूर्ण अंतर-एजेंसी समन्वय सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। गृह मंत्री ने तीर्थयात्रा के लिए मजबूत सुरक्षा कवर की आवश्यकता पर भी जोर दिया और अधिकारियों से सभी मार्गों और प्रमुख स्थानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि शाह ने शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों को जम्मू क्षेत्र में उभरते आतंकवाद पर कड़ी प्रतिक्रिया देने और किसी भी कीमत पर इसके पुनरुत्थान को रोकने का निर्देश दिया। उन्होंने सुरक्षा एजेंसियों को एरिया डोमिनेशन प्लान और जीरो टेरर प्लान के जरिए कश्मीर घाटी में हासिल की गई सफलताओं को जम्मू में भी दोहराने का निर्देश दिया। गृह मंत्री ने वैष्णो देवी और शिवखोरी सहित सभी तीर्थ स्थलों की सुरक्षा के लिए समन्वित प्रयास करने का भी आह्वान किया।

शाह ने निर्देश दिया कि राजमार्गों पर अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए जाएं और जम्मू-कश्मीर में सक्रिय आतंकवादियों और उनके समर्थकों पर नज़र रखने के लिए मानव खुफिया जानकारी का लाभ उठाया जाए। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल, जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे, सेना प्रमुख मनोनीत लेफ्टिनेंट जनरल उपेन्द्र द्विवेदी, केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला, खुफिया ब्यूरो के निदेशक तपन डेका, सीआरपीएफ के महानिदेशक अनीश दयाल उच्च स्तरीय बैठक के दौरान सिंह, जम्मू-कश्मीर पुलिस के महानिदेशक आरआर स्वैन और अन्य शीर्ष सुरक्षा अधिकारी उपस्थित थे।

एनसीईआरटी आरएसएस के साथ मिलकर संविधान पर कर रही हमला: जयराम रमेश

नईदिल्ली। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) ने पाठ्यपुस्तकों में कुछ बदलाव किया है। इसके बाद से ही वे लगातार विवादों में घिरे हुए हैं। एनसीईआरटी की नई किताबें बाजार में आई हैं। इनमें कक्षा 12 की राजनीति विज्ञान की किताब में बाबरी मस्जिद का जिक्र नहीं है और इसे तीन गुंबद ढांचा बताया गया है। साथ ही अयोध्या के बारे में जो पहले चार पेज का पाठ था, अब उसे घटाकर दो पेज का कर दिया गया है और कई जानकारियां हटा दी गई हैं। यह अब सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर आधारित है, जिससे राम मंदिर के निर्माण का रास्ता साफ हुआ।

इसके बाद सोमवार को कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि यह संस्थान 2014 से आरएसएस से संबद्ध संस्था के रूप में काम कर रही है और संविधान पर हमला कर रही है। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी ने नीट 2024 में %ग्रेस मार्क्स% की गड़बड़ी के लिए एनसीईआरटी को दोषी ठहराया है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह केवल एनटीए की अपनी विफलताओं से ध्यान हटा रहा है। हालांकि यह सच है कि एनसीईआरटी अब एक पेशेवर संस्था नहीं रही। यह 2014 से आरएसएस से संबद्ध संस्था के रूप में काम कर रही है।

कांग्रेस नेता ने कहा कि इसकी संशोधित कक्षा 11 की राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक धर्मनिरपेक्षता के विचार की आलोचना करती है और साथ ही इस संबंध में राजनीतिक दलों की नीतियों की भी आलोचना करती है। कांग्रेस नेता ने कहा, एनसीईआरटी का उद्देश्य पाठ्यपुस्तकें तैयार करना है, न कि राजनीतिक पर्चे और प्रचार करना। एनसीईआरटी हमारे देश के संविधान पर हमला कर रही है, जिसकी प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्षता स्पष्ट रूप से भारतीय गणतंत्र के आधारभूत स्तंभ के रूप में मौजूद है। उन्होंने कहा, सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न निर्णयों में स्पष्ट रूप से धर्मनिरपेक्षता को संविधान के मूल ढांचे का एक अनिवार्य हिस्सा माना गया है।

जयराम रमेश ने आरोप लगाते हुए कहा कि एनसीईआरटी को खुद को याद दिलाने की जरूरत है कि यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद है, नागपुर या नरेंद्र शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नहीं। उन्होंने आरोप लगाया कि इसकी सभी पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता संदिग्ध है।, जो स्कूल में मुझे आकार देने वाली पुस्तकों से बहुत अलग हैं।

टीएमसी नेता साकेत गोखले ने भी एनसीईआरटी पर निशाना साधते हुए कहा, बेशर्म एनडीए 1.0 सरकार छात्रों से असुविधाजनक तथ्य छिपा रही है। उन्होंने कहा, यह तर्क दिया जा रहा है कि बच्चों को विश्व युद्ध जैसी अन्य हिंसक निराशाजनक चीजों% के बारे में क्यों पढ़ाया जाए? क्या भाजपा और पीएम मोदी को अपराधियों और दंगाइयों के रूप में अपने इतिहास पर शर्म आती है? उन्होंने पूछा, छात्रों से सच्चाई क्यों छिपाई जाए?

एनसीईआरटी के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने कहा कि पाठ्यपुस्तकों में बदलाव वार्षिक संशोधन का हिस्सा हैं और इस पर शोर-शराबा नहीं होना चाहिए। संख्या पर लगाए जा रहे स्कूली पाठ्यक्रमों के भगवाकरण के आरोपों को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि गुजरात दंगों और बाबरी मस्जिद विध्वंस के संदर्भों को स्कूली पाठ्यपुस्तकों में संशोधित किया गया है। क्योंकि दंगों के बारे में पढ़ाने से बच्चों में हिंसक और उदास नागरिक पैदा हो सकते हैं। पाठ्यपुस्तकों में बदलाव वार्षिक संशोधन का हिस्सा हैं और इस पर शोर-शराबा नहीं होना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि हमें स्कूली पाठ्यपुस्तकों में दंगों के बारे में क्यों पढ़ाना चाहिए? हम सकारात्मक नागरिक बनाना चाहते हैं, न कि हिंसक और उदास व्यक्ति।

खेल
प्रमुख समाचार

सुपर 8 के लिए वेस्टइंडीज पहुंची टीम इंडिया

नईदिल्ली। भारतीय टीम ने टी20 विश्वकप में अमेरिका में अपना अभियान समाप्त कर लिया है। टीम इंडिया सोमवार को सुपर-8 मुकाबलों के लिए वेस्टइंडीज पहुंच गई है। यूएस में भारतीय टीम को खराब पिचों और ख़राब आउटफ़ील्ड में खेलना पड़ा। लेकिन मुश्किलों को पार करके टीम इंडिया अब सुपर 8 में पहुंच गई है जहां उसका सामना 20 जून को अफगानिस्तान से होगा।

सुपर 8 के लिए दो ग्रुप बने हैं। ग्रुप ए में भारत, अफगानिस्तान, बांग्लादेश और ऑस्ट्रेलिया हैं और ग्रुप बी में अमेरिका, इंग्लैंड, वेस्टइंडीज और दक्षिण अफ्रीका हैं। दोनों ग्रुप से दो-दो टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई करेंगी। अगर भारतीय टीम सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई करती है तो 27 जून को गुयाना में टीम इंडिया का मुकाबला होगा।

फोर्ट लॉडरडेल में कनाडा के खिलाफ कनाडा के खिलाफ भारतीय टीम का आखिरी मैच था। आखिरी लीग मैच एक भी गेंद फेंके बिना रद्द हो जाने से टीम इंडिया के खिलाड़ियों को आराम करने का थोड़ा समय मिल गया। लेकिन 12 जून को न्यूयॉर्क में अपने आखिरी मैच के बाद से कोई अभ्यास संभव नहीं होने के कारण, बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौड़ थोड़ा चिंतित हैं। भारतीय टीम अफगानिस्तान के खिलाफ अपने मैच की तैयारी के लिए 17 जून को बारबाडोस में नेट्स पर उतरेगी।

अफगानिस्तान ने बारबाडोस में अब तक एक भी मुकाबला नहीं खेला है। उन्हें परिस्थितियों के अनुरूप ढलना होगा। भारतीय टीम की कुछ चिंताएं भी हैं। इनमें सबसे बड़ी है ओपनिंग जोड़ी के रूप में रोहित शर्मा और विराट कोहली का न चल पाना। हालांकि इसके बाद भी टीम इंडिया में बदलाव की संभावना नहीं है। विराट कोहली मौजूदा टी20 विश्व कप में अभी तक तीन मैच में केवल पांच रन बना पाए हैं।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

एसबीआई को चालू वित्त वर्ष में 14-15% लोन ग्रोथ की उम्मीद

नईदिल्ली। भारतीय स्टेट बैंक के चेयरमैन दिनेश कुमार खारा ने कहा कि मौजूदा आर्थिक वृद्धि दर को देखते हुए चालू वित्त वर्ष 2024-25 में 14-15 प्रतिशत ऋण वृद्धि की उम्मीद है। खारा ने एक इंटरव्यू में कहा, आम तौर पर हम इसे जीडीपी वृद्धि दर और मुद्रास्फीति तथा उसके ऊपर दो से तीन प्रतिशत के योग के आधार पर देखते हैं। इससे हमें करीब 14 प्रतिशत या उसके आसपास का आंकड़ा मिलता है।'' उन्होंने कहा, अत: 14-15 प्रतिशत ऋण वृद्धि, ऋण देने के लिए उपलब्ध अवसरों पर निर्भर करती है। यह हमारी जोखिम क्षमता को पूरा करती है। हमें इस गति से वृद्धि करने में खुशी होगी। उन्होंने कहा कि जहां तक जमाराशि का सवाल है, पिछले साल इसमें 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उन्होंने कहा, हमारे पास अतिरिक्त एसएलआर के मामले में कुछ गुंजाइश है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि हमारे ऋण-से-जमा अनुपात को सहारा देने के लिए जमा दरें बढ़ाने का हम पर कोई दबाव नहीं है।

डुलैंक्स टॉप सरफेस आईपीओ से जुटाएगी 40.80 करोड़ रू.

नईदिल्ली। सॉलिड सरफेस मटेरियल्स बनाने वाली गुजरात की कंपनी डुलैंक्स टॉप सरफेस भी मार्केट में लिस्ट होने की पूरी तैयारी में है। कंपनी ने आज यानी 17 जून को अपने एक बयान में कहा कि डुलैंक्स टॉप सरफेस अपने आईपीओ के जरिये 40.80 करोड़ रुपये जुटाएगी। कंपनी को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एनएसई इमर्ज प्लेटफॉर्म पर अपना आईपीओ लाने की मंजूरी मिल गई है। बयान में बताया गया कि डुलैंक्स टॉप सरफेस का आईपीओ 19 जून को ओपन होगा और 21 जून को क्लोज हो जाएगा। इसमें 28.56 करोड़ रुपये तक के 42 लाख फ्रेश इश्यू (नए शेयर) जारी किए जाएंगे वहीं, 12.24 करोड़ रुपये तक के 18 लाख शेयर ऑफर फॉर सेल के जरिये बेचे जाएंगे। बता दें कि डुलैंक्स टॉप सरफेस आईपीओ एक एसएमई सेगमेंट का आईपीओ है।

यूएई से 2023-24 में सोना चांदी का आयात 210% बढ़ा

नईदिल्ली। भारत का अपने मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) साझेदार संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) से सोने और चांदी का आयात 2023-24 में 210 प्रतिशत बढ़कर 10.7 अरब डॉलर हो गया है। इस उछाल को कम करने के लिए समझौते के तहत रियायती सीमा शुल्क दरों में संभावित रूप से संशोधन करने की आवश्यकता है। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरए) के अनुसार, सोने और चांदी के आयात में यह तीव्र वृद्धि मुख्य रूप से भारत-संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते के तहत भारत द्वारा यूएई को दी गई आयात शुल्क रियायतों से मुमकीन हो पाई है। जीटीआरए की रिपोर्ट के अनुसार, भारत असीमित मात्रा में चांदी के आयात पर सात प्रतिशत शुल्क या सीमा शुल्क रियायतें और 160 मीट्रिक टन सोने पर एक प्रतिशत रियायत देता है।

भीषण गर्मी से घटी डीजल की बिक्री

नईदिल्ली। देश के कुछ हिस्सों में भीषण गर्मी के कारण यात्रा में कमी आने से जून में डीजल की मांग में गिरावट आई है। ईंधन की बिक्री, जो परंपरागत रूप से चुनाव के दौरान बढ़ जाती है, इस वर्ष प्रवृत्ति के विपरीत रही है तथा मासिक आधार पर इसमें गिरावट आ रही है। यह गिरावट अब आम चुनाव के समाप्त होने के बाद भी जारी है। डीजल की बिक्री एक से 15 जून के दौरान पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 3.9 प्रतिशत की गिरावट आई है और यह 39.5 लाख टन रह गई है। देश में सबसे ज्यादा खपत वाले ईंधन की मांग में अप्रैल में 2.3 प्रतिशत और मार्च में 2.7 प्रतिशत की गिरावट आई थी। मई में इसमें 1.1 प्रतिशत की गिरावट आई थी। चुनाव प्रचार के अलावा, गर्मी की फसल कटाई के मौसम तथा चिलचिलाती गर्मी के कारण कारों में एयर कंडीशनिंग की मांग बढ़ जाती है।

अधिक ऋण के बोझ तले वैश्विक अर्थव्यवस्था कहीं चरमरा तो नहीं जाएगी

प्रह्लाद सबनानी

विश्व के समस्त नागरिकों एवं विभिन्न संस्थानों पर लगभग 320 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का ऋण है। कुल ऋण की उक्त राशि में विभिन्न देशों की सरकारों के ऋण एवं नागरिकों के व्यक्तिगत ऋण भी शामिल है। कई देशों को मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण पाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही, विकास करने का दबाव विभिन्न देशों की सरकारों पर है अत: सरकारों के साथ साथ व्यक्ति भी बहुत अधिक मात्रा में ऋण ले रहे हैं। परंतु, कितना ऋण प्रत्येक व्यक्ति अथवा सरकार पर होना चाहिए, इस विषय पर भी अब गम्भीरता से विचार किए जाने की आवश्यकता है।

आज विश्व की कुल जनसंख्या 810 करोड़ है और विश्व पर कुल ऋण की राशि 320 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है इस प्रकार औसत रूप से विश्व के प्रत्येक नागरिक पर 39,000 अमेरिकी डॉलर का ऋण बक़ाया है। 320 लाख करोड़ रुपए के ऋण की राशि में विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा लिया गया ऋण, व्यापार एवं उद्योग द्वारा लिया गया ऋण एवं व्यक्तियों द्वारा लिया गया ऋण शामिल है। पूरे विश्व में परिवारों/व्यक्तियों द्वारा 59 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का ऋण लिया गया है। व्यापार एवं उद्योग द्वारा 164 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का ऋण लिया गया है। साथ ही, सरकारों द्वारा 97 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का ऋण लिया गया है, ऋण की इस राशि में एक तिहाई हिस्सा विकासशील देशों की सरकारों द्वारा लिया गया ऋण भी शामिल है। सरकारों द्वारा लिए गए ऋण की राशि पर प्रतिवर्ष 84,700 करोड़ अमेरिकी डॉलर का ब्याज का भुगतान किया जाता है। विश्व में प्रत्येक 3 देशों में से 1 देश द्वारा कल्याणकारी योजनाओं पर खर्च की गई राशि से अधिक राशि ऋण पर ब्याज के रूप में खर्च की जाती है। आकार में छोटी अर्थव्यवस्थाओं के लिए अधिक ऋण लेना सदैव ही बहुत जोखिमभरा निर्णय रहता आया है। पूरे विश्व में सकल घरेलू उत्पाद का आकार 109 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का है जबकि ऋणराशि का आकार 320 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का है। इस प्रकार, एक तरह से आय की तुलना में खर्च की जा रही राशि बहुत अधिक है। इसे संतुलित किया जाना अब अति आवश्यक हो गया है अन्यथा कुछ ही समय में पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था चरमरा सकती है।

पूरे विश्व में लिए गए भारी भरकम राशि के ऋण के चलते अमीर वर्ग अधिक अमीर होता चला जा रहा है एवं गरीब वर्ग और अधिक गरीब होता चला जा रहा है, क्योंकि अमीर वर्ग ऋण का उपयोग अपने लाभ का लिए कर पा रहा है एवं इस ऋण राशि से अपनी सम्पत्ति में वृद्धि करने में सफल हो रहा है। जबकि, गरीब वर्ग इस ऋण की राशि का उपयोग अपनी देनंदिनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करता है और ऋण के जाल में फंसता चला जाता है। इसके साथ ही, हालांकि विश्व में दो विश्व युद्ध हो चुके हैं, वर्तमान में भी रूस यूक्रेन युद्ध एवं इजराईल हमास युद्ध चल ही रहा है। परंतु, फिर भी इस सबका असर अमीर वर्ग पर नहीं के बराबर हो रहा है। हां, गरीब वर्ग जरूर और अधिक गरीब होता जा रहा हैं क्योंकि विश्व के कई देशों में, ब्याज दरों में लगातार की जा रही बढ़ौतरी के बाद भी, मुद्रा स्फीति नियंत्रण में नहीं आ पा रही है। मुद्रा स्फीति का सबसे अधिक बुरा प्रभाव गरीब वर्ग पर ही पड़ता है। अमीर वर्ग (जिनकी सम्पत्ति 2 करोड़ 28 लाख अमेरिकी डॉलर से अधिक है), इनकी संख्या वर्ष 2023 में 5.1 प्रतिशत से बढ़ गई है और इनकी कुल सम्पत्ति 86.8 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर हो गई है और यह भी 5 प्रतिशत की दर से बढ़ गई है। वर्ष 2020 के बाद से विश्व के 5 सबसे अधिक अमीर व्यक्तियों की संपत्ति दुगुनी हो गई है। साथ ही, वर्ष 2020 के बाद से विश्व के बिलिनायर की सम्पत्ति 3 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़ गई है। इन कारणों के चलते अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। जिस रफ्तार से विश्व में गरीबी कम हो रही है, इससे ध्यान में आता है कि इस धरा से गरीबी को हटाने में अभी 229 वर्ष का समय लगेगा।

क्रमश: ...

विस की सदस्यता से बृजमोहन ने दिया इस्तीफा, फिलहाल बने रहेंगे मंत्री

रायपुर। स्कूल शिक्षा, उच्च शिक्षा, संसदीय कार्य, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन एवं सांस्कृति मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने सोमवार को विधानसभा की सदस्यता से सांसद निर्वाचित होने के बाद विधासभा अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह को अपना इस्तीफा सौंपा, लेकिन वे फिलहाल मंत्री पद पर बने रहेंगे। डॉ. सिंह ने इसे मंजूर करते हुए सचिव दिनेश शर्मा को आगे की कार्रवाई के लिए भेज दिया। इसके साथ ही रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट रिक्त हो गई है। आठ बार के निर्वाचित विधायक बृजमोहन अग्रवाल मध्यप्रदेश की पटवा सरकार और छत्तीसगढ़ के रमन सरकार में मंत्री पद पर रहे हैं और उन्होंने हाल ही में प्रदेश में सबसे ज्यादा पौने 6 लाख वोटों से चुनाव जीतकर सांसद चुने गए है।

वहीं इस्तीफे के बाद अग्रवाल ने कहा केन्द्रीय नेतृत्व के निर्देश पर जनता के अपार स्नेह के साथ मैं लोकसभा जा रहा हूं। यह मेरे लिए भावुक क्षण है, मेरे कार्यकर्ता भी भावुक हैं, जनता को विश्वास दिलाता हूं उनका मोहन वैसे ही काम करेगा, उनके दुख दर्द उठाता रहेगा। बृजमोहन ने लोगों से यह कहकर क्षमा मांगी कि 35 वर्षों में मेरे काम और व्यवहार से किसी को ठेस पहुंची हो तो क्षमा प्राथी हूं। मैं सांसद के रूप में नई पारी शुरू कर रहा हूं, मुझे जनता का आशीर्वाद मिलता रहे। मंत्री न बनाए जाने पर किसी तरह के मलाल से इंकार करते हुए बृजमोहन ने कहा कभी कोई मलाल नहीं रहा। मुझे पार्टी और जनता ने 8 बार विधायक बनाया। अंतिम बार रिकार्ड मतों से विधानसभा और पहली बार लोकसभा भी रिकार्ड मतों से जिताया। मैं मानता हूं समय से पहले किस्मत से ज्यादा नहीं मिलता। मंत्री पद से इस्तीफे को लेकर कहा कि यह मुख्यमंत्रीजी से पूछिए क्योंकि मंत्री बनाना, नहीं बनाना उनका निर्णय होता है।

सबके सहयोग और आशीर्वाद से नई पारी की शुरुआत कर रहा हूं

बृजमोहन अग्रवाल ने आज दक्षिण विधानसभा के विधायक पद से इस्तीफा दे दिया. उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह को अपना इस्तीफा सौंपा. उन्होंने कहा कि सबके सहयोग और आशीर्वाद से नई पारी की शुरुआत कर रहा है. विधायक पद से इस्तीफा देने के बाद मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि 35 सालों से विधानसभा का अनवरत सदस्य रहा हूं. रायपुर की जनता ने मुझे लोकसभा में भेजा है. इसलिए छत्तीसगढ़ विधानसभा पद से इस्तीफा दिया है. अब मैं लोकसभा का सदस्य हूं. उन्होंने कहा कि मैं हमेशा रायपुर की जनता के दुख दर्द में शामिल रहा हूं. यह भावुक क्षण है, मेरे कार्यकर्ता, छत्तीसगढ़ की जनता, एमपी के कार्यकर्ता-नेताओं के लिए यह भावुक क्षण है.उनका मोहन उनके लिए वैसा ही कार्य करेगा. बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि यदि मेरे व्यवहार से किसी को कष्ट हुआ है उसके लिए माफी मांगता हूं. सबके सहयोग और आशीर्वाद से नई पारी की शुरुआत कर रहा हूं. लोगों के भावना के अनुरूप कार्य करता रहूंगा, यही कामना करता हूं. किसी बात का कोई मलाल नहीं है.

सदन में हमेशा महसूस होगी बृजमोहन अग्रवाल की कमी

भाजपा के वरिष्ठ नेता बृजमोहन अग्रवाल ने सांसद बनने के बाद आज विधायकी पद से इस्तीफा दिया. इस पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा, 40 साल के राजनीतिक जीवन में लगातार मिलकर काम किए हैं. विधानसभा में हमेशा बृजमोहन अग्रवाल की कमी महसूस होगी. विधानसभा अध्यक्ष रमन सिंह ने कहा, बृजमोहन अग्रवाल रायपुर लोकसभा से 5 लाख 50 हजार वोट से जीतकर लोकसभा के लिए गए हैं. विधिवत तरीके से उन्होंने छत्तीसगढ़ विधानसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दिया है. इसे तुरंत स्वीकृत किया गया है. उनके पास मध्यप्रदेश से लेकर के छत्तीसगढ़ विधानसभा तक का अनुभव है. लगातार मंत्री पद का भी अनुभव है. रमन सिंह ने कहा, बृजमोहन के विधानसभा में रहने से विधानसभा भरा-भरा लगता है. हमेशा से जीवंत, तीखा तकरार और विद्वता के साथ वे अपनी बातें प्रस्तुत करते रहे. निश्चित तौर पर सभी नए विधायकों को ये कमी हमेशा महसूस होगी. वे एक बड़े पद की ओर आगे बढ़ रहे हैं. राष्ट्रीय परिपेक्ष में अवसर मिलेगा. छत्तीसगढ़ को बेहतर तरीके से दिल्ली के हाउस में रखने का काम बृजमोहन अग्रवाल करेंगे.

कांग्रेस के बयान में संतुलन नहीं: रमन सिंह- कांग्रेस की ओर से बृजमोहन अग्रवाल को कांग्रेस प्रवेश के दिए गए ऑफर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने तंज कसा है. उन्होंने कहा, कांग्रेस को पता नहीं क्या हो गया है. जिस प्रकार के बयानबाजी आ रही है, मुझे लगता है उनके बयान में संतुलन नहीं है.

मुख्यमंत्री, बृजमोहन को मंत्री पद से बर्खास्त करें

भाजपा नेता बृजमोहन अग्रवाल के द्वारा मंत्री पद से इस्तीफा नहीं देने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, बृजमोहन अग्रवाल को बर्खास्त कब करेंगे? बृजमोहन अग्रवाल सांसद का चुनाव जीतने के बाद विधायक पद से इस्तीफा दिये है। नैतिकता का तकाजा है कि वे विधायक के साथ मंत्री पद से भी इस्तीफा दे देते लेकिन उन्होंने मंत्री पद के लालच में सारी नैतिकताओं को धता बता दिया है। बैज ने कहा कि कोई व्यक्ति बिना विधानमंडल का सदस्य रहते हुये भी 6 माह तक मंत्री पद धारित कर सकता है। उसे 6 माह के अंदर सदन का सदस्य निर्वाचित होना होता है। बृजमोहन के मामले में स्थितियां अलग है। उन्होंने सांसद निर्वाचित होने के बाद विधायक पद से इस्तीफा दिया है। यहां पर 6 माह के अंदर सदस्य के निर्वाचन की अपेक्षा वाली बात नहीं है। अतः संवैधानिक प्रावधानों की आड़ लेकर मंत्री पद पर बने रहना उचित नहीं है। कांग्रेस पार्टी राज्यपाल से भी मांग करती है कि यदि बृजमोहन मंत्री पद से स्वयं इस्तीफा नहीं देते है या मुख्यमंत्री उनको नहीं हटाते है तो राज्यपाल स्वयं उनको मंत्री पद से बर्खास्त कर एक नजीर प्रस्तुत करें। राज्य में संवैधानिक नैतिकता की रक्षा का दायित्व राज्यपाल के पास ही है राज्य की जनता उनसे अपेक्षा कर रही है कि वे बृजमोहन को तत्काल बर्खास्त करें।

भाजपा प्रदेश प्रभारी नितिन ने ली लगातार बैठके

कार्यकर्ताओं ने परिश्रम की पराकाष्ठा की है: किरण सिंह

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्यालय कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में आज छत्तीसगढ़ प्रदेश प्रभारी नितिन नबीन ने कोर कमेटी, भाजपा विधायक दल एवं सांसद दल की आवश्यक बैठक ली। बैठक में प्रमुख रूप से प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव, उप मुख्यमंत्री अरुण साव, विजय शर्मा, केंद्रीय मंत्री तोखन साहू, मंत्री बृजमोहन अग्रवाल, प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय सहित भाजपा प्रदेश पदाधिकारी, सांसद एवं विधायकगण मौजूद रहे। बैठक के पश्चात भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी की अलग-अलग श्रेणियां की आवश्यक बैठक भाजपा प्रदेश प्रभारी नितिन नबीन के नेतृत्व में संपन्न हुई। प्रथम बैठक कोर कमेटी, क्लस्टर प्रभारी, लोकसभा प्रभारी एवं लोकसभा संयोजक और सहसंयोजकों की हुई और दूसरी बैठक भाजपा विधायक दल की हुई जिसमें आगामी कार्य योजना को लेकर प्रदेश प्रभारी नितिन नबीन जी का मार्गदर्शन सबको प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि 23 जून से लेकर 6 जुलाई तक भाजपा की सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम में सब की सहभागिता सुनिश्चित हो और संगठन की दृष्टि से भाजपा के सभी जनप्रतिनिधि इस कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। इन कार्यक्रमों के लिए सभी को जिम्मेदारी दी जाएगी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने कहा कि 21 जून को योग दिवस की कार्यक्रम को संगठन स्तर पर और साथ ही साथ सरकार के स्तर पर भी करने की योजना बनाई गई है। योग दिवस कार्यक्रम मुख्यमंत्री के निर्देश पर प्रशासनिक स्तर पर यह कार्यक्रम मनाया जाएगा। योग दिवस के कार्यक्रम को भारतीय जनता पार्टी मंडल जिला एवं प्रदेश स्तर पर मनाएगी। इसके लिए कार्य योजना सुनिश्चित हो गई है और लोगों को जिम्मेदारी भी दी गई है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने कहा कि यह बहुत ही ऐतिहासिक क्षण है लोकसभा चुनाव में छत्तीसगढ़ की 11 लोकसभा सीटों में से भाजपा ने 10 में विजय श्री प्राप्त की है और छत्तीसगढ़ की जनता ने भाजपा पर फिर से भरोसा किया है। भारतीय जनता पार्टी के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने परिश्रम की पराकाष्ठा की है। एक निश्चित कार्य योजना बनाकर बूथ के, मंडल के, जिले के, सभी कार्यकर्ताओं ने समन्वय बनाकर कार्य किया है। बैठक में सांसद महेश कश्यप, भोजराज नाग, संतोष पांडेय, रूपकुमारी चौधरी, राधेश्याम राठिया, कमलेश जांगड़े, चिंतामणि महाराज, मंत्री रामविचार नेताम, केदार कश्यप, ओपी चौधरी, लखन लाल देवांगन, श्यामबिहारी जायसवाल, टंक राम वर्मा, लक्ष्मी रजवाड़े, दयालदास बघेल, क्लस्टर प्रभारी एवं विधायक अजय चंद्राकर, अमर अग्रवाल, राजेश मूणत, भरत लाल वर्मा, जगदीश रामू रोहरा, रामजी भारती सहित सभी विधायक एवं प्रदेश पदाधिकारी मौजूद रहे।

रायपुर, 17 जून 2024/ मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय आज अपने गृह जिले जशपुर के ग्राम बन्दरचुंआ पहुंचे। यहां वे अपने चचेरे भाई एवं जशपुर नगर पालिका के अध्यक्ष स्व. श्री नरेश चंद्र साय के दशगात्र कार्यक्रम में शामिल हुए। सपत्नीक उनके घर पहुंचकर मुख्यमंत्री साय ने उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। मुख्यमंत्री ने सभी परिजनों से मिलकर उन्हें सांत्वना दी।

अमरगुफा जैतखाम विवाद मामले में जांच करने भाजपा का जांच दल पहुँचा

रायपुर/बलौदाबाजार। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष किरण देव सिंह द्वारा बलौदाबाजार अग्निकांड मामले की जाँच के लिए गठित 5 सदस्यीय जाँच दल सोमवार को बलौदाबाजार पहुँचा। जाँच दल के संयोजक दयालदास बघेल, सदस्य टंकराम वर्मा, शिवरतन शर्मा, नवीन मार्कण्डेय, श्रीमती रंजना साहू ने गिरौदपुरी से 5 किलोमीटर दूर अमरगुफा (महकोनी) में स्थित जैतखाम के क्षतिग्रस्त किए जाने और जिला मुख्यालय स्थित कलेक्ट्रेट व एसपी दफ्तर में हुई आगजनी, तोड़फोड़ और पीड़ितों से मुलाकात की और घटना से जुड़े आवश्यक पहलुओं पर गंभीरता से अध्ययन और संबंधित लोगों से चर्चा की। भाजपा जाँच दल ने प्रारंभिक जाँच में पाया कि इतनी बड़ी संख्या में दूर-दूर से आए लोगों की आने-जाने और खाने की व्यवस्था में विपक्ष की भी भूमिका है, जो आगे और जाँच उपरांत स्पष्ट हो जाएगी। जाँच दल ने यह भी पाया कि अभी तक जो कार्रवाई चल रही है, वह सही दिशा में है। इसके आगे और जो भी पहलू सामने आते जायेंगे, उन पर भी शासन-प्रशासन नजर बनाए हुए हैं और दोषियों पर कड़ी कार्रवाई हो, इसके लिए सरकार प्रतिबद्ध है। जांच दल ने यह भी स्पष्ट किया कि निर्दोष लोगों को किसी प्रकार की कोई तकलीफ ना हो पाए साथ ही जिनका भी व्यक्तिगत नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई के लिए अधिकारियों से बात भी की गई है।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

तेन्दूपत्ता संग्राहकों को किया जाएगा नगद भुगतान: साय

रायपुर. मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने सुकमा, बीजापुर और नारायणपुर जिलों में तेन्दूपत्ता संग्राहकों को पारिश्रमिक राशि का नगद भुगतान करने के निर्देश दिए हैं। इन जिलों में बैंकों की शाखाएं दूर-दूर हैं, इसलिए मुख्यमंत्री ने तेन्दूपत्ता संग्राहकों की सहूलियत को ध्यान में रखते हुए वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग को यह निर्देश जारी किए हैं। सुकमा, बीजापुर और नारायणपुर जिलों के हाट-बाजारों में कैम्प लगाकर तेन्दूपत्ता संग्राहकों को वर्ष 2024 में पारिश्रमिक राशि का नगद भुगतान किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री साय के निर्देशों के परिपालन में वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री केदार कश्यप के मार्गदर्शन में विभाग द्वारा इस संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश मंत्रालय से जारी कर दिए गए हैं। सुकमा, बीजापुर और नारायणपुर जिलों के अलावा अन्य जिलों में तेन्दूपत्ता संग्राहकों को उनके खाते में पारिश्रमिक राशि का भुगतान किया जाता है। प्रधान मुख्य वन संरक्षक व्ही. श्रीनिवास राव ने बताया कि वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा जारी निर्देश में कहा गया है कि समस्त नगद भुगतान की कार्यवाही जिला कलेक्टर के पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण में सम्पन्न की जाएगी। नगद भुगतान के लिए कौन से संग्राहक पात्र होंगे, इसका निर्धारण कलेक्टर द्वारा किया जाएगा। प्रत्येक प्रकरण का नगद भुगतान कलेक्टर की अनुमति से होगा।

कर्मचारी-अधिकारी फेडरेशन ने वित्त मंत्री से लगाई गुहार

रायपुर। प्रदेश के कर्मचारियों के लिए प्रमुख वादे मोदी की गारंटी पर अमल करने मुख्यमंत्री के नाम प्रशासनिक अधिकारियों को फेडरेशन ने 23 फरवरी को बस्तर से सरगुजा तक प्रभावी रैली निकालकर राज्यव्यापी प्रदर्शन किया था। छत्तीसगढ़ कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन के प्रदेश संयोजक कमल वर्मा एवं प्रवक्ता चंद्रशेखर तिवारी ने संयुक्त विज्ञप्ति जारी कर बताया कि छत्तीसगढ़ शासन के वित्त मंत्री ओ. पी. चौधरी से प्रतिनिधिमंडल ने भेंटकर मोदी की गारंटी के तहत प्रदेश के शासकीय सेवकों को केंद्र के समान 4 प्रतिशत डीए देय तिथि से स्वीकृत करने, वर्ष 2019 से लंबित डीए एरियर्स की राशि को जीपीएफ खाते में समायोजित करने की प्रमुख मांग रखी गई। फेडरेशन ने वित्त मंत्री को मध्यप्रदेश की भांति अर्जित अवकाश नगदीकरण 300 दिन करने,प्रदेश में चार स्तरीय समयमान वेतनमान लागू करने, अनुकंपा नियुक्ति में 10 प्रतिशत सीलिंग शिथिल करने जैसे ज्वलंत मुद्दे से अवगत कराते हुए ज्ञापन सौंपा गया।

रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए रेल मंत्री इस्तीफा दे

रायपुर। पश्चिम बंगाल के जलपाई गुड़ी में हुई रेल दुर्घटना पर कांग्रेस ने गहरा दुख व्यक्त करते हुये मृतकों के प्रति संवेदना तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना किया है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि दुनिया में सबसे सुरक्षित यात्रा मानी जाने वाली भारतीय रेल मोदी राज में असुरक्षित और घातक बन गयी है। पिछले 10 सालों में मोदी सरकार ने रेलवे को बर्बाद कर दिया है। दुर्घटना, लेटलतीफी, अचानक रद्द होना भारतीय रेल की नई पहचान बन चुकी है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि पश्चिम बंगाल के जलपाई गुड़ी रेल दुर्घटना रेल मंत्रालय की घोर लापरवाही दिख रही है। एक ही ट्रैक में दो ट्रेनों के आने के चलते गंभीर रेल हादसा हुआ है। रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव को रेल मंत्रालय के द्वारा बरती गई लापरवाही गैर जिम्मेदाराना रवैया की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। यह बेहद गंभीर मसला है और इस पूरे हादसे की बारीकी से जांच होनी चाहिए और जितने भी लोग इस घटना के लिए दोषी है उन सब पर भी कड़ी कार्यवाही होनी चाहिए। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से सवाल पूछा जो रेल के लिए कवच बनाया गया था जिसमें दावा किया गया था.

राजधानी के सभी वार्डों में साफ-सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश

रायपुर। वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री तथा रायपुर जिले के प्रभारी मंत्री केदार कश्यप ने आज नगर निगम रायपुर के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक लेकर वर्षा पूर्व जल भराव तथा नालों के जाम से निपटने सभी आवश्यक तैयारियां सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जलभराव क्षेत्रों का चिन्हांकन कर लिया गया है एवं बाढ़ आपदा से बचने हेतु नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत आने वाले सभी 70 वार्डों के नालों की साफ-सफाई हो जानी चाहिए। यदि जल भराव की स्थिति उत्पन्न हो तो इससे निपटने के लिए भी आवश्यक तैयारी कर ली जाए। उन्होंने कहा कि जोन के स्वास्थ्य अधिकारी और स्वास्थ्य निरीक्षक द्वारा जोन क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण कर स्थिति के ऊपर नजर रखा जाए। नगर निगम रायपुर के अधिकारियों ने बैठक में बताया कि आपदा की स्थिति में सहायता के लिए 24 × 7 घंटे सेवा प्रदान करने के लिए आपातकालीन व्यवस्था की गई है। इसके लिए दूरभाष नंबर भी जारी किया गया है। दूरभाष नंबर 0771-2272101, 0771-2274101 जारी किया गया है।

कायस्थ प्रीमियर लीग: टाइटन इलेवन रायपुर ने खिताब पर जमाया कब्जा

रायपुर। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा एवम छत्तीसगढ़ कायस्थ समाज के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित रात्रिकालीन कायस्थ प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता के रोमांचक फाइनल मैच में टाइटन इलेवन रायपुर ने सी यस के बेमेतरा को 8 रनों से पराजित कर ट्रॉफी पर कब्जा जमाया। पहले खेलते हुए टाइटन ने अभिजीत के 14 गेंदों में 34 रन की मदद से 114 रन बनाएं। जवाब में रनों का पीछा करते हुए बेमेतरा की टीम 106 रन ही बना सकी। टाइटन टीम के प्रवेश ने 3 विकेट लिया। उन्हें मैन ऑफ थे मैच घोषित किया गया। मैन ऑफ द सीरीज़ टिम्बरलैंड टीम के संकल्प श्रीवास्तव को दिया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंत्री बृजमोहन अग्रवाल और विधायक पुरंदर मिश्रा ने पुरस्कार वितरण कर खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया। अंत में आयोजक राहुल श्रीवास्तव व अतुल श्रीवास्तव ने आभार प्रगट किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में कायस्थजनों ने उपस्थिति दे कर कार्यक्रम को सफल बनाया। महिलाओं एवं बच्चों की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन कर दर्शकों का मन जीत लिया।

आखिर कब मिलेगी इस बर्बरता से मुक्ति?

मेरी बात गिरीश पंकज

मानव समाज सदियों पहले जंगलों में निवास करता थाम वह पूरी तरह से सभ्य नहीं हो सका था। निर्वस्त्र विचरण करता था। तब खाने-पीने के साधन विकसित नहीं हो सके थे। वैसी समझ भी मानव में विकसित नहीं हुई थी । तब वह पशु-पक्षियों को मार करके खा जाया करता था। पेट भरने के लिए उसके पास और कोई विकल्प नहीं था इसलिए किसी जीव का शिकार किया और उसे पका कर या कच्चा ही खा गयाम वह एक अलग किस्म का बर्बर युग था। लेकिन अब तो हम तथाकथित रूप से सभ्य हो गए हैं। कहने को सभ्य समाज में रह रहे हैं । इसलिए अब तो हमें इस तरह की जीव- हत्याओं से मुक्त हो जाना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज भी ऐसे अनेक लोग हैं, जो जीव-हत्या कर उसे खाना अपनी शान समझते हैं । कुछ लोगों ने बड़ी चालाकी के साथ जीव-हत्या को अपने धर्म-कर्म से भी जोड़ दिया है। और इस अपराध में समान रूप से सभी धर्म के लोग शामिल हैं। किसी एक धर्म का नाम लेने का मतलब नहीं, क्योंकि हम सब उनसे परिचित हैं। हमारे समाज के विभिन्न धर्म जाति में ऐसे असंख्य लोग हैं, जो किसी भी जीव की हत्या करने में कोई संकोच नहीं करते । इन पंक्तियों को लिखते हुए मेरी आँखें भर गई हैं। मैं यह सोचकर व्यथित हो जाता हूँ कि आखिर मानव समाज और कितना नीचे गिरेगा? कितना पतित होगा? आखिर उसमें यह चेतना, संवेदना कब जाग्रत होगी कि गाय एक सुंदर प्यारा जीव है, जिसके दूध का सेवन हमअपनी पौष्टिक्ता के लिए जीवन भर करते हैं। गौ वंश को लोग बेरहमी से काट देते हैं। मैं गाय, बैल, भैंस सबकी बात कर रहा हूँ। लोग भेड़-बकरे को काट कर खा जाते हैं ।और भी छोटे-छोटे पशु-पक्षी हैं, उनको भी बड़े चाव से लोग खाते हैं। मैं कई बार जब रास्ते से गुजरता हूं तो किसी मीट शॉप को देख कर कुछ देर रुक कर वहाँ मीट खरीदते हुए लोगों के चेहरे को देखता हूँ। तब मैंने पाया है कि उनमें और सड़क के श्वान में कोई खास अंतर नहीं रह जाता। हमने देखा होगा कि कुत्ते खाने के या मांस के टुकड़े को बड़े चाव से देखते हैं कि जैसे ही मिले, उसे लपक कर खा ले। मांसाहार के मामले में अनेक लोग धर्मनिरपेक्ष हो गए हैं ।बड़ी चालाकी के साथ एक जुमला उछालते हैं कि कोई क्या खाए, कोई क्या पहने; इस पर हमें टीका-टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। क्यों नहीं करनी चाहिए ?अगर आप किसी जीव की हत्या करके खा जाएंगे तो टिप्पणी तो करनी ही पड़ेगी। आप पहनने के नाम पर तार-तार फटी जींस पहनेंगे, बदन दिखाऊ टॉप पहनेंगे/पहनेंगी, तो लोग टिप्पणी करेंगे ही। जिस तरह से मांसाहार करने वाले उसे अपना अधिकार समझते हैं, तो उसके विरुद्ध टिप्पणी करने वालों को भी यह अधिकार है कि वह विरोध करें। उनकी टिप्पणी से व्यथित होने की ज़रूरत नहीं है।

लोक-जागरण बहुत ज़रूरी- मैं कह रहा था कि कितना बर्बर परिवेश हो गया है हमारा। आश्चर्य की बात यह है कि हिंसा करते हुए लोग समझ ही नहीं पाते कि वे हिंसा कर रहे हैं । हमारे यहां बलि-प्रथा रही है। कहीं-कहीं दुर्भाग्यवश आज भी जारी है । इसके विरुद्ध लोक जागरण करने की आवश्यकता है । अगर गाय, बैल, भैंस या बकरे की बलि लेने की शर्मनाक परंपरा है, तो उस परंपरा से लोगों ने मुक्ति भी पाई है। अगर इस परंपरा का अनुपालन करना ही है, तो उन जानवरों की छोटी-सी मूर्ति बनाकर या नारियल को प्रतीक बना कर भी तो बलि ली जा सकती है, ताकि आप की परंपरा बाधित न हो । लेकिन लोग ऐसा करते नहीं। वे सजीव पशुओं की हत्या कर देते हैं और फिर उसका भक्षण भी कर लेते हैं। हिंसा के पहले पशु रुदन भी करता है लेकिन उसे रुदन को हिंसक सुन नहीं पाते। पिछले दिनों 4 जून को जब 18वीं लोकसभा के नतीजे आए और तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष अन्नामलाई चुनाव हार गए ,तो प्रतिद्वंद्वी पार्टी डीएमके ने बीच सड़क पर एक बकरे के ऊपर अन्नामलाई का चित्र टांग कर उसे काटकर जश्न मनाया और लोगों को बकरा बिरयानी खिलाई। जिस किसी ने यह घटना देखी-पढ़ी, वह विचलित हो गया।

मैंने भी जब वह समाचार देखा तो कलेजा फट-सा गया। सोचने लगा कि कैसे कह दूँ, अभी हम सभ्य समाज में रह रहे हैं ! व्यक्ति विशेष के प्रति ऐसी नफरत अकल्पनीय है । आप किसी की हर पर खुशी मना सकते हैं, किसी की जीत पर मिठाई बांट सकते हैं, लेकिन इस अवसर पर सरेआम एक जीव की हत्या निसंदेह बड़ा पाप है। लेकिन यह पाप करते हुए करने वाला मानता ही नहीं कि वह पाप कर रहा है । ऐसा इसलिए होता है कि उसमें यह चेतना ही विकसित नहीं हो सकी है कि वह गलत कार्य कर रहा है । मैंने कुछ ऐसे वीडियो देखें जब एक मुस्लिम बच्चा बकरे से लिपटकर रो रहा है कि उसे मत काटना ।वह दहाड़ बार-बार कर रो रहा है और लोग उसे बकरे से अलग कर रहे हैं । यह दृश्य देखकर मुझे बहुत संतोष हुआ कि उस बालक के मन में अभी मनुष्यता है। उस के मन में करुणा है। उसे पता है कि इस जीव की हत्या की जाएगी इसलिए वह रो रहा है । उसे रोते हुए देखकर के दूसरे हँस रहे हैं । यह अपने आप में वीभत्स दृश्य है। लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसे दृश्यों से हमें दो-चार होना पड़ता है। हमारे जैसे लोग ऐसी विसंगति पर कलम तो चला सकते हैं लेकिन इस अन्याय को खत्म नहीं कर सकते। हम तो सिर्फ यही कामना करते हैं कि यह समाज हिंसा से मुक्त हो। धार्मिक प्रथा के नाम पर पशुओं की बली रोकी जाए। यह काम तभी हो सकता है, जब देश में एक ऐसी सरकार आए, जो तमाम तरह के खतरे उठाकर पशु बलि-प्रथा को पूरी तरह से अवैध घोषित कर दे। मेरे जैसे करोड़ों लोग उसी महान दिन की प्रतीक्षा में हैं।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.